



शब्द संयोजकः जितेन्द्र बंसल

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१२२, विक्रमी सम्वत् २०७८ अश्विन कृष्णा पक्ष तृतीया, ईस्वी सम्वत् २७ सितम्बर २०२१।

प्राक्कथन

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी मुनि कृष्ण दत्त जी महाराज ने वेदों के विषय में इतना उच्चारण किया है कि जिस सहस्रों पृष्ठों में लिपिबद्ध करना भी कठिन है। पूज्यपाद गुरुदेव वेद पाठ करते समय संस्कृत व देवनागरी भाषा में प्रवचन करते समय शब्दों को इतनी उत्तमता से उच्चारण करते हैं कि जिसको शब्दों में व्यक्त नही किया जा सकता। उनकी उच्चारण ध्वनि व उस ध्वनि के वाक्य अन्तराल, शब्द अन्तराल, को आप प्रत्येक वाक्य, शब्द, शब्द के अन्तर्गत प्रत्येक अक्षर को जैसे स्वर, स्वर सहित व्यञ्जन, स्वर रहित व्यञ्जन, अनुस्वार व वैदिक ध्वनि उच्चारण चिह्न को पृथकपृथक अनुभव कर - सकते हैं।

वेदमन्त्र अकारादि क्रम से देवता विवरण के अनुसार लिए गए हैं। देवता के अन्तर्गत आने वाले वेदमन्त्र को भी अकारादि क्रम के अनुसार ही लिया गया है। देवता के साथ जो संख्या लिखी हुई है वह वेदमन्त्र की गणना दर्शाता है। कुल देवताओं की संख्या 108 है। व वेदमन्त्रों की संख्या 2401 है।

मैंने कई काल में कहा है पुत्र! संसार में जितने भी वेदमन्त्र हैं, प्रत्येक वेदमन्त्र उस महान प्रभु की आभा है और उसी का गान गाता रहता है। परन्तु ऋषि मुनियों ने वेदों में से उस वस्तु को व्यवहार में साकार रूप दिया जिसका जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध माना जाता है। जैसे गायत्री २४ अक्षरों वाली गायत्री कहलाती है। तीन उस में व्याहृतियां मानी जाती हैं। हमारा यह जो स्थूल मानव शरीर है यह २४ तत्त्वों से बना हुआ है। उन २४ तत्त्वों से जो बना हुआ शरीर है प्रत्येक अक्षर का सम्बन्ध प्रत्येक तत्त्व से माना जाता है इस मानवीय तथ्य को जानना है। उस महान प्रभु की प्रतिभा के विभाग किए जाते हैं। कुछ शब्द इस प्रकार के हैं जिनका सम्बन्ध मानो प्राणों से है, कुछ का सम्बन्ध मन से है। कुछ का मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार से कुछ का इन्द्रियों से है। परन्तु प्रत्येक अक्षर का जो बोधक है यह हमारा शरीर ही है। तो ऋषि मुनियों ने इन वाक्यों को साकार रूप

दिया और साकार रूप देने का एक ही अभिप्राय था कि जिसके ऊपर हम अनुसन्धान कर सकें और अपने जीवन की आभा से उसका हम सम्बन्ध अथवा उसका मिलान कर सकें। रहा यह कि मैं गायत्री के गूढ़तम रहस्य को तो कोई विशेष प्रतिभा में ले जाना नहीं चाहता हूँ। गायत्री कहते हैं वेद मन्त्रों के गान गाने को। शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज

पण्डित युधिष्ठर मीमांसक की पुस्तक वैदिक छन्दो मीमांसा पृष्ठ १३६ के अनुसार गायत्री छन्द के २५ भेदन् पाये जाते हैं। जिस वेदमन्त्र का विद्वानों ने गायत्री छन्दः (८+८+८=२४ अक्षरों) है। यहां पर गायत्री छन्दः (८+८+८) वाले ही वेदमन्त्र लिए गए हैं इन सभी वेदमन्त्रों का स्वर षड्ज है।

जिस जिस मन्त्र का जो जो अर्थ होता है वही उसका देवता कहलाता है। महर्षि दयानन्द

मन्त्रों पर जो (१ २ ३) आदि संख्या डली हुई है, ये अंङ्क क्रमशः संख्याएँ उदात्त, स्वरित और अनुदात्त के चिह्न हैं।

ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में अनुदात्त का चिह्न नीचे (-) रेखा से उसके लिए सामवेद में अंक (३), ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में स्वरित का चिह्न (।) रेखा से सामवेद में अंक (२) ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में उदात्त पर कोई चिह्न नही होता वह सामवेद में (१) दिखाया जाता है।

अथर्ववेद के मन्त्रों में एक वैदिक चिह्न ᳚ यह भी प्राप्त होगा जिसे स्वतन्त्र स्वरिता व स्वरिता द्वि कहा जाता है।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त् ॥ शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिनी वाजनेयी संहिता 36.3

ओ३म् तत् स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि । धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त् ॥ शुक्ल यजुर्वेद काण्व संहिता 3.43

ओ३म् तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि । धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त् ॥ऋग्वेद शाकल ३.६२.१०

ओ३म् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥सामवेद १४६२

उदात्तः उच्चै, अनुदात्तः नीचै , स्वरित: समाहारः (महर्षि पाणिनी अष्टाध्यायी, 1.2.29, 1.2.30, 1.2.31)

उदात्त की परिभाषा जहाँ उपयुक्त हो वहाँ गति तथा ऐसी शक्ति एवं वेग जिसकी समता संभव न हो। उदात्त की अनुभूति के अंतस्तत्व मन की ऊर्जा, उल्लास, संपूर्ण चेतना के अभिभूत हो जाने की अनुभूति, आदर तथा विस्मयमिश्रित संभ्रम बताए गए हैं।

अनुदात्त की परिभाषा तटस्थ सामान्य न तो उच्च और न ही कम स्वर।

स्वरित की परिभाषा तटस्थ सामान्य न तो उच्च और न ही कम स्वर।

इस ई पुस्तिका में सभी वेदमन्त्रों को वैदिक चिह्न उदात्त, अनुदात्त, व स्वरित सहित संयोजन किया गया है।

लेकिन वेदमन्त्रों का पाठ महर्षि पाणिनी व्याकरण, विभाषा छन्दासि ॥ १.२.३६। छन्दसि विभाषा एकश्रुतिः स्यात्। सिद्धान्त कौमुदी ३६६५। के अनुसार वेदमन्त्रों का गायन एक श्रुति भी किया जा सकता है।

पुनरुक्ति तो बेटा! रहस्य होता है। हे गायत्री माता! तू हृदय को पवित्र बना। तुझे वेदों ने गायत्री दुर्गा कहा है क्योंकि तू मानव के दुर्गुणों को शान्त करने वाली है, हम तेरी गोद में आए हैं। हमारे हृदय को पवित्र बना। हमारी जितनी भी कामनाएं है वह सब पवित्रत्व हों। हे मेरे भोले! जब मानव इस आकृति में गायत्री छन्दों में रमण करता है कि जहां आते हैं वहीं माता विराजमान है। शृङ्गी मुनि कृष्णदत्त जी महाराज

1. अग्नि 336

१ ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि बर्हिषि ॥

२ ओ३म् अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥

३ ओ३म् अग्नऽआयूंꣳषि पवसऽ आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥

४ ओ३म् अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ आ सादयादिह ॥

५ ओ३म् अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२ऽआ सादयादिह ॥

६ ओ३म् अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् । अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥

७ ओ३म् अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥

८ ओ३म् अग्निं धीभिर्मनीषिणो मेधिरासो विपश्चितः । अद्मसद्याय हिन्विरे ॥

९ ओ३म् अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं शीरं पावकशोचिषम् । हृद्भिर्मन्द्रेभिरीमहे ॥

१० ओ३म् अग्निं यन्तुरमप्तुरमृतस्य योगे वनुषः । विप्रा वाजैः समिन्धते ॥

११ ओ३म् अग्निं विश्वायुवेपसं मर्यं न वाजिनं हितम् । सप्तिं न वाजयामसि ॥

१२ ओ३म् अग्निं सूनुं सनश्रुतं सहसो जातवेदसम् । वह्निं देवा अकृण्वत ॥

१३ ओ३म् अग्निं हिन्वन्तु नो धियः सप्तिमाशुमिवाजिषु । तेन जेष्म धनंधनम् ॥

१४ ओ३म् अग्निः परेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य। सम्राडेको वि राजति ॥

१५ ओ३म् अग्निः प्रियेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य। सम्राडेको विराजति ॥

१६ ओ३म् अग्निः शुचिव्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः । शुची रोचत आहुतः ॥

१७ ओ३म् अग्निऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयम् ॥

१८ ओ३म् अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे । यशसं वीरवत्तमम् ॥

१९ ओ३म् अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम् । हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥

२० ओ३म् अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम्। हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥

२१ ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥

२२ ओ३म् अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्रऽआहुतः ॥

२३ ओ३म् अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद्द्रविणस्युर्विपन्यया । समिद्धः शुक्र आहुतः ॥

२४ ओ३म् अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः । देवो देवेभिरा गमत् ॥

२५ ओ३म् अग्निर्होता नो अध्वरे वाजी सन्परि णीयते । देवो देवेषु यज्ञियः ॥

२६ ओ३म् अग्नी रक्षांसि सेधति शुक्रशोचिरमर्त्यः। शुचिः पावक ईड्यः ॥

२७ ओ३म् अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत् । बोधा स्तोत्रे वयो दधत् ॥

२८ ओ३म् अग्ने घृतस्य धीतिभिस्तेपानो देव शोचिषा । आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥

२९ ओ३म् अग्ने जुषस्व नो हविः पुरोळाशं जातवेदः । प्रातःसावे धियावसो ॥

३० ओ३म् अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् । ऋध्यामा त ओहैः ॥

३१ ओ३म् अग्ने दा दाशुषे रयिं वीरवन्तं परीणसम् । शिशीहि नः सूनुमतः ॥

३२ ओ३म् अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे। असि होता न ईड्यः ॥

३३ ओ३म् अग्ने द्युम्नेन जागृवे सहसः सूनवाहुत । एदं बर्हिः सदो मम ॥

३४ ओ३म् अग्ने धृतव्रताय ते समुद्रायेव सिन्धवः । गिरो वाश्रास ईरते ॥

३५ ओ३म् अग्ने नेमिरराँ इव देवाँस्त्वं परिभूरसि । आ राधश्चित्रमृञ्जसे ॥

३६ ओ३म् अग्ने पत्नीरिहा वह देवानामुशतीरुप । त्वष्टारं सोमपीतये ॥

३७ ओ३म् अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया । आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥

३८ ओ३म् अग्ने भ्रातः सहस्कृत रोहिदश्व शुचिव्रत । इमं स्तोमं जुषस्व मे ॥

३९ ओ३म् अग्ने मृळ महाँ असि य ईमा देवयुं जनम् । इयेथ बर्हिरासदम् ॥

४० ओ३म् अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि । स इद्देवेषु गच्छति ॥

४१ ओ३म् अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति ष्म देव रीषतः । तपिष्ठैरजरो दह ॥

४२ ओ३म् अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः । यज्ञेषु य उ चायवः ॥

४३ ओ३म् अग्ने शकेम ते वयं यमं देवस्य वाजिनः । अति द्वेषांसि तरेम ॥

४४ ओ३म् अग्ने शुक्रेण शोचिषा विश्वाभिर्देवहूतिभिः । इमं स्तोमं जुषस्व नः ॥

४५ ओ३म् अग्नेः स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः । देवस्य द्रविणस्यवः ॥

४६ ओ३म् अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये । अवावशन्त धीतयः ॥

४७ ओ३म् अदब्धस्य स्वधावतो दूतस्य रेभतः सदा । अग्नेः सख्यं वृणीमहे ॥

४८ ओ३म् अन्यमस्मद्भिया इयमग्ने सिषक्तु दुच्छुना । वर्धा नो अमवच्छवः ॥

४९ ओ३म् अप नः शोशुचदघमग्ने शुशुग्ध्या रयिम्। अप नः शोशुचदघम् ॥

५० ओ३म् अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥

५१ ओ३म् अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते प्र वव्रेर्वव्रिश्चिकेत । उपस्थे मातुर्वि चष्टे ॥

५२ ओ३म् अयं यः सृञ्जये पुरो दैववाते समिध्यते । द्युमाँ अमित्रदम्भनः ॥

५३ ओ३म् अवोचाम रहूगणा अग्नये मधुमद्वचः । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥

५४ ओ३म् अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः । सम्राजन्तमध्वराणाम् ॥

५५ ओ३म् अस्मे रायो दिवेदिवे सं चरन्तु पुरुस्पृहः । अस्मे वाजास ईरताम् ॥

५६ ओ३म् अस्मै ते प्रतिहर्यते जातवेदो विचर्षणे । अग्ने जनामि सुष्टुतिम् ॥

५७ ओ३म् अस्य प्रत्नामनु द्युतꣳ शुक्रं दुदुह्रेऽअह्रयः। पयः सहस्रसामृषिम् ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ २उ ३ १ २
५८ ओ३म् अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत्। बोधा स्तोत्रे वयो दधत्॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
५९ ओ३म् अग्ने देवाꣳ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे। असि होता न ईड्यः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
६० ओ३म् अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
६१ ओ३म् अग्ने मृड महाꣳ अस्यय आ देवयुं जनम्। इयेथ बर्हिरासदम्॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
६२ ओ३म् अग्ने युक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्त्याशवः॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
६३ ओ३म् अग्ने युक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्त्याशवः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ २ ३ १ २र
६४ ओ३म् अच्छा नो याह्या वहाभि प्रयाꣳसि वीतये। आ देवान्त्सोमपीतये॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र २ ३ २ ३ २ ३ १ २
६५ ओ३म् अदाभ्यः पुरएता विशामग्निर्मानुषीणाम्। तूर्णी रथः सदा नवः॥

१ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
६६ ओ३म् अधा त्वꣳ हि नस्करो विश्वा अस्मभ्यꣳ सुक्षितीः। वाजद्रविणसो गिरः॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
६७ ओ३म् अवा नो अग्न ऊतिभिर्गायत्रस्य प्रभर्मणि। विश्वासु धीषु वन्द्य॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ २ ३ २ ३ १ २
६८ ओ३म् अग्ने नक्षत्रमजरमा सूर्य॰ रोहयो दिवि। दधज्ज्योतिर्जनेभ्यः॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
६९ ओ३म् अग्ने रक्षा णो अ॰हसः प्रति स्म देव रीषतः। तपिष्ठैरजरो दह॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
७० ओ३म् अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे। देवो ह्यसि नो दृशे॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २र ३ १ २
७१ ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २र ३ १ २
७२ ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
७३ ओ३म् अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः। सम्राजन्तमध्वराणाम्॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
७४ ओ३म् अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः। सम्राजन्तमध्वराणाम्॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
७५ ओ३म् अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
७६ ओ३म् अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
७७ ओ३म् अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
७८ ओ३म् अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
७९ ओ३म् अग्निः प्रियेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य। सम्राडेको वि राजति॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
८० ओ३म् अग्निः प्रत्नेन जन्मना शुम्भानस्तन्व॰ स्वाम्। कविर्विप्रेण वावृधे॥

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
८१ ओ३म् अग्निमिन्धानो मनसा धिय॰ सचेत मर्त्यः। अग्निमिन्धे विवस्वभिः॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
८२ ओ३म् अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। रत्नधातमम्॥

३ १ २ ३ १ २ ३ ३ १ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
८३ ओ३म् अग्निमग्नि॰हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम्। हव्यवाहं पुरुप्रियम्॥

३ १ २र ३ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २
८४ ओ३म् अग्निरिन्द्राय पवते दिवि शुक्रो वि राजति। महिषीव वि जायते॥

८५ ओ३म् अग्निर्जुषत नो गिरो होता यो मानुषेष्वा। स यक्षद्दैव्यं जनम्॥

८६ ओ३म् अग्निः हिन्वन्तु नो धियः सप्तिमाशुमिवाजिषु। तेन जेष्म धनंधनम्॥

८७ ओ३म् अग्निउज्योतिर्ज्योतिरग्निउन्द्रो ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्रः। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः॥

८८ ओ३म् अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा। हव्यवाड्जुह्वास्यः॥

८९ ओ३म् अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाः रेताःसि जिन्वति॥

९० ओ३म् अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाः रेताःसि जिन्वति॥

९१ ओ३म् अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः॥

९२ ओ३म् अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद्द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः॥

९३ ओ३म् अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यःसद्विश्वं न्यऽत्रिणम्। अग्निर्नो वःसते रयिम्॥

९४ ओ३म् अग्ने स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः। देवस्य द्रविणस्यवः॥

९५ ओ३म् अभि प्रयाःसि वाहसा दाश्वाःअश्नोति मर्त्यः। क्षयं पावकशोचिषः॥

९६ ओ३म् अयं यथा न आभुवत्त्वष्टा रूपेव तक्ष्या। अस्य क्रत्वा यशस्वतः॥

९७ ओ३म् अयं विश्वा अभि श्रियोऽग्निर्देवेषु पत्यते। आ वाजैरुप नो गमत्॥

९८ ओ३म् आ ग्ना अग्न इहावसे होत्रां यविष्ठ भारतीम् । वरूत्रीं धिषणां वह ॥

९९ ओ३म् आ च वहासि ताँ इह देवाँ उप प्रशस्तये । हव्या सुश्चन्द्र वीतये ॥

१०० ओ३म् आ नो अग्ने सुचेतुना रयिं विश्वायुपोषसम् । मार्डीकं धेहि जीवसे ॥

१०१ ओ३म् आ नो बर्ही रिशादसो वरुणो मित्रो अर्यमा । सीदन्तु मनुषो यथा ॥

१०२ ओ३म् आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु । शिक्षा वस्वो अन्तमस्य ॥

१०३ ओ३म् आ पवस्व गविष्टये महे सोम नृचक्षसे । एन्द्रस्य जठरे विश ॥

१०४ ओ३म् आ सवं सवितुर्यथा भगस्येव भुजिं हुवे । अग्निं समुद्रवाससम् ॥

१०५ ओ३म् आग्निरगामि भारतो वृत्रहा पुरुचेतनः । दिवोदासस्य सत्पतिः ॥

१०६ ओ३म् आग्ने स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम् । अङ्धि खं वर्तया पणिम् ॥

१०७ ओ३म् आरोका इव घेदह तिग्मा अग्ने तव त्विषः । दद्भिर्वनानि बप्सति ॥

१०८ ओ३म् आ ते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात्। अग्ने त्वां कामये गिरा॥

१०९ ओ३म् आ ते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात्। अग्ने त्वां कामये गिरा॥

११० ओ३म् आ नो अग्ने रयिं भर सत्रासाहं वरेण्यम्। विश्वासु पृत्सु दुष्टरम्॥

१११ ओ३म् आ नो अग्ने सुचेतुना रयिं विश्वायुपोषसम्। मार्डीकं धेहि जीवसे॥

११२ ओ३म् आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु। शिक्षा वस्वो अन्तमस्य॥

११३ ओ३म् आग्ने स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम्। अङ्धि खं वर्तया पविम्॥

११४ ओ३म् आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम्। परो यदिध्यते दिवि॥

११५ ओ३म् इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम् । अग्ने देवेषु प्र वोचः ॥

११६ ओ३म् इमां मे अग्ने समिधमिमामुपसदं वनेः । इमा उ षु श्रुधी गिरः ॥

११७ ओ३म् इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः॥

११८ ओ३म् इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः॥

११९ ओ३म् ईलेन्यो नमस्य ऽस्तिरस्तमांसि दर्शतः। समग्निरिध्यते वृषा ॥

१२० ओ३म् ईळे अग्निं विपश्चितं गिरा यज्ञस्य साधनम् । श्रुष्टीवानं धितावानम् ॥

१२१ ओ३म् ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वःपतिः। स्तोता स्यां तव शर्मणि॥

१२२ ओ३म् ईडेन्यो नमस्यस्तिरस्तमांसि दर्शतः। समग्निरिध्यते वृषा॥

१२३ ओ३म् उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे। स्तोमैर्विधेमाग्नये ॥

१२४ ओ३म् उत ग्ना अग्निरध्वर उतो गृहपतिर्दमे । उत ब्रह्मा नि षीदति ॥

१२५ ओ३म् उत त्वा धीतयो मम गिरो वर्धन्तु विश्वहा । अग्ने सख्यस्य बोधि नः ॥

१२६ ओ३म् उत त्वा भृगुवच्छुचे मनुष्वदग्न आहुत । अङ्गिरस्वद्धवामहे ॥

१२७ ओ३म् उत त्वाग्ने मम स्तुतो वाश्राय प्रतिहर्यते । गोष्ठं गाव इवाशत ॥

१२८ ओ३म् उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि । धनंजयो रणेरणे ॥

१२९ ओ३म् उत्ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः । अग्ने शुक्रास ईरते ॥

१३० ओ३म् उप च्छायामिव घृणेरगन्म शर्म ते वयम् । अग्ने हिरण्यसंदृशः ॥

१३१ ओ३म् उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः । वायोरनीके अस्थिरन् ॥

१३२ ओ३म् उप त्वा रण्वसंदृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत । अग्ने ससृज्महे गिरः ॥

१३३ ओ३म् उप त्वा सातये नरो विप्रासो यन्ति धीतिभिः । उपाक्षरा सहस्रिणी ॥

१३४ ओ३म् उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् । नमो भरन्त एमसि ॥

१३५ ओ३म् उप त्वाग्ने हविष्मतीर्घृताचीर्यन्तु हर्यत। जुषस्व समिधो मम ॥

१३६ ओ३म् उत्ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः। अग्ने शुक्रास ईरते॥

१३७ ओ३म् उदग्ने भारत द्युमदजस्रेण दविद्युतत्। शोचा वि भाह्यजर॥

१३८ ओ३म् उदग्ने शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते। तव ज्योतीᳪष्यर्चयः॥

१३९ ओ३म् उप च्छायामिव घृणेरगन्म शर्म ते वयम्। अग्ने हिरण्यसन्दृशः॥

१४० ओ३म् उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः। वायोरनीके अस्थिरन्॥

१४१ ओ३म् उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः। वायोरनीके अस्थिरन्॥

१४२ ओ३म् उप त्वा जुह्वोऽ. मम घृताचीर्यन्तु हर्यत। अग्ने हव्या जुषस्व नः॥

१४३ ओ३म् उप त्वा रण्वसन्दृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत। अग्ने ससृज्महे गिरः॥

१४४ ओ३म् उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि॥

१४५ ओ३म् उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥

१४६ ओ३म् उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि। धनञ्जयो रणेरणे॥

१४७ ओ३म् उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते॥

१४८ ओ३म् ऊर्जो नपातमध्वरे दीदिवांसमुप द्यवि । अग्निमीळे कविक्रतुम् ॥

१४९ ओ३म् ऊर्ज्जो नपातमा हुवेऽग्निं पावकशोचिषम्। अस्मिन्यज्ञे स्वध्वरे॥

१५० ओ३म् ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्। अजस्रं घर्ममीमहे ॥

१५१ ओ३म् ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्। अजस्रं घर्ममीमहे॥

१५२ ओ३म् एते त्ये वृथगग्नयं इद्धासः समंदृक्षत । उषसामिव केतवः ॥

१५३ ओ३म् एदं मरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः । देवासः सर्वया विशा ॥

१५४ ओ३म् एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्धास इन्दुभिः॥

१५५ ओ३म् एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्धास इन्दुभिः॥

१५६ ओ३म् और्वभृगुवच्छुचिमप्नवानवदा हुवे। अग्निꣳ समुद्रवाससम्॥

१५७ ओ३म् कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम् । वराय देव मन्यवे ॥

१५८ ओ३म् कया नश्चित्रऽ आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥

१५९ ओ३म् कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे । देवममीवचातनम् ॥

१६० ओ३म् कस्य नूनं परीणसो धियो जिन्वसि दम्पते । गोषाता यस्य ते गिरः ॥

१६१ ओ३म् कुवित्सु नो गविष्टयेऽग्ने संवेषिषो रयिम्। उरुकृदुरु णस्कृधि॥

१६२ ओ३म् कृष्णा रजांसि पत्सुतः प्रयाणे जातवेदसः । अग्निर्यद्रोधति क्षमि ॥

१६३ ओ३म् क्षेति क्षेमेभिः साधुभिर्नकिर्यं घ्नन्ति हन्ति यः । अग्ने सुवीर एधते ॥

१६४ ओ३म् कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम्। वराय देव मन्यवे॥

१६५ ओ३म् कस्ते जामिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः। को ह कस्मिन्नसि श्रितः॥

१६६ ओ३म् कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते। गोषाता यस्य ते गिरः॥

१६७ ओ३म् कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे। देवममीवचातनम्॥

१६८ ओ३म् गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे । सीदन्नृतस्य योनिमा ॥

१६९ ओ३म् गायत्रं त्रैष्टुभं जगद्विश्वा रूपाणि सम्भृता। देवा ओकाꣳसि चक्रिरे॥

१७० ओ३म् गर्भे मातुः पितुः पिता विदिद्युतानो अक्षरे। सीदन्नृतस्य योनिमा॥

१७१ ओ३म् जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय । स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥

१७२ ओ३म् जिह्वाभिरह नन्नमदर्चिषा जञ्जणाभवन् । अग्निर्वनेषु रोचते ॥

१७३ ओ३म् जुषस्व सप्रथस्तमं वचो देवप्सरस्तमम् । हव्या जुह्वान आसनि ॥

१७४ ओ३म् जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमर् रुद्राय दृशीकम्॥

१७५ ओ३म् जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमर् रुद्राय दृशीकम्॥

१७६ ओ३म् तं त्वा गीर्भिर्गिर्वणसं द्रविणस्युं द्रविणोदः । सपर्येम सपर्यवः ॥

१७७ ओ३म् तं त्वा वयं हवामहे शृण्वन्तं जातवेदसम् । अग्ने घ्नन्तमप द्विषः ॥

१७८ ओ३म् तं त्वामज्मेषु वाजिनं तन्वाना अग्ने अध्वरम् । वह्निं होतारमीळते ॥

१७९ ओ३म् तं मर्जयन्त सुक्रतुं पुरोयावानमाजिषु । स्वेषु क्षयेषु वाजिनम् ॥

१८० ओ३म् तं सबाधो यतस्रुच इत्था धिया यज्ञवन्तः । आ चक्रुरग्निमूतये ॥

१८१ ओ३म् तं हि शश्वन्त ईळते स्रुचा देवं घृतश्चुता । अग्निं हव्याय वोळ्हवे ॥

१८२ ओ३म् तं त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठदग्ने अङ्गिरः। स पावक श्रुधी हवम्॥

१८३ ओ३म् तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम्। देवा आ वीतये वह॥

१८४ ओ३म् तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य॥

१८५ ओ३म् तमर्वन्तं न सानसिं गृणीहि विप्र शुष्मिणम् । मित्रं न यातयज्जनम् ॥

१८६ ओ३म् तमित्सुहव्यमङ्गिरः सुदेवं सहसो यहो । जना आहुः सुबर्हिषम् ॥

१८७ ओ३म् तमु त्वा गोतमो गिरा रायस्कामो दुवस्यति । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥

१८८ ओ३म् तमु त्वा वाजसातममङ्गिरस्वद्धवामहे । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥

१८९ ओ३म् तमु त्वा वृत्रहन्तमं यो दस्यूँरवधूनुषे । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥

१९० ओ३म् तस्मै नूनमभिद्यवे वाचा विरूप नित्यया । वृष्णे चोदस्व सुष्टुतिम् ॥

१९१ ओ३म् तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम विश्वाः सुक्षितयः पृथक् । अग्ने कामाय येमिरे ॥

१९२ ओ३म् तुभ्यं ताऽअङ्गिरस्तम विश्वाः सुक्षितयः पृथक्। अग्ने कामाय येमिरे ॥

१९३ ओ३म् त्रिꣳ शद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥

१९४ ओ३म् त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि। अप नः शोशुचदघम् ॥

१९५ ओ३म् त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः। उत द्विषो मर्त्यस्य॥

१९६ ओ३म् त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः। सखा सखिभ्य ईड्यः॥

१९७ ओ३म् त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा। त्वं यज्ञेष्वीड्यः ॥

१९८ ओ३म् त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः॥

१९९ ओ३म् त्वमग्ने यज्ञानाꣳ होता वि श्वेषाꣳ हितः। देवेभिर्मानुषे जने॥

२०० ओ३म् त्वमग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः। त्वया यज्ञं वि तन्वते॥

२०१ ओ३म् दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो । कदु वोच इदं नमः ॥

२०२ ओ३म् दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो। कदु वोच इदं नमः॥

२०३ ओ३म् दूतं वो विश्ववेदसꣳ हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा॥

२०४ ओ३म् द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेव पारय। अप नः शोशुचदघम् ॥

२०५ ओ३म् धासिं कृण्वान ओषधीर्बप्सदग्निर्न वायति । पुनर्यन्तरुणीरपि ॥

२०६ ओ३म् धिया चक्रे वरेण्यो भूतानां गर्भमा दधे। दक्षस्य पितरं तना॥

२०७ ओ३म् नकिरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित् । वाजो अस्ति श्रवाय्यः ॥

२०८ ओ३म् नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः । अमैरमित्रमर्दय ॥

२०९ ओ३म् नवं नु स्तोममग्नये दिवः श्येनाय जीजनम् । वस्वः कुविद्वनाति नः ॥

२१० ओ३म् नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम्। सुवीरमग्न आहुत॥

२११ ओ३म् न किरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित्। वाजो अस्ति श्रवाय्यः॥

२१२ ओ३म् न हि ते पूर्तमक्षिपद्भुवन्नेमानां पते। अथा दुवो वनवसे॥

२१३ ओ३म् नमः सखिभ्यः पूर्वसद्भ्यो नमः साकंनिषेभ्यः। युञ्जे वाचꣳ शतपदीम्॥

२१४ ओ३म् नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय॥

२१५ ओ३म् नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय॥

२१६ ओ३म् पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः । समत्सु त्वा हवामहे ॥

२१७ ओ३म् पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः । समत्सु त्वा हवामहे ॥

२१८ ओ३म् पुनरूर्जा नि वर्तस्व पुनरग्न इषायुषा। पुनर्नः पाह्यꣳहसः॥

२१९ ओ३म् पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि दिशो विश्वा अनु प्रभुः। समत्सु त्वा हवामहे॥

२२० ओ३म् प्र णं इन्दो महे रण आपो अर्षन्ति सिन्धवः । यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥

२२१ ओ३म् प्र दे॒वं दे॒ववी॑तये॒ भर॑ता वसु॒वित्त॑मम् । आ स्वे योनौ॒ नि षी॑दतु ॥

२२२ ओ३म् प्र यत्ते॑ अग्ने सू॒रयो॒ जाये॑महि॒ प्र ते॑ व॒यम् । अप॑ न॒: शोशु॑चद॒घम् ॥

२२३ ओ३म् प्र यत्ते॑ अग्ने सू॒रयो॒ जाये॑महि॒ प्र ते॑ व॒यम्। अप॑ न॒: शोशु॑चद॒घम् ॥

२२४ ओ३म् प्र यद॒ग्नेः सह॑स्वतो वि॒श्वतो॒ यन्ति॑ भा॒नव॑: । अप॑ न॒: शोशु॑चद॒घम् ॥

२२५ ओ३म् प्र यद॒ग्नेः सह॑स्वतो वि॒श्वतो॒ यन्ति॑ भा॒नव॑:। अप॑ न॒: शोशु॑चद॒घम् ॥

२२६ ओ३म् प्र यद्भन्दि॑ष्ठ एषां॒ प्रास्माका॑सश्च सू॒रय॑:। अप॑ न॒: शोशु॑चद॒घम् ॥

२२७ ओ३म् प्र व॑: सखायो अ॒ग्नये॒ स्तोमं॑ य॒ज्ञं च॑ धृष्णु॒या । अर्च॒ गाय॑ च वे॒धसे॑ ॥

२२८ ओ३म् प्राग्नये॒ वाच॑मीरय वृ॒षभाय॑ क्षिती॒नाम्। स न॑: पर्ष॒दति॒ द्विष॑: ॥

२२९ ओ३म् प्रियो नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः। प्रियाः स्वग्नयो वयम्॥

२३० ओ३म् प्रेष्ठं वो अतिथि॑ स्तुषे मित्रमिव प्रियम्। अग्ने रथं न वेद्यम्॥

२३१ ओ३म् प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे। मरुद्भिरग्न आ गहि॥

२३२ ओ३म् परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥

२३३ ओ३म् पदं देवस्य मीढुषोऽनाधृष्टाभिरूतिभिः। भद्रा सूर्य इवोपदृक्॥

२३४ ओ३म् ब्रह्म॑ प्र॒जाव॒दा भ॑र॒ जात॑वेदो॒ विच॑र्षणे । अग्ने॒ यद्दी॒दय॑द्दि॒वि ॥

२३५ ओ३म् ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे। अग्ने यद्दीदयद्दिवि॥

२३६ ओ३म् म॒न्द्रं होता॑रमृ॒त्विजं॑ चि॒त्रभा॑नुं वि॒भाव॑सुम् । अ॒ग्निमी॑ळे॒ स उ॑ श्रवत् ॥

२३७ ओ३म् म॒हाँ अ॑सि सोम॒ ज्येष्ठ॑ उ॒ग्राणा॑मिन्द॒ ओजि॑ष्ठः । युध्वा॒ सञ्छश्व॑ज्जिगेथ ॥

२३८ ओ३म् मा नो अस्मिन्महाधने परा वर्ग्भारभृद्यथा । संवर्गं सं रयिं जय ॥

२३९ ओ३म् मा नो अग्ने महाधने परा वर्ग्भारभृद्यथा। संवर्ग॰ स॰ रयिं जय॥

२४० ओ३म् मन्द्र॰ होतारमृत्विजं चित्रभानुं विभावसुम्। अग्निमीडे स उ श्रवत्॥

२४१ ओ३म् य उग्र इव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वंसगः । अग्ने पुरो रुरोजिथ ॥

२४२ ओ३म् य उग्रेभ्यश्चिदोजीयाञ्छूरेभ्यश्चिच्छूरतरः । भूरिदाभ्यश्चिन्मंहीयान् ॥

२४३ ओ३म् यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम् । प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः ॥

२४४ ओ३म् यं त्वं विप्र मेधसातावग्ने हिनोषि धनाय । स तवोती गोषु गन्ता ॥

२४५ ओ३म् यं त्वा गोपवनो गिरा चनिष्ठदग्ने अङ्गिरः । स पावक श्रुधी हवम् ॥

२४६ ओ३म् यं त्वा जनास इन्धते मनुष्वदङ्गिरस्तम । अग्ने स बोधि मे वचः ॥

२४७ ओ३म् यः पञ्च चर्षणीरभि निषसाद दमेदमे । कविर्गृहपतिर्युवा ॥

२४८ ओ३म् यः परस्याः परावतस्तिरो धन्वातिरोचते । स नः पर्षदति द्विषः ॥

२४९ ओ३म् यः परस्याः परावतस्तिरो धन्वातिरोचते। स नः पर्षदति द्विषः ॥

२५० ओ३म् यः स्त्रीहितीषु पूर्व्यः संजग्मानासु कृष्टिषु। अरक्षद्दाशुषे गयम्॥

२५१ ओ३म् यत्ते पवित्रमर्चिवदग्ने तेन पुनीहि नः । ब्रह्मसवैः पुनीहि नः ॥

२५२ ओ३म् यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः । स यन्ता शश्वतीरिषः ॥

२५३ ओ३म् यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति । तस्य स्म प्राविता भव ॥

२५४ ओ३म् यस्याजुषन्नमस्विनः शमीमदुर्मखस्य वा । तं घेदग्निर्वृधावति ॥

२५५ ओ३म् युवानं विश्पतिं कविं विश्वादं पुरुवेपसम् । अग्निं शुम्भामि मन्मभिः ॥

२५६ ओ३म् युञ्जे वाचꣳ शतपदीं गाये सहस्रवर्तनि। गायत्रं त्रैष्टुभं जगत्॥

२५७ ओ३म् यो अग्निं देववीतये हविष्माँ आविवासति । तस्मै पावक मृळय ॥

२५८ ओ३म् यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत । स नः पर्षदति द्विषः ॥

२५९ ओ३म् यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत। स नः पर्षदति द्विषः ॥

२६० ओ३म् यो नो अग्ने दुरेव आ मर्तो वधाय दाशति । तस्मान्नः पाह्यंहसः ॥

२६१ ओ३म् यो रक्षांसि निजूर्वति वृषा शुक्रेण शोचिषा । स नः पर्षदति द्विषः ॥

२६२ ओ३म् यो रक्षांसि निजूर्वत्यग्निस्तिग्मेन शोचिषा। स नः पर्षदति द्विषः ॥

२६३ ओ३म् यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । स नः पर्षदति द्विषः ॥

२६४ ओ३म् यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति। स नः पर्षदति द्विषः ॥

२६५ ओ३म् यो अग्निं देववीतये हविष्माꣳ आविवासति। तस्मै पावक मृडय॥

२६६ ओ३म् यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाꣳ ऋतं बृहत्। अग्ने यक्षि स्वं दमम्॥

२६७ ओ३म् यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः। स यन्ता शश्वतीरिषः॥

२६८ ओ३म् यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति। तस्य स्म प्राविता भव॥

२६९ ओ३म् यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस्तस्थावसन्दिनम्। आपश्चिन्नि दधा पदम्॥

२७० ओ३म् य इदं प्रतिपप्रथे यज्ञस्य स्वरुत्तिरन्। ऋतूनुत्सृजते वशी॥

२७१ ओ३म् य उग्र इव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वꣳसगः। अग्ने पुरो रुरोजिथ॥

२७२ ओ३म् यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे। त्वे इद्धूयते हविः॥

२७३ ओ३म् यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम्। तत्र योनिं कृणवसे॥

२७४ ओ३म् यया गा आकरामहै सेनयाग्ने तवोत्या। तां नो हिन्व मघत्तये॥

२७५ ओ३म् रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत् ॥

२७६ ओ३म् वाजयन्निव नू रथान्योगाँ अग्नेरुप स्तुहि । यशस्तमस्य मीळ्हुषः ॥

२७७ ओ३म् वाजी वाजेषु धीयतेऽध्वरेषु प्र णीयते। विप्रो यज्ञस्य साधनः॥

२७८ ओ३म् विद्मा हि ते पुरा वयमग्ने पितुर्यथावसः । अधा ते सुम्नमीमहे ॥

२७९ ओ३म् विप्रं होतारमद्रुहं धूमकेतुं विभावसुम् । यज्ञानां केतुमीमहे ॥

२८० ओ३म् विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ । सद्यो दाशुषे क्षरसि ॥

२८१ ओ३म् विशां राजानमद्भुतमध्यक्षं धर्मणामिमम् । अग्निमीळे स उ श्रवत् ॥

२८२ ओ३म् विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः । चनो धाः सहसो यहो ॥

२८३ ओ३म् विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमंयज्ञमिदं वचः । चनो धाः सहसा यहो॥

२८४ ओ३म् विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ। सद्यो दाशुषे क्षरसि॥

२८५ ओ३म् वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तꣳ समिधीमहि। अग्ने बृहन्तमध्वरे॥

२८६ ओ३म् वृषणं त्वा वयं वृषन्वृषणः समिधीमहि। अग्ने दीद्यतं बृहत् ॥

२८७ ओ३म् वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः। तं हविष्मन्त ईडते ॥

२८८ ओ३म् वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः। तꣳ हविष्मन्त ईडते॥

२८९ ओ३म् वृषणं त्वा वयं वृषन्वृषणः समिधीमहि। अग्ने दीद्यतं बृहत्॥

२९० ओ३म् वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा। अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो॥

२९१ ओ३म् शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥

२९२ ओ३म् स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः । मीढ्वाँ अस्माकं बभूयात् ॥

२९३ ओ३म् स त्वं विप्राय दाशुषे रयिं देहि सहस्रिणम् । अग्ने वीरवतीमिषम् ॥

२९४ ओ३म् स त्वमग्ने विभावसुः सृजन्त्सूर्यो न रश्मिभिः । शर्धन्तमांसि जिघ्नसे ॥

२९५ ओ३म् स न ईळानया सह देवाँ अग्ने दुवस्युवा । चिकिद्विभानवा वह ॥

२९६ ओ३म् स नः स्तवान आ भर गायत्रेण नवीयसा । रयिं वीरवतीमिषम् ॥

२९७ ओ३म् स नः सिन्धुमिव नावाति पर्षा स्वस्तये। अप नः शोशुचदघम् ॥

२९८ ओ३म् स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः । पाहि सदमिद्विश्वायुः ॥

२९९ ओ३म् स नो महाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः । धिये वाजाय हिन्वतु ॥

३०० ओ३म् स नो विश्वेभिर्देवेभिरूर्जो नपाद्भद्रशोचे । रयिं देहि विश्ववारम् ॥

३०१ ओ३म् स नो वृष्टिं दिवस्परि स नो वाजमनर्वाणम् । स नः सहस्रिणीरिषः ॥

३०२ ओ३म् स रेवाँ इव विश्पतिर्दैव्यः केतुः शृणोतु नः । उक्थैरग्निर्बृहद्भानुः ॥

३०३ ओ३म् स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु तरुता । विप्रेभिरस्तु सनिता ॥

३०४ ओ३म् स विद्वाँ आ च पिप्रयो यक्षि चिकित्व आनुषक् । आ चास्मिन्त्सत्सि बर्हिषि ॥

३०५ ओ३म् स विश्वा प्रति चाक्लृप ऋतूंरुत्सृजते वशी। यज्ञस्य वयं उत्तिरन् ॥

३०६ ओ३म् स वेद देव आनमं देवाँ ऋतायते दमे । दाति प्रियाणि चिद्वसु ॥

३०७ ओ३म् स सद्म परि णीयते होता मन्द्रो दिविष्टिषु । उत पोता नि षीदति ॥

३०८ ओ३म् स हि क्षेमो हविर्यज्ञः श्रुष्टीदस्य गातुरेति । अग्निं देवा वाशीमन्तम् ॥

३०९ ओ३म् स हि यो मानुषा युगा सीदद्धोता कविक्रतुः । दूतश्च हव्यवाहनः ॥

३१० ओ३म् स हि विश्वाति पार्थिवा रयिं दाशन्महित्वना । वन्वन्नवातो अस्तृतः ॥

३११ ओ३म् स हि वेदा वसुधितिं महाँ आरोधनं दिवः । स देवाँ एह वक्षति ॥

३१२ ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन्हव्या जुहोतन ॥

३१३ ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन ॥

३१४ ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन ॥

३१५ ओ३म् साह्वान्विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः । अग्निस्तुविश्रवस्तमः ॥

३ १ ३र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
३१६ ओ३म् साह्वान्विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः। अग्निस्तुविश्रवस्तमः॥

३१७ ओ३म् सुक्षेत्रिया सुगातुया वसूया च यजामहे । अप नः शोशुचदघम् ॥

३१८ ओ३म् सुक्षेत्रिया सुगातुया वसूया च यजामहे। अप नः शोशुचदघम् ॥

३१९ ओ३म् सुवीरं रयिमा भर जातवेदो विचर्षणे । जहि रक्षांसि सुक्रतो ॥

३२० ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे ॥

३२१ ओ३म् सेमां वेतु वषट्कृतिमग्निर्जुषत नो गिरः । यजिष्ठो हव्यवाहनः ॥

३२२ ओ३म् स्पार्हा यस्य श्रियो दृशे रयिर्वीरवतो यथा । अग्रे यज्ञस्य शोचतः ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
३२३ ओ३म् स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः। मीढ्वाꣳअस्माकं बभूयात्॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३२४ ओ३म् स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवाससि। बृहदग्ने सुवीर्यम्॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
३२५ ओ३म् स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः। पाहि सदमिद्विश्वायुः॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
३२६ ओ३म् स नो मित्रमहस्त्वमग्ने शुक्रेण शोचिषा। देवैरा सत्सि बर्हिषि॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २
३२७ ओ३म् स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः। आ देवान्वक्षि यक्षि च॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
३२८ ओ३म् स नो महाꣳ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः। धिये वाजाय हिन्वतु॥

१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
३२९ ओ३म् स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु तरुता। विप्रेभिरस्तु सनिता॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
३३० ओ३म् स नो वेदो अमात्यमग्नी रक्षतु शन्तमः। उतास्मान्पात्वꣳहसः॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
३३१ ओ३म् स रेवाꣳ इव विश्पतिर्दैव्यः केतुः शृणोतु नः। उक्थैरग्निर्बृहद्भानुः॥

३ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २
३३२ ओ३म् समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे। वाजेषु चित्रराधसम्॥

३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
३३३ ओ३म् सह रय्या नि वर्तस्वाग्ने पिन्वस्व धारया। विश्वप्स्न्या विश्वतस्परि॥

३३४ ओ३म् हर॑यो धूमके॑तवो॒ वात॑जूता॒ उप॒ द्यवि॑ । यत॑न्ते॒ वृथ॑ग॒ग्नय॑: ॥

३३५ ओ३म् हर॑यो धू॒मके॑तवो॒ वात॑जूता॒ऽउप॒ द्यवि॑। यत॑न्ते॒ वृथ॑ग॒ग्नय॑: ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३३६ ओ३म् होता देवो अमर्त्यः पुरस्तादेति मायया। विदथानि प्रचोदयन्॥

2. अग्निः पवमानः 5

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ २उ ३ १ २
३३७ ओ३म् अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषम्॥

२ ३ १ २ ३
३३८ ओ३म् अग्न आयूंषि पवस ।आसुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥

३३९ ओ३म् अग्न आयूꣳषि पवसे आ सुवोर्जं इषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥

३४० ओ३म् अग्न आयूꣳषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥

३४१ ओ३म् अग्निऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्॥

3. अग्निः हर्वीषि वा 6

३४२ ओ३म् अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु। अवटस्य विसर्जने॥

३४३ ओ३म् आ सुते सिञ्चत श्रियꣳरोदस्योरभिश्रियम्। रसा दधीत वृषभम्॥

३४४ ओ३म् उप स्रक्वेषु बप्सतः कृण्वते धरुणं दिवि। इन्द्रे अग्ना नमः स्वः॥

३४५ ओ३म् गाव उप वदावटे महि यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया॥

३४६ ओ३म् ते जानत स्वमोक्यंऽ. सं वत्सासो न मातृभिः। मिथो नसन्त जामिभिः॥

३४७ ओ३म् सिञ्चन्ति नमसावटमुच्चाचक्रं परिज्मानम्। नीचीनबारमक्षितम्॥

4. अग्निर्ग्निर्वा सविता च 1

३४८ ओ३म् त्रिभिष्ट्वं देव सवितर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः । अग्ने दक्षैः पुनीहि नः ॥

5. अग्निर्जातवेदाः 3

३४९ ओ३म् अस्य प्र जातवेदसो विप्रवीरस्य मीळ्हुषः । महीमियर्मि सुष्टुतिम् ॥

३५० ओ३म् प्र नूनं जातवेदसमश्वं हिनोत वाजिनम् । इदं नो बर्हिरासदे ॥

३५१ ओ३म् या रुचो जातवेदसो देवत्रा हव्यवाहनीः । ताभिर्नो यज्ञमिन्वतु ॥

6. अग्निर्मरुतश्च 7

३५२ ओ३म् आ ये त॒न्वन्ति॑ र॒श्मिभि॑स्ति॒रः स॑मु॒द्रमोज॑सा । म॒रुद्भि॑रग्न॒ आ ग॑हि ॥

३५३ ओ३म् प्रति॒ त्यं चारु॑मध्व॒रं गो॑पी॒थाय॒ प्र हू॑यसे । म॒रुद्भि॑रग्न॒ आ ग॑हि ॥

३५४ ओ३म् य ई॒ङ्खय॑न्ति॒ पर्व॑ता॒न्तिरः स॑मु॒द्रम॑र्ण॒वम् । म॒रुद्भि॑रग्न॒ आ ग॑हि ॥

३५५ ओ३म् य उ॒ग्रा अ॒र्कमा॑नृ॒चुरना॑धृष्टास॒ ओज॑सा । म॒रुद्भि॑रग्न॒ आ ग॑हि ॥

३५६ ओ३म् ये नाक॒स्याधि॑ रोच॒ने दि॒वि दे॒वास॒ आस॑ते । म॒रुद्भि॑रग्न॒ आ ग॑हि ॥

३५७ ओ३म् ये म॒हो रज॑सो वि॒दुर्विश्वे॑ दे॒वासो॑ अ॒द्रुहः॑ । म॒रुद्भि॑रग्न॒ आ ग॑हि ॥

३५८ ओ३म् ये शु॒भ्रा घो॒रव॑र्पसः सु॒क्ष॒त्रासो॑ रि॒शाद॑सः । म॒रुद्भि॑रग्न॒ आ ग॑हि ॥

7. अग्निर्हर्वीषि वा 7

३५९ ओ३म् अधु॑क्षत्पि॒प्युषी॒मिष॒मूर्जं॑ स॒प्तप॑दीम॒रिः । सूर्य॑स्य स॒प्त र॒श्मिभिः॑ ॥

३६० ओ३म् अ॒न्तरि॑च्छन्ति॒ तं जने॑ रु॒द्रं प॒रो म॑नी॒षया॑ । गृ॒भ्णन्ति॑ जि॒ह्वया॑ स॒सम् ॥

३६१ ओ३म् आ द॒शभि॑र्वि॒वस्व॑त॒ इन्द्रः॒ कोश॑मचुच्यवीत् । खेद॑या त्रि॒वृता॑ दि॒वः ॥

३६२ ओ३म् गाव॒ उपा॑वताव॒तं म॒ही य॒ज्ञस्य॑ र॒प्सुदा॑ । उ॒भा कर्णा॑ हिर॒ण्यया॑ ॥

३६३ ओ३म् परि॑ त्रि॒धातु॑रध्व॒रं जू॒र्णिरे॑ति॒ नवी॑यसी । मध्वा॒ होता॑रो अञ्जते ॥

३६४ ओ३म् सि॒ञ्चन्ति॒ नम॑साव॒तमु॒च्चाच॑क्रं॒ परि॑ज्मानम् । नी॒चीन॑बार॒मक्षि॑तम् ॥

३६५ ओ३म् ह॒विष्कृ॑णुध्व॒मा ग॑मदध्व॒र्युर्व॑नते॒ पुनः॑ । वि॒द्वाँ अ॑स्य प्र॒शास॑नम् ॥

8. अग्नी रक्षोहा 2

३६६ ओ३म् घृतेनाग्निः समंज्यते मधुप्रतीक आहुतः । रोचमानो विभावसुः ॥

३६७ ओ३म् तं त्वा गीर्भिरुरुक्षया हव्यवाहं समींधिरे । यजिष्ठं मानुषे जने ॥

9. अग्नीन्द्रौ 1

३६८ ओ३म् आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्। येषामिन्द्रो युवा सखा॥

10. अग्नीषोमौ 3

३६९ ओ३म् अग्नीषोमा सवेदसा सहूती वनतं गिरः । सं देवत्रा बभूवथुः ॥

३७० ओ३म् अग्नीषोमावनेन वां यो वां घृतेन दाशति । तस्मै दीदयतं बृहत् ॥

३७१ ओ३म् अग्नीषोमाविमानि नो युवं हव्या जुजोषतम् । आ यातमुप नः सचा ॥

11. अध्यात्मम्, रोहितः, आदित्यः 2

३७२ ओ३म् मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः। मान्त स्थुर्नो अरातयः ॥

३७३ ओ३म् यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वाततः। तमाहुतमशीमहि ॥

12. अपांनपात् सोम आपश्च देवताः 9

३७४ ओ३म् अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः। सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः ॥

३७५ ओ३म् अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवम् ॥

३७६ ओ३म् अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह। ता नो हिन्वन्त्वध्वरम् ॥

३७७ ओ३म् अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम्। पृञ्चतीर्मधुना पयः ॥

३७८ ओ३म् आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे३ मम। ज्योक्च सूर्यं दृशे ॥

३७९ ओ३म् आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ॥

३८० ओ३म् तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥

३८१ ओ३म् यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥

३८२ ओ३म् शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

13. अम्बा देवता 1

३८३ ओ३म् मा सु भित्था मा सु रिषोऽम्ब धृष्णु वीरयस्व सु। अग्निश्चेदं करिष्यथः ॥

14. अश्विनौ 53

३८४ ओ३म् अभूदु पारमेतवे पन्था ऋतस्य साधुया । अदर्शि वि स्रुतिर्दिवः ॥

३८५ ओ३म् अयं वां कृष्णो अश्विना हवते वाजिनीवसू । मध्वः सोमस्य पीतये ॥

३८६ ओ३म् अरुणप्सुरुषा अभूदकर्ज्योतिॠतावरी । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

३८७ ओ३म् अवन्तमत्रये गृहं कृणुतं युवमश्विना । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

३८८ ओ३म् अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्पाणी शुभस्पती । पुरुभुजा चनस्यतम् ॥

३८९ ओ३म् अश्विना सु विचाकशद्वृक्षं परशुमाँ इव । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

३९० ओ३म् अश्विनोरसनं रथमनश्वं वाजिनीवतोः । तेनाहं भूरि चाकन ॥

३९१ ओ३म् अस्मे आ वहतं रयिं शतवन्तं सहस्रिणम् । पुरुक्षुं विश्वधायसम् ॥

३९२ ओ३म् आ नः स्तोममुप द्रवत्तूयं श्येनेभिराशुभिः । यातमश्वेभिरश्विना ॥

३९३ ओ३म् आ नो गोमन्तमश्विना सुवीरं सुरथं रयिम् । वोळ्हमश्वावतीरिषः ॥

३९४ ओ३म् इहा गंतं वृषण्वसू शृणुतं म इमं हवम् । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

३९५ ओ३म् उत नो गोमतीरिष उत सातीरहर्विदा । वि पथः सातये सितम् ॥

३९६ ओ३म् उदीराथामृतायते युञ्जाथामश्विना रथम् । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

३९७ ओ३म् एतावद्वां वृषण्वसू अतो वा भूयो अश्विना । गृणन्तः सुम्नमीमहे ॥

३९८ ओ३म् एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः। स्तुषे वामश्विना बृहत्॥

३९९ ओ३म् किमिदं वां पुराणवज्जरतोरिव शस्यते । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

४०० ओ३म् कुह स्थः कुह जग्मथुः कुह श्येनेव पेतथुः । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

४०१ ओ३म् गच्छतं दाशुषो गृहमित्था स्तुवतो अश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये ॥

४०२ ओ३म् जनासो वृक्तबर्हिषो हविष्मन्तो अरंकृतः । युवां हवन्ते अश्विना ॥

४०३ ओ३म् तत्तदिदश्विनोरवो जरिता प्रति भूषति । मदे सोमस्य पिप्रतोः ॥

४०४ ओ३म् ता सुदेवाय दाशुषे सुमेधामवितारिणीम् । घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ॥

४०५ ओ३म् ताभिरा यातमूतिभिर्नव्यसीभिः सुशस्तिभिः । यद्वां वृषण्वसू हुवे ॥

४०६ ओ३म् तेन नो वाजिनीवसू परावतश्चिदा गतम् । उपेमां सुष्टुतिं मम ॥

४०७ ओ३म् तेन नो वाजिनीवसू पश्वे तोकाय शं गवे । वहतं पीवरीरिषः ॥

४०८ ओ३म् त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेना यातमश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये ॥

४०९ ओ३म् दस्रा युवाकवः सुता नासत्या वृक्तबर्हिषः। आ यातं रुद्रवर्त्तनी । तं प्रत्नथा। अयं

वेनः ॥

४१० ओ३म् नहि वामस्ति दूरके यत्रा रथेन गच्छथः । अश्विना सोमिनो गृहम् ॥

४११ ओ३म् निमिषश्चिज्जवीयसा रथेना यातमश्विना । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

४१२ ओ३म् नृवद्दस्रा मनोयुजा रथेन पृथुपाजसा । सचेथे अश्विनोषसम् ॥

४१३ ओ३म् पुरं न धृष्णवा रुज कृष्णया बाधितो विशा । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

४१४ ओ३म् पुरुत्रा चिद्धि वां नरा विह्वयन्ते मनीषिणः । वाघद्भिरश्विना गतम् ॥

४१५ ओ३म् पुरुप्रिया ण ऊतये पुरुमन्द्रा पुरूवसू । स्तुषे कण्वासो अश्विना ॥

४१६ ओ३म् प्र द्युम्नाय प्र शवसे प्र नृषाह्याय शर्मणे । प्र दक्षाय प्रचेतसा ॥

४१७ ओ३म् प्र द्युम्नाय प्र शवसे प्र नृषाह्याय शर्मणे। प्र दक्षाय प्रचेतसा ॥

४१८ ओ३म् प्र सप्तवध्रिराशसा धारामग्नेरशायत । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

४१९ ओ३म् यथा चित्कण्वमावतं प्रियमेधमुपस्तुतम् । अत्रिं शिञ्जारमश्विना ॥

४२० ओ३म् यदद्य कर्हि कर्हि चिच्छुश्रूयातमिमं हवम् । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

४२१ ओ३म् यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु । नृम्णं तद्धत्तमश्विना ॥

४२२ ओ३म् यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु। नृम्णं तद्धत्तमश्विना ॥

४२३ ओ३म् यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदथः। यद्वा सुम्नेभिरुक्थ्या ॥

४२४ ओ३म् या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासाथामिषम् ॥

४२५ ओ३म् या दस्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम्। धिया देवा वसुविदा॥

४२६ ओ३म् युवं मृगं जागृवांसं स्वदथो वा वृषण्वसू । ता नः पृङ्क्तमिषा रयिम् ॥

४२७ ओ३म् युवाभ्यां वाजिनीवसू प्रति स्तोमा अदृक्षत । वाचं दूतो यथोहिषे ॥

४२८ ओ३म् युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत् । ऋता वनथो अक्तुभिः ॥

४२९ ओ३म् ये वां दंसांस्यश्विना विप्रासः परिमामृशुः। एवेत्काण्वस्य बोधतम् ॥

४३० ओ३म् येभिस्तिस्रः परावतो दिवो विश्वानि रोचना । त्रीँरक्तून्परिदीयथः ॥

४३१ ओ३म् यो ह वां मधुनो दृतिराहितो रथचर्षणे । ततः पिबतमश्विना ॥

४३२ ओ३म् रथं वामनुगायसं य इषा वर्तते सह । न चक्रमभि बाधते ॥

४३३ ओ३म् रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीशुमश्विना । आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ॥

४३४ ओ३म् वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि । यद्वां रथो विभिष्पतात् ॥

४३५ ओ३म् वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि। यद्वा२ रथो विभिष्पतात्॥

४३६ ओ३म् शृणुतं जरितुर्हवं कृष्णस्य स्तुवतो नरा । मध्वः सोमस्य पीतये ॥

15. अश्विनौ मित्रावरुणौ 1

४३७ ओ३म् दूरादिहेव यत्सतोऽरुणप्सुरशिश्वितत्। वि भानुं विश्वथातनत्॥

16. असमाती राजा 3

४३८ ओ३म् असमातिं नितोशनं त्वेषं निययिनं रथम् । भजेरथस्य सत्पतिम् ॥

४३९ ओ३म् आ जनं त्वेषसंदृशं माहीनानामुपस्तुतम् । अगन्म बिभ्रतो नमः ॥

४४० ओ३म् यो जनान्महिषाँ इवातितस्थौ पवीरवान् । उतापवीरवान्युधा ॥

17. आत्मस्तुतिः 9

४४१ ओ३म् अभि द्यां महिना भुवमभीऽइमां पृथिवीं महीम् । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

४४२ ओ३म् अहं तष्टेव वन्धुरं पर्यचामि हृदा मतिम् । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

४४३ ओ३म् इति वा इति मे मनो गामश्वं सनुयामिति । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

४४४ ओ३म् उन्मा पीता अयंसत रथमश्वा इवाशवः । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

४४५ ओ३म् उप मा मतिरस्थित वाश्रा पुत्रमिव प्रियम् । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

४४६ ओ३म् ओषमित्पृथिवीमहं जङ्घनानीह वेह वा । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

४४७ ओ३म् नहि मे रोदसी उभे अन्यं पक्षं चन प्रति । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

४४८ ओ३म् प्र वाता इव दोधत उन्मा पीता अयंसत । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

४४९ ओ३म् हन्ताहं पृथिवीमिमां नि दधानीह वेह वा । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

18. आत्मा सूर्यो वा 3

४५० ओ३म् अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम्॥

४५१ ओ३म् आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

४५२ ओ३म् त्रिँशद्धाम वि राजति वाक्पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः॥

19. आदित्यः 6

४५३ ओ३म् उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये। महो राजान ईशते॥

४५४ ओ३म् ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह। इषँस्वश्च धीमहि॥

४५५ ओ३म् प्रति वाꣳसूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम्। अर्यमणꣳरिशादसम्॥

४५६ ओ३म् यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा। सुवाति सविता भगः॥

४५७ ओ३म् राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे। इयं विप्रा मेधसातये॥

४५८ ओ३म् सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः। ये नो अꣳहोऽतिपिप्रति॥

20. आदित्याः 11

४५९ ओ३म् अनेहो न उरुव्रज उरूचि वि प्रसर्तवे । कृधि तोकाय जीवसे ॥

४६० ओ३म् तत्सु नो नव्यं सन्यस आदित्या यन्मुमोचति । बन्धाद्बद्धमिवादिते ॥

४६१ ओ३म् नास्माकमस्ति तत्तर आदित्यासो अतिष्कदे । यूयमस्मभ्यं मृळत ॥

४६२ ओ३म् पर्षि दीने गभीर आँ उग्रपुत्रे जिघांसतः । माकिस्तोकस्य नो रिषत् ॥

४६३ ओ३म् मा नः सेतुः सिषेदयं महे वृणक्तु नस्परि । इन्द्र इद्धि श्रुतो वशी ॥

४६४ ओ३म् मा नो हेतिर्विवस्वत आदित्याः कृत्रिमा शरुः । पुरा नु जरसो वधीत् ॥

४६५ ओ३म् यं यज्ञं नयथा नर आदित्या ऋजुना पथा । प्र वः स धीतये नशत् ॥

४६६ ओ३म् यद्वः श्रान्ताय सुन्वते वरूथमस्ति यच्छर्दिः । तेना नो अधि वोचत ॥

४६७ ओ३म् शश्वद्धि वः सुदानव आदित्या ऊतिभिर्वयम् । पुरा नूनं बुभुज्महे ॥

४६८ ओ३म् शश्वन्तं हि प्रचेतसः प्रतियन्तं चिदेनसः । देवाः कृणुथ जीवसे ॥

४६९ ओ३म् सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते । नात्रावखादो अस्ति वः ॥

21. आपः 17

४७० ओ३म् अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निं च विश्वशम्भुवम् ॥

४७१ ओ३म् अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह । ता नो हिन्वन्त्वध्वरम् ॥

४७२ ओ३म् आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥

४७३ ओ३म् आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नऽ ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ॥

४७४ ओ३म् आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ॥

४७५ ओ३म् आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥

४७६ ओ३म् तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥

४७७ ओ३म् तस्माऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥

४७८ ओ३म् तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥

४७९ ओ३म् तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥

४८० ओ३म् यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥

४८१ ओ३म् यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥

४८२ ओ३म् यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥

४८३ ओ३म् यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥

४८४ ओ३म् वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्सोमो अति द्रुतः। इन्द्रस्य युजः सखा ॥

४८५ ओ३म् शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

४८६ ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥

22. आपो गावो वा 1

४८७ ओ३म् आ निवर्त नि वर्तय पुनर्न इन्द्र गा देहि । जीवाभिर्भुनजामहै ॥

23. आप्रियः 16

४८८ ओ३म् उदातैर्जिहते बृहद्वारो देवीर्हिरण्ययीः । पवमानेन सुष्टुताः ॥

४८९ ओ३म् तनूनपात्पवमानः शृङ्गे शिशानो अर्षति । अन्तरिक्षेण रारजत् ॥

४९० ओ३म् तनूनपादृतं यते मध्वा यज्ञः समज्यते । दधत्सहस्रिणीरिषः ॥

४९१ ओ३म् त्वष्टा रूपाणि हि प्रभुः पशून्विश्वान्त्समानजे । तेषां नः स्फातिमा यज ॥

४९२ ओ३म् देवीर्द्वारो वि श्रयध्वं सुप्रायणा न ऊतये । प्रप्र यज्ञं पृणीतन ॥

४९३ ओ३म् पुरोगा अग्निर्देवानां गायत्रेण समज्यते । स्वाहाकृतीषु रोचते ॥

४९४ ओ३म् प्राचीनं बर्हिरोजसा सहस्रवीरमस्तृणन् । यत्रादित्या विराजथ ॥

४९५ ओ३म् बर्हिः प्राचीनमोजसा पवमानः स्तृणन्हरिः । देवेषु देव ईयते ॥

४९६ ओ३म् भारतीळे सरस्वति या वः सर्वा उपब्रुवे । ता नश्चोदयत श्रिये ॥

४९७ ओ३म् यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि । तत्र हव्यानि गामय ॥

४९८ ओ३म् वातस्य पत्मन्नीळिता दैव्या होतारा मनुषः । इमं नो यज्ञमा गतम् ॥

४९९ ओ३म् शिवस्त्वष्टरिहा गहि विभुः पोष उत त्मना । यज्ञेयज्ञे न उदव ॥

५०० ओ३म् समिद्धो विश्वतस्पतिः पवमानो वि राजति । प्रीणन्वृषा कनिक्रदत् ॥

५०१ ओ३म् सुप्रतीके वयोवृधा यह्वी ऋतस्य मातरा । दोषामुषासमीमहे ॥

५०२ ओ३म् सुशिल्पे बृहती मही पवमानो वृषण्यति । नक्तोषासा न दर्शते ॥

५०३ ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे ॥

24. इडादयो लिङ्गोक्ता देवताः 1

५०४ ओ३म् तिस्रो देवीर्बर्हिरेदꣳ सदन्त्विडा सरस्वती भारती। मही गृणाना ॥

25. इध्मः समिद्धो वाग्निः 2

५०५ ओ३म् सुसमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते । होतः पावक यक्षि च ॥

५०६ ओ३म् सुषमिद्धो न आ वह देवाꣳ अग्ने हविष्मते। होतः पावक यक्षि च॥

26. इन्द्रः 764

५०७ ओ३म् अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणम्। यस्मिन्विश्वानि पौंस्या ॥

५०८ ओ३म् अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम् । उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥

५०९ ओ३म् अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम्। उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥

५१० ओ३म् अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम्। उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥

५११ ओ३म् अग्नऽआयूꣳषि पवसऽआ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥

५१२ ओ३म् अतः समुद्रमुद्वतश्चिकित्वाँ अव पश्यति । यतो विपान एजति ॥

५१३ ओ३म् अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपारणे । इमं रातं सुतं पिब ॥

५१४ ओ३म् अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यऽम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥

५१५ ओ३म् अथा॑ ते॒ अन्त॑मानां वि॒द्याम॑ सुम॒ती॒नाम्। मा नो॒ अति॑ ख्य॒ आ ग॑हि ॥

५१६ ओ३म् अथा॑ ते॒ अन्त॑मानां वि॒द्याम॑ सुम॒ती॒नाम्। मा नो॒ अति॑ ख्य॒ आ ग॑हि ॥

५१७ ओ३म् अधा॑ ते॒ अप्र॑तिष्कुतं दे॒वी शुष्मं॑ सपर्यतः । उ॒भे सु॑शिप्र॒ रोद॑सी ॥

५१८ ओ३म् अध्व॑र्य॒वा तु हि षि॒ञ्च सोम॑ वी॒राय॑ शि॒प्रिणे॑ । भरा॑ सु॒तस्य॑ पी॒तये॑ ॥

५१९ ओ३म् अध्व॑र्यो॒ऽअद्रि॑भिः सु॒तꣳ सोम॑ प॒वित्र॒ऽआ न॑य। पु॒नी॒हीन्द्रा॑य॒ पात॑वे ॥

५२० ओ३म् अ॑नव॒द्यैर॒भिद्यु॑भिर्म॒खः सह॑स्वदर्चति। ग॒णैरिन्द्र॑स्य॒ काम्यैः॑ ॥

५२१ ओ३म् अनु॑ त्वा॒ रोद॑सी उ॒भे ऋक्ष॑माणमकृपेताम् । इन्द्र॒ यद्द॑स्यु॒हाभ॑वः ॥

५२२ ओ३म् अनु॑ त्वा॒ रोद॑सी उ॒भे ऋक्ष॑माणमकृपेताम्। इन्द्र॒ यद्द॑स्यु॒हाभ॑वः ॥

५२३ ओ३म् अनु॑ त्वा॒ रोद॑सी उ॒भे च॒क्रं न व॒र्त्येत॑शम् । अनु॑ सु॒वाना॒स इन्द॑वः ॥

५२४ ओ३म् अनु॑ प्र॒त्नस्यौक॑सो हु॒वे तु॑विप्र॒तिं नर॑म्। यं ते॒ पूर्वं॑ पि॒ता हु॒वे ॥

५२५ ओ३म् अ॒पां फेने॑न॒ नमु॑चेः॒ शिर॑ इ॒न्द्रोद॑वर्तयः । विश्वा॒ यदज॑यः॒ स्पृधः॑ ॥

५२६ ओ३म् अ॒पां फेने॑न॒ नमु॑चेः॒ शिर॑ इ॒न्द्रोद॑वर्तयः। विश्वा॒ यदज॑यः॒ स्पृधः॑ ॥

५२७ ओ३म् अ॒पां फेने॑न॒ नमु॑चेः॒ शिर॑ऽइ॒न्द्रोद॑वर्त्तयः। विश्वा॒ यदज॑यः॒ स्पृधः॑ ॥

५२८ ओ३म् अ॒पामू॒र्मिर्मद॑न्निव॒ स्तोम॑ इन्द्राजिरायते । वि ते॒ मदा॑ अराजिषुः ॥

५२९ ओ३म् अ॒पामू॒र्मिर्मद॑न्निव॒ स्तोम॑ इन्द्राजिरायते। वि ते॒ मदा॑ अराजिषुः ॥

५३० ओ३म् अ॒पामू॒र्मिर्मद॑न्निव॒ स्तोम॑ इन्द्राजिरायते। वि ते॒ मदा॑ अराजिषुः ॥

५३१ ओ३म् अ॒भि ग॑न्ध॒र्वम॑तृणदबु॒ध्नेषु॒ रज॒स्स्वा । इन्द्रो॑ ब्र॒ह्मभ्य॒ इद्वृ॒धे ॥

५३२ ओ३म् अभि त्वा गोतमा गिरानूषत प्र दावने । इन्द्र वाजाय घृष्वये ॥

५३३ ओ३म् अभि त्वां वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये। तृम्पा व्यऽश्नुही मदम् ॥

५३४ ओ३म् अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता । पीत्वी सोमस्य वावृधे ॥

५३५ ओ३म् अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता। पीत्वी सोमस्य वावृधे ॥

५३६ ओ३म् अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥

५३७ ओ३म् अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥

५३८ ओ३म् अभि व्रजं न तत्निषे सूर उपाकचक्षसम् । यदिन्द्र मृळयासि नः ॥

५३९ ओ३म् अंभ्रातृव्योऽअना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि। युधेदापित्वमिच्छसे ॥

५४० ओ३म् अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब ॥

५४१ ओ३म् अयं ते मानुषे जने सोमः पूरुषु सूयते । तस्येहि प्र द्रवा पिब ॥

५४२ ओ३म् अयं ते शर्यणावति सुषोमायामधि प्रियः । आर्जीकीये मदिन्तमः ॥

५४३ ओ३म् अयं ते स्तोमो अग्रियो हृदिस्पृगस्तु शंतमः । अथा सोमं सुतं पिब ॥

५४४ ओ३म् अयमिन्द्रो मरुत्सखा वि वृत्रस्याभिनच्छिरः । वज्रेण शतपर्वणा ॥

५४५ ओ३म् अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम् । वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥

५४६ ओ३म् अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥

५४७ ओ३म् अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः । प्र सोम इन्द्र सर्पतु ॥

५४८ ओ३म् अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः। प्र सोम इन्द्र सर्पतु ॥

५४९ ओ३म् अ॒या धि॒या च॑ गव्य॒या पुरु॑णाम॒न्पुरु॑ष्टुत । यत्सोमे॑सोम॒ आभ॑वः ॥

५५० ओ३म् अयु॑द्ध॒ इद्यु॒धा वृ॒तं शूर॒ आज॑ति॒ सत्व॑भिः । येषा॒मिन्द्रो॒ युवा॒ सखा॑ ॥

५५१ ओ३म् अर॑ं त इन्द्र कु॒क्षये॒ सोमो॑ भवतु वृत्रहन् । अर॒ं धाम॑भ्य॒ इन्द॑वः ॥

५५२ ओ३म् अ॒र्वा॒ची॒नं सु ते॒ मन॑ उ॒त चक्षु॑ः शतक्रतो । इन्द्र॑ कृ॒ण्वन्तु॑ वा॒घत॑ः ॥

५५३ ओ३म् अ॑र्वा॒ची॒नं सु ते॒ मन॑ उ॒त चक्षु॑ः शतक्रतो। इन्द्र॑ कृ॒ण्वन्तु॑ वा॒घत॑ः ॥

५५४ ओ३म् अ॒र्वा॒ची॒नो व॑सो भवा॒स्मे सु म॒त्स्वान्ध॑सः । सोमा॑नामिन्द्र सोमपाः ॥

५५५ ओ३म् अ॒र्वाञ्च॑ं त्वा सु॒खे रथे॒ वह॑तामिन्द्र के॒शिना॑ । घृ॒तस्नू॑ ब॒र्हिरा॒सदे॑ ॥

५५६ ओ३म् अ॒र्वाञ्च॑ं त्वा सु॒खे रथे॒ वह॑तामिन्द्र के॒शिना॑। घृ॒तस्नू॑ ब॒र्हिरा॒सदे॑ ॥

५५७ ओ३म् अ॒र्वा॒वतो॑ न॒ आ ग॑हि परा॒वत॑श्च वृत्रहन् । इ॒मा जु॑षस्व नो॒ गिर॑ः ॥

५५८ ओ३म् अ॑र्वा॒वतो॑ न॒ आ ग॑हि परा॒वत॑श्च वृत्रहन्। इ॒मा जु॑षस्व नो॒ गिर॑ः ॥

५५९ ओ३म् अवा॑ नो वाज॒युं रथ॑ं सु॒कर॑ं ते॒ किमित्परि॑ । अ॒स्मान्त्सु जि॒ग्युष॑स्कृधि ॥

५६० ओ३म् अ॒वि॒प्रे चि॒द्वयो॒ दध॑दना॒शुना॑ चि॒दर्व॑ता । इन्द्रो॒ जेता॑ हि॒तं धन॑म् ॥

५६१ ओ३म् अ॑सु॒न्वामि॑न्द्र सं॒सद॒ं विषू॑ची॒ं व्य॑ऽनाशयः। सोम॒पा उत्त॑रो॒ भव॑न् ॥

५६२ ओ३म् अस॑ृग्रमिन्द्र ते॒ गिर॒ः प्रति॒ त्वामुद॑हासत । अजो॑षा वृष॒भं पति॑म् ॥

५६३ ओ३म् अस॑ृग्रमिन्द्र ते॒ गिर॒ः प्रति॒ त्वामुद॑हासत। अजो॑षा वृष॒भं पति॑म् ॥

५६४ ओ३म् अ॒स्माँ अ॑वन्तु ते श॒तम॒स्मान्त्स॒हस्र॑मू॒तय॑ः । अ॒स्मान्विश्वा॑ अ॒भिष्ट॑यः ॥

५६५ ओ३म् अ॒स्माक॑ं त्वा सु॒ताँ उप॑ वी॒तपृ॑ष्ठा अ॒भि प्रय॑ः । श॒तं व॑हन्तु॒ हर॑यः ॥

५६६ ओ३म् अस्माकं धृष्णुया रथो द्युमाँ इन्द्रानपच्युतः । गव्युरश्वयुरीयते ॥

५६७ ओ३म् अस्माकं सु रथं पुर इन्द्रः कृणोतु सातये । न यं धूर्वन्ति धूर्तयः ॥

५६८ ओ३म् अस्माकमिन्द्र भूतु ते स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः । अस्मान्राये महे हिनु ॥

५६९ ओ३म् अस्मान्त्सु तत्र चोदयेन्द्र राये रभस्वतः। तुविद्युम्न यशस्वतः ॥

५७० ओ३म् अस्मे धेहि श्रवो बृहद्द्युम्नं सहस्रसातमम् । इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥

५७१ ओ३म् अस्मे धेहि श्रवो बृहद्द्युम्नं सहस्रसातमम्। इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥

५७२ ओ३म् अस्य पीत्वा शतक्रतो घनो वृत्राणामभवः । प्रावो वाजेषु वाजिनम् ॥

५७३ ओ३म् अस्य पीत्वा शतक्रतो घनो वृत्राणामभवः। प्रावो वाजेषु वाजिनम् ॥

५७४ ओ३म् अस्वापयद्दभीतये सहस्रा त्रिंशतं हथैः । दासानामिन्द्रो मायया ॥

५७५ ओ३म् अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत् । येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे ॥

५७६ ओ३म् अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत्। येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे ॥

५७७ ओ३म् अहन्वृत्रमृचीषम और्णवाभमहीशुवम् । हिमेनाविध्यदर्बुदम् ॥

५७८ ओ३म् अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ । अहं सूर्य इवाजनि ॥

५७९ ओ३म् अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ। अहं सूर्य इवाजनि ॥

५८० ओ३म् अतीहि मन्युषाविण२ सुषुवा२समुपेरय। अस्य रातौ सुतं पिब॥

५८१ ओ३म् अतश्चिदिन्द्र न उपा याहि शतवाजया। इषा सहस्रवाजया॥

५८२ ओ३म् अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्। मा नो अति ख्य आ गहि॥

१ २ ३ १२ ३ १ २र २ ३ १२ ३ १ २
५८३ ओ३म् अनु त्वा रोदसी उभे स्पर्धमानमददेताम्। इन्द्र यद्दस्युहाभवः॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १२ ३ २ ३२
५८४ ओ३म् अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम्। यं ते पूर्वं पिता हुवे॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
५८५ ओ३म् अपादु शिप्र्यन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः। इन्द्रोरिन्द्रो यवाशिरः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २
५८६ ओ३म् अपिबत्कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे। तत्राददिष्ट पौस्यम्॥

१ २ ३ २ ३ ३उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
५८७ ओ३म् अयुद्ध इद्युधा वृतꣳ शूर आजति सत्वभिः। येषामिन्द्रो युवा सखा॥

१२ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
५८८ ओ३म् अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन्। अरं धामभ्य इन्दवः॥

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
५८९ ओ३म् अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः। अरꣳ शक्र परेमणि॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
५९० ओ३म् असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत। सजोषा वृषभं पतिम्॥

२ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
५९१ ओ३म् अरमश्वाय गायत श्रुतकक्षारं गवे। अरमिन्द्रस्य धाम्ने॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५९२ ओ३म् अस्ति सोमो अयꣳ सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः। उत स्वराजो अश्विना॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
५९३ ओ३म् अद्य नो देव सवितः प्रजावत्सावीः सौभगम्। परा दुष्वप्न्यꣳ सुव॥

३ १ २र ३ १ २ ३ १२ ३ १२ २ ३ १ २र ३ १ २
५९४ ओ३म् अपां फेनेन नमुचे शिर इन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजय स्पृधः॥

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
५९५ ओ३म् अभि त्वा वृषभा सुते सुतꣳ सृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुही मदम्॥

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
५९६ ओ३म् अभि त्वा वृषभा सुते सुतꣳसृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुही मदम्॥

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
५९७ ओ३म् अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुꣳ सत्यस्य सत्पतिम्॥

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
५९८ ओ३म् अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुꣳ सत्यस्य सत्पतिम्॥

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ ३उ ३ १ २
५९९ ओ३म् अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब॥

६०० ओ३म् अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब॥

६०१ ओ३म् अया धिया च गव्यया पुरुणामन्पुरुष्टुत। यत्सोमेसोम आभुवः॥

६०२ ओ३म् अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे॥

६०३ ओ३म् अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे॥

६०४ ओ३म् अहं प्रत्नेन जन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत्। येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे॥

६०५ ओ३म् अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह। अह२ सूर्य इवाजनि॥

६०६ ओ३म् अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह। अह२ सूर्य इवाजनि॥

६०७ ओ३म् अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे॥

६०८ ओ३म् अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे॥

६०९ ओ३म् आ घ त्वावान्त्मनाप्त स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः। ऋणोरक्षं न चक्र्योऽः ॥

६१० ओ३म् आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः । वाजेभिरुप नो हवम् ॥

६११ ओ३म् आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः। वाजेभिरुप नो हवम् ॥

६१२ ओ३म् आ त इन्द्र महिमानं हरयो देव ते महः । रथे वहन्तु बिभ्रतः ॥

६१३ ओ३म् आ त एता वचोयुजा हरी गृभ्णे सुमद्रथा । यदीं ब्रह्मभ्य इद्ददः ॥

६१४ ओ३म् आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय । महाहस्ती दक्षिणेन ॥

६१५ ओ३म् आ तू न इन्द्र मद्र्यऽग्घुवानः सोमपीतये। हरिभ्यां याह्यद्रिवः ॥

६१६ ओ३म् आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि । महान्महीभिरूतिभिः ॥

६१७ ओ३म् आ तू नंऽइन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्द्धमा गंहि। महान् महीभिंरूतिभिः ॥

६१८ ओ३म् आ ते दक्षं वि रोचना दधद्रत्ना वि दाशुषे । स्तोतृभ्य इन्द्रंमर्चत ॥

६१९ ओ३म् आ तें सिञ्चामि कुक्ष्योरनु गात्रा वि धांवतु। गृंभाय जिह्वया मधु ॥

६२० ओ३म् आ त्वा गीर्भिर्महामुरुं हुवे गामिव भोजसे । इन्द्र सोमंस्य पीतये ॥

६२१ ओ३म् आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहंतामिन्द्र केशिनां । उप ब्रह्मांणि नः शृणु ॥

६२२ ओ३म् आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहंतामिन्द्र केशिनां। उप ब्रह्मांणि नः शृणु ॥

६२३ ओ३म् आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहंतामिन्द्र केशिनां। उप ब्रह्मांणि नः शृणु ॥

६२४ ओ३म् आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहंतामिन्द्र केशिनां। उप ब्रह्मांणि नः शृणु ॥

६२५ ओ३म् आ त्वा रम्भं न जिव्रंयो ररम्भा शंवसस्पते । उश्मसिं त्वा सधस्थ आ ॥

६२६ ओ३म् आ त्वा वहन्तु हरंयो वृषंणं सोमंपीतये । इन्द्रं त्वा सूरंचक्षसः ॥

६२७ ओ३म् आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमांस इन्द्र गिर्वणः। शं तें सन्तु प्रचेंतसे ॥

६२८ ओ३म् आ त्वेता नि षींदतेन्द्रंमभि प्र गांयत। सखांयः स्तोमंवाहसः ॥

६२९ ओ३म् आ नों याहि सुतावंतोऽस्माकं सुष्टुतीरुपं। पिबा सु शिंप्रिन्नन्धंसः ॥

६३० ओ३म् आ बुन्दं वृंत्रहा ददे जातः पृच्छद्वि मातरंम् । क उग्राः के ह शृण्विरे ॥

६३१ ओ३म् आ यद्दुवः शतक्रतवा कामं जरितृणाम्। ऋणोरक्षं न शचींभिः ॥

६३२ ओ३म् आ यस्यं ते महिमानं शतंमूते शतंक्रतो । गीर्भिर्गृणन्तिं कारवः ॥

६३३ ओ३म् आ यांहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबां इमम् । एदं बर्हिः संदो ममं ॥

६३४ ओ३म् आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम ॥

६३५ ओ३म् आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम ॥

६३६ ओ३म् आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम ॥

६३७ ओ३म् आ व इन्द्रं क्रिविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् । मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः ॥

६३८ ओ३म् आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे ॥

६३९ ओ३म् आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे ॥

६४० ओ३म् आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्पश्यन्ति वासरम् । परो यदिध्यते दिवा ॥

६४१ ओ३म् आदीं शवस्यब्रवीदौर्णवाभमहीशुवम् । ते पुत्र सन्तु निष्टुरः ॥

६४२ ओ३म् आयन्तारं महि स्थिरं पृतनासु श्रवोजितम् । भूरेरीशानमोजसा ॥

६४३ ओ३म् आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः। वाजेभिरुप नो हवम्॥

६४४ ओ३म् आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभꣳ सं गृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन॥

६४५ ओ३म् आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभꣳ सं गृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन॥

६४६ ओ३म् आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि। महान्महीभिरूतिभिः॥

६४७ ओ३म् आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना। उप ब्रह्माणि नः शृणु॥

६४८ ओ३म् आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः। न त्वामिन्द्राति रिच्यते॥

६४९ ओ३म् आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः। न त्वामिन्द्राति रिच्यते॥

६५० ओ३म् आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजाꣳसि सुक्रतू॥

६५१ ओ३म् आ यद्दुवः शतक्रतवा कामं जरितॄणाम्। ऋणोरक्षं न शचीभिः॥

६५२ ओ३म् आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम॥

६५३ ओ३म् आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम॥

६५४ ओ३म् आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे॥

६५५ ओ३म् आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्। येषामिन्द्रो युवा सखा॥

६५६ ओ३म् आ घ त्वावान् त्मना युक्तः स्तोतृभ्यो धृष्णवीयानः। ऋणोरक्षं न चक्रयोः॥

६५७ ओ३म् आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छद्वि मातरम्। क उग्राः के ह शृण्विरे॥

६५८ ओ३म् आ याह्युप नः सुतं वाजेभिर्मा हृणीयथाः। महाँ इव युवजानिः॥

६५९ ओ३म् आ व इन्द्रं कृविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम्। मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः॥

६६० ओ३म् आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत। सखायः स्तोमवाहसः॥

६६१ ओ३म् आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत। सखाय स्तोमवाहसः॥

६६२ ओ३म् इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्। तद्विदच्छर्यणावति ॥

६६३ ओ३म् इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः ॥

६६४ ओ३म् इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि । इन्द्रं महो वा रजसः ॥

६६५ ओ३म् इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि। इन्द्रं महो वा रजसः ॥

६६६ ओ३म् इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्। जेता शत्रून्विचर्षणिः ॥

६६७ ओ३म् इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्। जेता शत्रून्विचर्षणिः ॥

६६८ ओ३म् इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥

६६९ ओ३म् इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥

६७० ओ३म् इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥

६७१ ओ३म् इन्द्रं क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत । पिबा वृषस्व तातृपिम् ॥

६७२ ओ३म् इन्द्रं क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत। पिबा वृषस्व तातृपिम् ॥

६७३ ओ३म् इन्द्रं क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत। पिबा वृषस्व तातृपिम् ॥

६७४ ओ३म् इन्द्रं त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे । स पाहि मध्वो अन्धसः ॥

६७५ ओ३म् इन्द्रं त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे। स पाहि मध्वो अन्धसः ॥

६७६ ओ३म् इन्द्रं त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे। स पाहि मध्वो अन्धसः ॥

६७७ ओ३म् इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि । जयेम सं युधि स्पृधः ॥

६७८ ओ३म् इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि। जयेम सं युधि स्पृधः ॥

६७९ ओ३म् इन्द्र दृह्यस्व पूरसि भद्रा त एति निष्कृतम् । इयं धीर्ऋत्वियावती ॥

६८० ओ३म् इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः । तिर स्तवान विश्पते ॥

६८१ ओ३म् इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः। तिर स्तवान विश्पते ॥

६८२ ओ३म् इन्द्र प्र णो रथमव पश्चाच्चित्सन्तमद्रिवः । पुरस्तादेनं मे कृधि ॥

६८३ ओ३म् इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा। वृत्राणि वृत्रहं जहि ॥

६८४ ओ३म् इन्द्र य उ नु ते अस्ति वाजो विप्रेभिः सनित्वः । अस्माभिः सु तं सनुहि ॥

६८५ ओ३म् इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥

६८६ ओ३म् इन्द्र श्रुधि सु मे हवमस्मे सुतस्य गोमतः । वि पीतिं तृप्तिमश्नुहि ॥

६८७ ओ३म् इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते । क्षयं चन्द्रास इन्दवः ॥

६८८ ओ३म् इन्द्र सोमाः सुता इमे तान्दधिष्व शतक्रतो । जठरे वाजिनीवसो ॥

६८९ ओ३म् इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते। क्षयं चन्द्रास इन्दवः ॥

६९० ओ३म् इन्द्र सोमाः सुता इमे तान्दधिष्व शतक्रतो। जठरे वाजिनीवसो ॥

६९१ ओ३म् इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः । द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ॥

६९२ ओ३म् इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना मरुत्वन्तं हवामहे । अस्य सोमस्य पीतये ॥

६९३ ओ३म् इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे । युजं वृत्रेषु वज्रिणम् ॥

६९४ ओ३म् इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे। युजं वृत्रेषु वज्रिणम् ॥

६९५ ओ३म् इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे । भरेषु वाजसातये ॥

६९६ ओ३म् इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे। भरेषु वाजसातये ॥

६९७ ओ३म् इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः ॥

६९८ ओ३म् इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः ॥

६९९ ओ३म् इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे । उक्थेभिः कुविदागमत् ॥

७०० ओ३म् इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे। उक्थेभिः कुविदागमत् ॥

७०१ ओ३म् इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः। द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ॥

७०२ ओ३म् इन्द्रः॒ स दाम॑ने कृ॒त ओजि॑ष्ठः॒ स मदे॑ हि॒तः। द्यु॒म्नी श्लो॒की स सो॒म्यः ॥

७०३ ओ३म् इन्द्र॒मित्के॒शिना॒ हरी॑ सोम॒पेया॑य वक्षतः । उप॑ य॒ज्ञं सु॒राध॑सम् ॥

७०४ ओ३म् इन्द्र॒मित्के॒शिना॒ हरी॑ सोम॒पेया॑य वक्षतः। उप॑ य॒ज्ञं सु॒राध॑सम् ॥

७०५ ओ३म् इन्द्र॑मि॒त्था गिरो॒ ममाच्छा॑गुरिषि॒ता इ॒तः। आ॒वृते॒ सोम॑पीतये ॥

७०६ ओ३म् इन्द्र॒मिद्गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्र॑म॒र्केभि॑र॒र्किणः॑ । इन्द्रं॒ वाणी॑रनूषत ॥

७०७ ओ३म् इन्द्र॒मिद्गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्र॑म॒र्केभि॑र॒र्किणः॑। इन्द्रं॒ वाणी॑रनूषत ॥

७०८ ओ३म् इन्द्र॒मिद्गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्र॑म॒र्केभि॑र॒र्किणः॑। इन्द्रं॒ वाणी॑रनूषत ॥

७०९ ओ३म् इन्द्र॒मिद्गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्र॑म॒र्केभि॑र॒र्किणः॑। इन्द्रं॒ वाणी॑रनूषत ॥

७१० ओ३म् इन्द्र॑मु॒क्थानि॑ वावृधुः समु॒द्रमि॑व॒ सिन्ध॑वः । अनु॑त्तमन्युम॒जर॑म् ॥

७११ ओ३म् इन्द्र॑श्च मृ॒डया॑ति नो॒ न नः॑ प॒श्चाद॒घं न॑शत्। भ॒द्रं भ॑वाति नः पु॒रः ॥

७१२ ओ३म् इन्द्र॑श्च मृ॒लया॑ति नो॒ न नः॑ प॒श्चाद॒घं न॑शत्। भ॒द्रं भ॑वाति नः पु॒रः ॥

७१३ ओ३म् इन्द्र॑श्च मृ॒ळया॑ति नो॒ न नः॑ प॒श्चाद॒घं न॑शत् । भ॒द्रं भ॑वाति नः पु॒रः ॥

७१४ ओ३म् इन्द्र॑श्चिद्घा॒ तद॑ब्रवीत्स्त्रि॒या अ॑शा॒स्यं मनः॑ । उ॒तो अह॒ क्रतुं॑ र॒घुम् ॥

७१५ ओ३म् इन्द्रा या॑हि चित्रभानो सु॒ता इ॒मे त्वा॒यवः॑। अण्वी॑भि॒स्तना॑ पू॒तासः॑ ॥

७१६ ओ३म् इन्द्रा या॑हि॒ तू॒तु॑जा॒न उप॒ ब्रह्मा॑णि हरिवः । सु॒ते द॑धिष्व न॒श्चनः॑ ॥

७१७ ओ३म् इन्द्रा या॑हि॒ तू॒तु॑जा॒न उप॒ ब्रह्मा॑णि हरिवः। सु॒ते द॑धिष्व न॒श्चनः॑ ॥

७१८ ओ३म् इन्द्रा या॑हि धि॒येषि॒तो विप्र॑जुतः सु॒ताव॑तः। उप॒ ब्रह्मा॑णि वा॒घतः॑ ॥

७१९ ओ३म् इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः । उप ब्रह्माणि वाघतः ॥

७२० ओ३म् इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु । यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥

७२१ ओ३म् इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥

७२२ ओ३म् इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥

७२३ ओ३म् इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः । अर्कमर्चन्तु कारवः ॥

७२४ ओ३म् इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः ॥

७२५ ओ३म् इन्द्रायाहि तूतुजानऽउप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः ॥

७२६ ओ३म् इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः ॥

७२७ ओ३म् इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु । इन्द्र तानि त आ वृणे ॥

७२८ ओ३म् इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु। इन्द्र तानि त आ वृणे ॥

७२९ ओ३म् इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु। इन्द्र तानि त आ वृणे ॥

७३० ओ३म् इन्द्रेण मन्युना वयमभि ष्याम पृतन्यतः। घ्नन्तो वृत्राण्यप्रति ॥

७३१ ओ३म् इन्द्रेण रोचना दिवो दृढानि दृंहितानि च। स्थिराणि न पराणुदे ॥

७३२ ओ३म् इन्द्रेण रोचना दिवो दृढानि दृंहितानि च। स्थिराणि न पराणुदे ॥

७३३ ओ३म् इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि दृंहितानि च । स्थिराणि न पराणुदे ॥

७३४ ओ३म् इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा। मन्दू समानवर्चसा ॥

७३५ ओ३म् इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महाँ अभिष्टिरोजसा ॥

७३६ ओ३म् इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत् । स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥

७३७ ओ३म् इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥

७३८ ओ३म् इन्द्रो अङ्गं महद्भयमभी षदप चुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥

७३९ ओ३म् इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव ॥

७४० ओ३म् इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि । वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥

७४१ ओ३म् इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥

७४२ ओ३म् इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥

७४३ ओ३म् इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥

७४४ ओ३म् इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः । पुष्टावन्तो यथा पशुम् ॥

७४५ ओ३म् इमं नु मायिनं हुव इन्द्रमीशानमोजसा । मरुत्वन्तं न वृञ्जसे ॥

७४६ ओ३म् इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब । आगत्या वृषभिः सुतम् ॥

७४७ ओ३म् इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब। आगत्या वृषभिः सुतम् ॥

७४८ ओ३म् इमा अभि प्र णोनुमो विपामग्रेषु धीतयः । अग्नेः शोचिर्न दिद्युतः ॥

७४९ ओ३म् इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः । वत्सं गावो न धेनवः ॥

७५० ओ३म् इमा धाना घृतस्नुवो हरी इहोप वक्षतः । इन्द्रं सुखतमे रथे ॥

७५१ ओ३म् इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद । वीहि शूर पुरोळाशम् ॥

७५२ ओ३म् इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद। वीहि शूर पुरोडाशम् ॥

७५३ ओ३म् इमां म इन्द्र सुष्टुतिं जुषस्व प्र सु मामव । उत प्र वर्धया मतिम् ॥

७५४ ओ३म् इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम् । एनामृतस्य पिप्युषीः ॥

७५५ ओ३म् इमे सोमास इन्दवः सुतासो अधि बर्हिषि । ताँ इन्द्र सहसे पिब ॥

७५६ ओ३म् इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे । सरो गौरो यथा पिब ॥

७५७ ओ३म् इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे। सरो गौरो यथा पिब ॥

७५८ ओ३म् इहि तिस्रः परावत इहि पञ्च जनाँ अति । धेना इन्द्रावचाकशत् ॥

७५९ ओ३म् इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः॥

७६० ओ३म् इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे। युजं वृत्रेषु वज्रिणम्॥

७६१ ओ३म् इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः॥

७६२ ओ३म् इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः॥

७६३ ओ३म् इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः॥

७६४ ओ३म् इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत्सीमुपह्वरे विदत्॥

७६५ ओ३म् इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः॥

७६६ ओ३म् इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः॥

७६७ ओ३म् इन्द्रेण सꣳहि दृक्षसे सजग्मानो अबिभ्युषा। मन्दू समानवर्चसा॥

७६८ ओ३म् इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः॥

७६९ ओ३म् इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
७७० ओ३म् इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ २उ ३ १ २
७७१ ओ३म् इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्य॑रोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत्॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
७७२ ओ३म् इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभु॑रयिम्। वाजी ददातु वाजिनम्॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
७७३ ओ३म् इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः। हरिवान्त्सुताना॑ सखा॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
७७४ ओ३म् इन्द्रा नु पूषणा वय॑ सख्याय स्वस्तये। हुवेम वाजसातये॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
७७५ ओ३म् इन्द्र इन्नो महोनां दाता वाजानां नृतुः। महा॑अभिज्ञ्वा यमत्॥

२ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७७६ ओ३म् इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः॥

२ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७७७ ओ३म् इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
७७८ ओ३म् इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
७७९ ओ३म् इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
७८० ओ३म् इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
७८१ ओ३म् इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत॥

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र १ २ ३ २ ३ १ २
७८२ ओ३म् इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः॥

३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
७८३ ओ३म् इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्। तद्विदच्छर्यणावति॥

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
७८४ ओ३म् इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्। अनाभयिन्ररिमा ते॥

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
७८५ ओ३म् इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्। अनाभयिन्ररिमा ते॥

३ १ २र ३ १ २ २ ३ ३ १ २
७८६ ओ३म् इद॑ ह्यन्वोजसा सुत॑ राधानां पते। पिबा त्वाऽ३स्य गिर्वणः॥

७८७ ओ३म् इदꣳह्यन्वोजसा सुतꣳराधानां पते। पिबा त्वास्य गिर्वणः॥

७८८ ओ३म् इमा उ त्वा पुरुवसोऽभि प्र नोनवुर्गिरः। गावो वत्सं न धेनवः॥

७८९ ओ३म् इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः। गावो वत्सं न धेनवः॥

७९० ओ३म् इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम्। एनामृतस्य पिप्युषीः॥

७९१ ओ३म् इमे त इन्द्र सोमाआः सुतासो ये च सोत्वाः। तेषां मत्स्व प्रभूवसो॥

७९२ ओ३म् इमं उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः। पुष्टावन्तो यथा पशुम्॥

७९३ ओ३म् इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधन्तो अध्वरे। अच्छावभृथमोजसा॥

७९४ ओ३म् इहेव श्रृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान्। नि यामं चित्रमृञ्जते॥

७९५ ओ३म् इह त्वा गोपरीणसं महे मन्दन्तु राधसे। सरो गौरो यथा पिब॥

७९६ ओ३म् इन्द्रेहित्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महाꣳ अभिष्टिरोजसा॥

७९७ ओ३म् ईङ्खयंन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते। भेजानासः सुवीर्यम् ॥

७९८ ओ३म् ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते। वन्वानासः सुवीर्यम्॥

७९९ ओ३म् उत त्या तुर्वशायदू अस्नातारा शचीपतिः । इन्द्रो विद्वाँ अपारयत् ॥

८०० ओ३म् उत त्वं मघवञ्छृणु यस्ते वष्टि ववक्षि तत् । यद्वीळयासि वीळु तत् ॥

८०१ ओ३म् उत त्वाबधिरं वयं श्रुत्कर्णं सन्तमूतये । दूरादिह हवामहे ॥

८०२ ओ३म् उत दासं कौलितरं बृहतः पर्वतादधि । अवाहन्निन्द्र शम्बरम् ॥

८०३ ओ३म् उत दासस्य वर्चिनः सहस्राणि शतावधीः । अधि पञ्च प्रधीँरिव ॥

८०४ ओ३म् उत नः पितुमा भर संरराणो अविक्षितम् । मघवन्भूरि ते वसु ॥

८०५ ओ३म् उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः । स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ॥

८०६ ओ३म् उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः। स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ॥

८०७ ओ३म् उत नो गोमतस्कृधि हिरण्यवतो अश्विनः । इळाभिः सं रभेमहि ॥

८०८ ओ३म् उत ब्रुवन्तु नो निदो निरन्यतश्चिदारत । दधाना इन्द्र इद्दुवः ॥

८०९ ओ३म् उत ब्रुवन्तु नो निदो निरन्यतश्चिदारत। दधाना इन्द्र इद्दुवः ॥

८१० ओ३म् उत शुष्णस्य धृष्णुया प्र मृक्षो अभि वेदनम् । पुरो यदस्य सम्पिणक् ॥

८११ ओ३म् उत स्मा सद्य इत्परि शशमानाय सुन्वते । पुरू चिन्मंहसे वसु ॥

८१२ ओ३म् उत स्मा हि त्वामाहुरिन्मघवानं शचीपते । दातारमविदीधयुम् ॥

८१३ ओ३म् उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः । सोममिन्द्र चमू सुतम् ॥

८१४ ओ३म् उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः। सोममिन्द्र चमू सुतम् ॥

८१५ ओ३म् उत्त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥

८१६ ओ३म् उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः । अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥

८१७ ओ३म् उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः। अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥

८१८ ओ३म् उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः। अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥

८१९ ओ३म् उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य ॥

८२० ओ३म् उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब । गोदा इद्रेवतो मदः ॥

८२१ ओ३म् उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः ॥

८२२ ओ३म् उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः ॥

८२३ ओ३म् उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम् । हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः ॥

८२४ ओ३म् उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम्। हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः ॥

८२५ ओ३म् उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र केशिभिः । सुते हि त्वा हवामहे ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २
८२६ ओ३म् उ त्वा मदन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २
८२७ ओ३म् उत्त्वा मन्दन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि॥

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २
८२८ ओ३म् उद्घा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः। अर्वाञ्चं नुनुदे वलम्॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
८२९ ओ३म् उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २
८३० ओ३म् उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उप नो हरिभिः सुतम्॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २
८३१ ओ३म् उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उप नो हरिभिः सुतम्॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ २ ३ १ २
८३२ ओ३म् उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत। न गायत्रं गीयमानम्॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ २ ३ १ २
८३३ ओ३म् उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत। न गायत्रं गीयमानम्॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र १ २ ३ २ ३ २
८३४ ओ३म् उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वा शिप्रे अवेपयः। सोममिन्द्र चमू सुतम्॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
८३५ ओ३म् उपह्वरे गिरीणाꣳ सङ्गमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत॥

२र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २
८३६ ओ३म् उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य॥

२उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २
८३७ ओ३म् उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य॥

८३८ ओ३म् ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन्वाजे शतक्रतो। समन्येषु ब्रवावहै ॥

८३९ ओ३म् ऊर्ध्वा हि ते दिवेदिवे सहस्रा सूनृता शता । जरितृभ्यो विमंहते ॥

८४० ओ३म् ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन्वाजे शतक्रतो। समन्येषु ब्रवावहै॥

८४१ ओ३म् ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान्। अर्यमा देवैः सजोषाः॥

८४२ ओ३म् एकया प्रतिधापिबत्साकं सरांसि त्रिंशतम् । इन्द्रः सोमस्य काणुका ॥

८४३ ओ३म् एता च्यौत्नानि ते कृता वर्षिष्ठानि परीणसा । हृदा वीड्वधारयः ॥

८४४ ओ३म् एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर ॥

८४५ ओ३म् एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम् । पतयन्मन्दयत्सखम् ॥

८४६ ओ३म् एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम्। पतयन्मन्दयत्सखम् ॥

८४७ ओ३म् एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने । चक्रिं विश्वानि चक्रये ॥

८४८ ओ३म् एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने। चक्रिं विश्वानि चक्रये ॥

८४९ ओ३म् एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः । अधा चिदिन्द्र मे सचा ॥

८५० ओ३म् एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः। अधा चिदिन्द्र मे सचा ॥

८५१ ओ३म् एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते । सद्यश्चित्सन्ति दाशुषे ॥

८५२ ओ३म् एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते। सद्यश्चित्सन्ति दाशुषे ॥

८५३ ओ३म् एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते। सद्यश्चित्सन्ति दाशुषे ॥

८५४ ओ३म् एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः। एवा ते राध्यं मनः ॥

८५५ ओ३म् ए॒वा ह्य॑स्य॒ काम्या॒ स्तोम॑ उ॒क्थं च॒ शंस्या॑। इन्द्रा॑य॒ सोम॑पीतये ॥

८५६ ओ३म् ए॒वा ह्य॑स्य॒ काम्या॒ स्तोम॑ उ॒क्थं च॒ शंस्या॑। इन्द्रा॑य॒ सोम॑पीतये ॥

८५७ ओ३म् ए॒वा ह्य॑स्य सू॒नृता॑ विर॒प्शी गोम॑ती म॒ही। प॒क्वा शाखा॒ न दा॒शुषे॑ ॥

८५८ ओ३म् ए॒वा ह्य॑स्य सू॒नृता॑ विर॒प्शी गोम॑ती म॒ही। प॒क्वा शाखा॒ न दा॒शुषे॑ ॥

८५९ ओ३म् एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णं तनूषु धेहि नः। सत्राजिदुग्र पौ२॥

८६० ओ३म् एन्द्र सानसि२ रयि२ सजित्वान२ सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर॥

८६१ ओ३म् एह हरी ब्रह्मयुजा शग्मा वक्षतः सखायम्। इन्द्रं गीर्भिर्गिर्वणसम्॥

८६२ ओ३म् एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः। एवा ते राध्यं मनः॥

८६३ ओ३म् एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः। स्तुषे वामश्विना बृहत्॥

८६४ ओ३म् ओज॒स्तद॑स्य तित्विष उ॒भे यत्स॒मव॑र्तयत् । इन्द्र॒श्चर्मे॑व॒ रोद॑सी ॥

८६५ ओ३म् ओज॒स्तद॑स्य तित्विष उ॒भे यत्स॒मव॑र्तयत्। इन्द्र॒श्चर्मे॑व॒ रोद॑सी ॥

८६६ ओ३म् ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी॥

८६७ ओ३म् ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्त्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी॥

८६८ ओ३म् कण्वा॒ इन्द्रं॒ यदक्र॑त॒ स्तोमै॑र्य॒ज्ञस्य॒ साध॑नम् । जा॒मि ब्रु॑वत॒ आयु॑धम् ॥

८६९ ओ३म् कण्वाः॒ इन्द्रं॒ यदक्र॑त॒ स्तोमै॑र्य॒ज्ञस्य॒ साध॑नम्। जा॒मि ब्रु॑वत॒ आयु॑धम् ॥

८७० ओ३म् कया॑ नश्चि॒त्र आ भु॑वदू॒ती स॒दावृ॑धः॒ सखा॑ । कया॒ शचि॑ष्ठया वृ॒ता ॥

८७१ ओ३म् कया॑ नश्चि॒त्र आ भु॑वदू॒ती स॒दावृ॑धः॒ सखा॑। कया॒ शचि॑ष्ठया वृ॒ता ॥

८७२ ओ३म् कया नश्चित्रऽ आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥

८७३ ओ३म् कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु ॥

८७४ ओ३म् कस्य वृषा सुते सचा नियुत्वान्वृषभो रणत् । वृत्रहा सोमपीतये ॥

८७५ ओ३म् कस्यं स्वित्सवनं वृषा जुजुष्वाँ अव गच्छति । इन्द्रं क उ स्विदा चके ॥

८७६ ओ३म् किमादुतासि वृत्रहन्मघवन्मन्युमत्तमः । अत्राह दानुमातिरः ॥

८७७ ओ३म् कुवित्संस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत् । शचीभिरप नो वरत् ॥

८७८ ओ३म् कुवित्संस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत्। शचीभिरप नो वरत् ॥

८७९ ओ३म् कुवित्सस्य प्र हि वज्रं गोमन्तं दस्युहा गमत्। शचीभिरप नो वरत्॥

८८० ओ३म् केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥

८८१ ओ३म् केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥

८८२ ओ३म् केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥

८८३ ओ३म् केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥

८८४ ओ३म् केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

८८५ ओ३म् को नु मर्या अमिथितः सखा सखायमब्रवीत् । जहा को अस्मदीषते ॥

८८६ ओ३म् क्वऽ३स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः। ब्रह्मा कस्तꣳ सपर्यति॥

८८७ ओ३म् कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

८८८ ओ३म् कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

१ २ ३ १ ३र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
८८९ ओ३म् कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु॥

२ ३ ३र ३ ३उ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
८९० ओ३म् क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रꣳ सोमस्य तर्पयात्। स नो वसून्या भरात्॥

२ ३ २ ३ १ ३र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
८९१ ओ३म् कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम्। जामि ब्रुवत आयुधा॥

२ ३ १ २ ३ १ ३र ३ १ २ १ ३र ३ १ २
८९२ ओ३म् कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते। तदिध्यस्य वर्धनम्॥

२ ३ १ २ ३ १ ३र १ २ ३ २ ३ १ २
८९३ ओ३म् कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्य आ भर॥

३ १ १ ३ १ ३र ३ १ ३र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
८९४ ओ३म् कदा वसो स्तोत्रꣳहर्यत आ अव श्मशा रुधद्वाः। दीर्घꣳसुतम् वाताप्याय॥

२ ३ १ २ ३ २ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३र ३ १ २
८९५ ओ३म् गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया॥

८९६ ओ३म् गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः। ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः ॥

८९७ ओ३म् गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः। ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः ॥

८९८ ओ३म् गिरा वज्रो न सम्भृतः सबलो अनपच्युतः । ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः ॥

८९९ ओ३म् गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे । इन्द्र त्वादातमिद्यशः ॥

९०० ओ३म् गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे। इन्द्र त्वादातमिद्यशः ॥

१ २ ३ १ २ ३ ३उ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ ३र
९०१ ओ३म् गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे। इन्द्र त्वादातमिद्यशः॥

९०२ ओ३म् गुहा सतीरुप त्मना प्र यच्छोचन्त धीतयः । कण्वा ऋतस्य धारया ॥

३ ३उ ३ १ २ ३ २ ३ १ ३र ३ २ ३ २ ३ १ २
९०३ ओ३म् गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथया। वरिवस्या महोनाम्॥

९०४ ओ३म् जज्ञानो नु शतक्रतुर्वि पृच्छदिति मातरम् । क उग्राः के ह शृण्विरे ॥

९०५ ओ३म् तं त्वा मरुत्वती परि भुवद्वाणी सयावरी । नक्षमाणा सह द्युभिः ॥

१०६ ओ३म् तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः शतक्रतो । धनानामिन्द्र सातये ॥

१०७ ओ३म् तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः शतक्रतो। धनानामिन्द्र सातये ॥

१०८ ओ३म् तं त्वा हविष्मतीर्विश उप ब्रुवत ऊतये । उरुज्रयसमिन्दुभिः ॥

१०९ ओ३म् तं सुष्टुत्या विवासे ज्येष्ठराजं भरे कृत्नुम्। महो वाजिनं सनिभ्यः ॥

११० ओ३म् तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः। इन्द्र त्वास्मिंत्सधमादे॥

१११ ओ३म् तथा तदस्तु सोमपाः सखे वज्रिन्तथा कृणु । यथा त उश्मसीष्टये ॥

११२ ओ३म् तद्दधाना अवस्यवो युष्माभिर्दक्षपितरः । स्याम मरुत्वतो वृधे ॥

११३ ओ३म् तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने । शं यद्गवे न शाकिने ॥

११४ ओ३म् तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद्गवे न शाकिने ॥

११५ ओ३म् तमद्य राधसे महे चारुं मदाय घृष्वये । एहीमिन्द्र द्रवा पिब ॥

११६ ओ३म् तमर्केभिस्तं सामभिस्तं गायत्रैश्चर्षणयः । इन्द्रं वर्धन्ति क्षितयः ॥

११७ ओ३म् तमिन्द्र मदमा गहि बर्हिष्ठां ग्रावभिः सुतम्। कुविन्न्व१स्य तृप्णवः ॥

११८ ओ३म् तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । स वृषा वृषभो भुवत् ॥

११९ ओ३म् तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत् ॥

१२० ओ३म् तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत् ॥

१२१ ओ३म् ता नो वाजवतीरिष आशून् पिपृतमर्वतः। एन्द्रमग्निं च वोढवे॥

१२२ ओ३म् तीव्राः सोमास आ गहि सुतासो मादयिष्णवः । पिबा दधृग्यथोचिषे ॥

९२३ ओ३म् तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः । न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् ॥

९२४ ओ३म् तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः। न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् ॥

९२५ ओ३म् तुभ्यं सोमाः सुता इमे स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो । स्तोतृभ्य इन्द्रमा वह ॥

९२६ ओ३म् तुभ्यायमद्रिभिः सुतो गोभिः श्रीतो मदाय कम् । प्र सोम इन्द्र हूयते ॥

९२७ ओ३म् तुभ्येदिन्द्र मरुत्वते सुताः सोमासो अद्रिवः । हृदा हूयन्त उक्थिनः ॥

९२८ ओ३म् तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये३ सोमं चोदामि पीतये। एष रारन्तु ते हृदि ॥

९२९ ओ३म् तुरीयं नाम यज्ञियं यदा करस्तदुश्मसि । आदित्पतिर्न ओहसे ॥

९३० ओ३म् तुविग्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो मदे । इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते ॥

९३१ ओ३म् तुविग्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो सदे। इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते ॥

९३२ ओ३म् तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते । आ पप्राथ महित्वना ॥

९३३ ओ३म् तुभ्य२ँ सुतासः सोमाः स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो। स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय॥

९३४ ओ३म् तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते। आ पप्राथ महित्वना॥

९३५ ओ३म् तेन स्तोतृभ्य आ भर नृभ्यो नारिभ्यो अत्तवे । सद्यो जात ऋभुष्ठिर ॥

९३६ ओ३म् त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आ च्यावयस्यूतये॥

९३७ ओ३म् त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आ च्यावयस्यूतये॥

९३८ ओ३म् त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत । तमिद्वर्धन्तु नो गिरः ॥

९३९ ओ३म् त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत। तमिद्वर्धन्तु नो गिरः ॥

९४० ओ३म् त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत। तमिद्वर्धन्तु नो गिरः॥

९४१ ओ३म् त्वं न इन्द्रा भरँ ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे। आ वीरं पृतनाषहम् ॥

९४२ ओ३म् त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन्। त्वया प्रति ब्रुवे युजा ॥

९४३ ओ३म् त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः। इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुक्रतो ॥

९४४ ओ३म् त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः। स्तोतॄणामुत भद्रकृत् ॥

९४५ ओ३म् त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो। त्वꣳहिरण्ययुर्वसो॥

९४६ ओ३म् त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः। त्वं वृषन्वृषेदसि ॥

९४७ ओ३म् त्वमिन्द्र सजोषसमर्कं बिभर्षि बाह्वोः। वज्रं शिशान ओजसा ॥

९४८ ओ३म् त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा। स विश्वा भुव आभवः ॥

९४९ ओ३म् त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्यꣳन्तरिक्षमतिरः। उद्द्यामस्तभ्ना ओजसा ॥

९५० ओ३म् त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम्। त्वं राजा जनानाम् ॥

९५१ ओ३म् त्वयेदिन्द्र युजा वयं प्रति ब्रुवीमहि स्पृधः । त्वमस्माकं तव स्मसि ॥

९५२ ओ३म् त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे। कुशिकासो अवस्यवः ॥

९५३ ओ३म् त्वां स्तोमा अवीवृधन्त्वामुक्था शतक्रतो। त्वां वर्धन्तु नो गिरः ॥

९५४ ओ३म् त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः। स्मसि स्थातर्हरीणाम्॥

९५५ ओ३म् त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः। त्वꣳसन्वृषन्वृषेदसि॥

९५६ ओ३म् त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम्। त्व राजा जनानाम्॥

९५७ ओ३म् त्वꣳ हि वृत्रहन्नेषां पाता सोमानामसि। उप नो हरिभिः सुतम्॥

९५८ ओ३म् त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च। परुष्णीषु रुशत्पयः॥

९५९ ओ३म् तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद्गवे न शाकिने॥

९६० ओ३म् तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद्गवे न शाकिने॥

९६१ ओ३म् तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत्॥

९६२ ओ३म् तमीडिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत्। कृष्णा कृणोति जिह्वया॥

९६३ ओ३म् तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः। समानमु प्र शꣳसिषम्॥

९६४ ओ३म् दधिष्वा जठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम्। तव द्युक्षास इन्दवः ॥

९६५ ओ३म् दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येना वसु प्रयच्छसि। यजमानाय सुन्वते ॥

९६६ ओ३म् देवयन्तो यथा मतिमच्छा विदद्वसुं गिरः। महामनूषत श्रुतम् ॥

९६७ ओ३म् देवानामिदवो महत्तदा वृणीमहे वयम्। वृष्णामस्मभ्यमूतये॥

९६८ ओ३म् दोषो आगाद् बृहद्गाय द्युमद्गामन्नाथर्वण। स्तुहि देवꣳ सवितारम्॥

९६९ ओ३म् द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृत्सुतूर्षु श्रवःसु च। इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु ॥

९७० ओ३म् द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः । उप नो हरिभिः सुतम् ॥

९७१ ओ३म् द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः। उप नो हरिभिः सुतम्॥

९७२ ओ३म् धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम् । इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः ॥

९७३ ओ३म् धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः ॥

९७४ ओ३म् धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः॥

९७५ ओ३म् धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते । गामश्वं पिप्युषी दुहे ॥

९७६ ओ३म् धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते। गामश्वं पिप्युषी दुहे ॥

९७७ ओ३म् धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते। गामश्वं पिप्युषी दुहे॥

९७८ ओ३म् न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः । यत्सीमुप श्रवद्गिरः ॥

९७९ ओ३म् न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः। यत्सीमुप श्रवद्गिरः ॥

९८० ओ३म् न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ। तवेदु स्तोमं चिकेत ॥

९८१ ओ३म् न ते वर्तास्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः। यद्दित्ससि स्तुतो मघम् ॥

९८२ ओ३म् न त्वा वरन्ते अन्यथा यद्दित्ससि स्तुतो मघम् । स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः ॥

९८३ ओ३म् न द्याव इन्द्रमोजसा नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् । न विव्यचन्त भूमयः ॥

९८४ ओ३म् न नूनं ब्रह्मणामृणं प्राशूनामस्ति सुन्वताम् । न सोमो अप्रता पपे ॥

९८५ ओ३म् नकीं वृधीक इन्द्र ते न सुषा न सुदा उत । नान्यस्त्वच्छूर वाघतः ॥

९८६ ओ३म् नकीमिन्द्रो निकर्तवे न शक्रः परिशक्तवे । विश्वं शृणोति पश्यति ॥

९८७ ओ३म् नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोऽजसा। अहिं च वृत्रहावधीत् ॥

९८८ ओ३म् नहि षस्तव नो मम शास्त्रे अन्यस्य रण्यति । यो अस्मान्वीर आनयत् ॥

९८९ ओ३म् नहि ष्मा ते शतं चन राधो वरन्त आमुरः । न च्यौत्नानि करिष्यतः ॥

९९० ओ३म् नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे। इन्द्राभिमातिषाह्ये ॥

९९१ ओ३म् नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहै। त्वोतासो न्यर्वता ॥

९९२ ओ३म् निरविध्यद्गिरिभ्य आ धारयत्पक्वमोदनम् । इन्द्रो बुन्दं स्वाततम् ॥

९९३ ओ३म् नीव शीर्षाणि मृढ्वं मध्य आपस्य तिष्ठति। शृङ्गेभिर्दशभिर्दिशन्॥

९९४ ओ३म् नृभिर्धौतः सुतो अश्नैरव्या वारैः परिपूतः। अश्वो न निक्तो नदीषु॥

९९५ ओ३म् न किष्ट्वद्रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे। न किष्ट्वानु मज्मना न किः स्वश्व आनशे ॥

९९५ ओ३म् न कि इन्द्र त्वदुत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन्। न क्येवं यथा त्वम्॥

९९६ ओ३म् न कि देवा इनीमसि न क्या योपयामसि। मन्त्रश्रुत्यं चरामसि॥

९९७ ओ३म् न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ। तवेदु स्तोमैश्चिकेत॥

९९८ ओ३म् न हि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम्। भीमं न गां वारयन्ते॥

९९९ ओ३म् न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः। यत्सीमुपश्रवद्गिरः॥

१००० ओ३म् नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा। अहिं च वृत्रहावधीत्॥

१००१ ओ३म् पत्नीवन्तः सुता इम उशन्तो यन्ति वीतये । अपां जग्मिर्निचुम्पुणः ॥

१००२ ओ३म् पदा पणीँरराधसो नि बाधस्व महाँ असि । नहि त्वा कश्चन प्रति ॥

१००३ ओ३म् पदा पणीँरराधसो नि बाधस्व महाँ असि। नहि त्वा कश्चन प्रति ॥

१००४ ओ३म् पन्य इदुप गायत पन्यं उक्थानि शंसत । ब्रह्मा कृणोत पन्य इत् ॥

१००५ ओ३म् परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छा विपश्चितम् । यस्ते सखिभ्य आ वरम् ॥

१००६ ओ३म् परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छा विपश्चितम्। यस्ते सखिभ्य आ वरम् ॥

१००७ ओ३म् पाता वृत्रहा सुतमा घा गमन्नारे अस्मत्। नि यमते शतमूतिः॥

१००८ ओ३म् पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसु॥

१००९ ओ३म् पिबेदिन्द्र मरुत्सखा सुतं सोमं दिविष्टिषु । वज्रं शिशान ओजसा ॥

१०१० ओ३म् पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि । इन्द्रस्य चर्षणीधृतः ॥

१०११ ओ३म् पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि। इन्द्रस्य चर्षणीधृतः ॥

१०१२ ओ३म् पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम्। इन्द्रं सोमे सचा सुते ॥

१०१३ ओ३म् पुरोळाशं च नो घसो जोषयासे गिरश्च नः । वधूयुरिव योषणाम् ॥

१०१४ ओ३म् पुरोळाशं च नो घसो जोषयासे गिरश्च नः । वधूयुरिव योषणाम् ॥

१०१५ ओ३म् पुरोळाशं सनश्रुत प्रातःसावे जुषस्व नः । इन्द्र क्रतुर्हि ते बृहन् ॥

१०१६ ओ३म् पुरुहूतं पुरुष्टुतं गाथान्याऽ२ सनश्रुतम्। इन्द्र इति ब्रवीतन॥

१०१७ ओ३म् पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम्। इन्द्र२ सोमे सचा सुते॥

१०१८ ओ३म् प्र तमिन्द्र नशीमहि रयिं गोमन्तमश्विनम् । प्र ब्रह्म पूर्वचित्तये ॥

१०१९ ओ३म् प्र ते बभ्रू विचक्षण शंसामि गोषणो नपात् । माभ्यां गा अनु शिश्रथः ॥

१०२० ओ३म् प्र ते वोचाम वीर्या३ या मन्दसान आरुजः । पुरो दासीरभीत्य ॥

१०२१ ओ३म् प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः । नरं नृषाहं मंहिष्ठम् ॥

१०२२ ओ३म् प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः। नरं नृषाहं मंहिष्ठम् ॥

१०२३ ओ३म् प्र स्तोषदुप गासिषच्छ्रवत्साम गीयमानम् । अभि राधसा जुगुरत् ॥

१०२४ ओ३म् प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः । विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥

१०२५ ओ३म् प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः। विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥

१०२६ ओ३म् प्रणेतारं वस्यो अच्छा कर्तारं ज्योतिः समत्सु । सासह्वांसं युधामित्रान् ॥

१०२७ ओ३म् प्रणेतारं वस्यो अच्छा कर्तारं ज्योतिः समत्सु। सासह्वांसं युधामित्रान् ॥

१०२८ ओ३म् प्रति त्वा शवसी वदद्गिरावप्सो न योधिषत् । यस्ते शत्रुत्वमाचके ॥

१०२९ ओ३म् प्रति श्रुताय वो धृषत्तूर्णाशं न गिरेरधि । हुवे सुशिप्रमूतये ॥

१ २ ३ ३उ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१०३० ओ३म् प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः। प्र बाहू शूर राधसा॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१०३१ ओ३म् प्र व इन्द्राय मादन२ हर्यश्वाय गायत। सखायः सोमपाव्ने॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१०३२ ओ३म् प्र व इन्द्राय मादन२ हर्यश्वाय गायत। सखायः सोमपाव्ने॥

२ ३ १ २ ३ १ ३र ३ १ २ ३ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१०३३ ओ३म् प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्र२ स्तोता नव्यं गीर्भिः। नरं नृषाहं म२हिष्ठम्॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ ३र ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१०३४ ओ३म् प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः। विप्रा ऋतस्य वाहसा॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१०३५ ओ३म् पन्यंपन्यमित्सोतार आ धावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१०३६ ओ३म् पन्यपन्यमित्सोतार आ धावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१०३७ ओ३म् परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्। मदेषु सर्वधा असि॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३उ ३ २ ३ १ ३र
१०३८ ओ३म् पदा पणीनराधसो नि बाधस्व महा२ असि। न हि त्वा कश्च न प्रति॥

१०३९ ओ३म् बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये । साधु कृण्वन्तमवसे ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१०४० ओ३म् बृबदुक्थ२हवामहे सृप्रकरस्नमूतये। साधः कृण्वन्तमवसे॥

३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ ३र २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१०४१ ओ३म् बृहन्निदिध्म एषां भूरि शस्तं पृथुः स्वरुः। येषामिन्द्रो युवा सखा॥

१०४२ ओ३म् बोधन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः। शृणोतु शक्र आशिषम्॥

१०४३ ओ३म् ब्रह्माणंस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः । सुतावन्तो हवामहे ॥

१०४४ ओ३म् ब्रह्माणंस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः। सुतावन्तो हवामहे ॥

१०४५ ओ३म् ब्रह्माणंस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः। सुतावन्तो हवामहे ॥

१०४६ ओ३म् ब्रह्माणंस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः। सुतावन्तो हवामहे ॥

१०४७ ओ३म् ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोमममृतूँरनु । तवेद्धि सख्यमस्तृतम् ॥

१०४८ ओ३म् ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोमममृतू२ रनु। तवेद२सख्यमस्तृतम्॥

१०४९ ओ३म् ब्रह्माणस्त्वा युजा वयं२ सोमपामिन्द्र सोमिनः। सुतावन्तो हवामहे॥

१०५० ओ३म् भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः । वसु स्पार्हं तदा भर ॥

१०५१ ओ३म् भिन्धि विश्वा अप द्विषः बाधो जही मृधः। वसु स्पार्हं तदा भर ॥

१०५२ ओ३म् भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः। वसु स्पार्हं तदा भर॥

१०५३ ओ३म् भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः। वसु स्पार्हं तदा भर॥

१०५४ ओ३म् भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्ज२ शतक्रतो। यदिन्द्र मृडयासि नः॥

१०५५ ओ३म् मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम् । इन्द्रं वत्सं न मातरः ॥

१०५६ ओ३म् मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम्। इन्द्रं वत्सं न मातरः ॥

१०५७ ओ३म् मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभि स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे। सचैषु सवनेष्वा ॥

१०५८ ओ३म् मरुत्वन्तमृजीषिणमोजस्वन्तं विरप्शिनम् । इन्द्रं गीर्भिर्हवामहे ॥

१०५९ ओ३म् महाँ इन्द्रः परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे। द्यौर्न प्रथिना शवः ॥

१०६० ओ३म् महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव । स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ॥

१०६१ ओ३म् महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ॥

१०६२ ओ३म् महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः । नास्य क्षीयन्त ऊतयः ॥

१०६३ ओ३म् मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन् । माकीं ब्रह्मद्विषो वनः ॥

१०६४ ओ३म् मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्। माकीं ब्रह्मद्विषो वनः ॥

१०६५ ओ३म् मा नो निदे च वक्तवेऽर्यो रन्धीरराव्णे। त्वे अपि क्रतुर्मम ॥

१०६६ ओ३म् मा नो मर्ता अभि द्रुहन्तनूनामिन्द्र गिर्वणः । ईशानो यवया वधम् ॥

१०६७ ओ३म् मा नो मर्ता अभि द्रुहन्तनूनामिन्द्र गिर्वणः। ईशानो यवया वधम् ॥

१०६८ ओ३म् मा सख्युः शूनमा विदे मा पुत्रस्य प्रभूवसो । आवृत्वद्भूतु ते मनः ॥

१०६९ ओ३म् मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः । अव दस्यूँरधूनुथाः ॥

१०७० ओ३म् मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः। अव दस्यूँरधूनुथाः ॥

१०७१ ओ३म् मारे अस्मद्वि मुमुचो हरिप्रियार्वाङ्याहि। इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह ॥

१०७२ ओ३म् मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्। मा कीं ब्रह्मद्विषं वनः॥

१०७३ ओ३म् मा न इन्द्र पीयत्नवे मा शर्धते परा दाः। शिक्षा शचीवः शचीभिः॥

१०७४ ओ३म् मा न इन्द्राभ्याऽ३दिशः सूरो अक्तुष्वा यमत् । त्वा युजा वनेम तत्॥

१०७५ ओ३म् मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते। मत्स्वा सुतस्य गोमतः ॥

१०७६ ओ३म् महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य॥

१०७७ ओ३म् महाँ इन्द्रः पुरश्च नो महित्वमस्तु वज्रिणे। द्यौर्न प्रथिना शवः॥

१०७८ ओ३म् महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे॥

१०७९ ओ३म् य आनयत्परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम् । इन्द्रः स नो युवा सखा ॥

१०८० ओ३म् य इमे रोदसी मही समीची समजग्रभीत् । तमोभिरिन्द्र तं गुहः ॥

१०८१ ओ३म् य उद्गः फलिगं भिनन्न्य१क्सिन्धूँरवासृजत् । यो गोषु पक्वं धारयत् ॥

१०८२ ओ३म् य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति। इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥

१०८३ ओ३म् यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते । उर्वीरापो न काकुदः ॥

१०८४ ओ३म् यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते। उर्वीरापो न काकुदः ॥

१०८५ ओ३म् यः संस्थे चिच्छतक्रतुरादीं कृणोति वृत्रहा । जरितृभ्यः पुरूवसुः ॥

१०८६ ओ३म् यः सृबिन्दमनर्शनिं पिप्रुं दासमहीशुवम् । वधीदुग्रो रिणन्नपः ॥

१०८७ ओ३म् यच्चिद्धि ते अपि व्यथिर्जगन्वांसो अमन्महि । गोदा इदिन्द्र बोधि नः ॥

१०८८ ओ३म् यच्छक्रा वाचमारुहन्नन्तरिक्षं सिषासथः। सं देवा अमदन्वृषा ॥

१०८९ ओ३म् यच्छुश्रूया इमं हवं दुर्मर्षं चक्रिया उत । भवेरापिर्नो अन्तमः ॥

१०९० ओ३म् यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि ॥

१०९१ ओ३म् यदङ्ग तविषीयस इन्द्र प्रराजसि क्षितीः । महाँ अपार ओजसा ॥

१०९२ ओ३म् यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य। सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥

१०९३ ओ३म् यदन्तरा परावतमर्वावतं च हूयसे । इन्द्रेह तत आ गहि ॥

१०९४ ओ३म् यदन्तरा परावतमर्वावतं च हूयसे। इन्द्रेह तत आ गहि ॥

१०९५ ओ३म् यदस्य मन्युरध्वनीद्वि वृत्रं पर्वशो रुजन् । अपः समुद्रमैरयत् ॥

१०९६ ओ३म् यदि मे रारणः सुत उक्थे वा दधसे चनः । आरादुप स्वधा गहि ॥

१०९७ ओ३म् यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्। स्तोता मे गोषखा स्यात् ॥

१०९८ ओ३म् यद्दधिषे मनस्यसि मन्दानः प्रेदियक्षसि । मा तत्करिन्द्र मृळय ॥

१०९९ ओ३म् यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे । उतो तत्सत्यमित्तव ॥

११०० ओ३म् यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे। उतो तत्सत्यमित्तव ॥

११०१ ओ३म् यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर ॥

११०२ ओ३म् यद्वीळाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम् । वसु स्पार्हं तदा भर ॥

११०३ ओ३म् यस्त इन्द्र महीरपः स्तभूयमान आशयत् । नि तं पद्यासु शिश्नथः ॥

११०४ ओ३म् यस्ते चित्रश्रवस्तमो य इन्द्र वृत्रहन्तमः । य ओजोदातमो मदः ॥

११०५ ओ३म् यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः । तेन नूनं मदे मदेः ॥

११०६ ओ३म् यस्ते रेवाँ अदाशुरिः प्रममर्ष मघत्तये । तस्य नो वेद आ भर ॥

११०७ ओ३म् यस्ते शृङ्गवृषो नपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः। न्यऽस्मिन्दध्र आ मनः ॥

११०८ ओ३म् यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति विश्वानि च श्रवस्याऽ। अपामवो न समुद्रे ॥

११०९ ओ३म् यस्मिन्विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः । इन्द्रं सुते हवामहे ॥

१११० ओ३म् यस्मि॒न्विश्वा॒ अधि॒ श्रियो॒ रण॑न्ति स॒प्त सं॒सद॑ः। इन्द्रं॑ सु॒ते ह॑वामहे ॥

११११ ओ३म् यस्य॑ ते महि॒ना म॒हः परि॑ ज्मा॒यन्त॑मी॒यतु॑ः । हस्ता॒ वज्रं॑ हिर॒ण्यय॑म् ॥

१११२ ओ३म् यस्य॑ ते वि॒श्वमा॑नुषो॒ भूरे॑र्द॒त्तस्य॒ वेद॑ति । वसु॑ स्पा॒र्हं तदा भ॑र ॥

१११३ ओ३म् यस्य॑ ते वि॒श्वमा॑नुषो॒ भूरे॑र्द॒त्तस्य॒ वेद॑ति। वसु॑ स्पा॒र्हं तदा भ॑र ॥

१११४ ओ३म् यस्य॒ विश्वा॑नि॒ हस्त॑योरू॒चुर्वसू॑नि॒ नि द्वि॒ता । वी॒रस्य॑ पृतना॒षह॑ः ॥

१११५ ओ३म् यस्य॑ सं॒स्थे न वृ॒ण्वते॒ हरी॑ स॒मत्सु॒ शत्र॑वः । तस्मा॒ इन्द्रा॑य गायत ॥

१११६ ओ३म् यस्य॑ सं॒स्थे न वृ॒ण्वते॒ हरी॑ स॒मत्सु॒ शत्र॑वः। तस्मा॒ इन्द्रा॑य गायत ॥

१११७ ओ३म् यस्ये॒दमा रजो॒ युज॑स्तु॒जे जना॒ वनं॒ स्व॑ःऽ। इन्द्र॑स्य॒ रन्त्यं॑ बृ॒हत् ॥

१११८ ओ३म् या त॑ ऊ॒तिर॑मित्रहन्म॒क्षूज॑वस्त॒मास॑ति । तया॑ नो हिनु॒ही रथ॑म् ॥

१११९ ओ३म् या वृ॑त्र॒हा प॑राव॒ति सना॒ नवा॑ च चुच्यु॒वे । ता सं॒सत्सु॒ प्र वो॑चत ॥

११२० ओ३म् यु॒ञ्जन्ति॑ ब्र॒ध्नम॑रु॒षं चर॑न्तं॒ परि॑ त॒स्थुष॑ः । रोच॑न्ते रोच॒ना दि॒वि ॥

११२१ ओ३म् यु॒ञ्जन्ति॑ ब्र॒ध्नम॑रु॒षं चर॑न्तं॒ परि॑ त॒स्थुष॑ः। रोच॑न्ते रोच॒ना दि॒वि ॥

११२२ ओ३म् यु॒ञ्जन्ति॑ ब्र॒ध्नम॑रु॒षं चर॑न्तं॒ परि॑ त॒स्थुष॑ः। रोच॑न्ते रोच॒ना दि॒वि ॥

११२३ ओ३म् यु॒ञ्जन्ति॑ ब्र॒ध्नम॑रु॒षं चर॑न्तं॒ परि॑ त॒स्थुष॑ः। रोच॑न्ते रोच॒ना दि॒वि ॥

११२४ ओ३म् यु॒ञ्जन्त्य॑स्य॒ काम्या॒ हरी॒ विप॑क्षसा॒ रथे॑। शोणा॑ धृ॒ष्णू नृ॒वाह॑सा ॥

११२५ ओ३म् यु॒ञ्जन्त्य॑स्य॒ काम्या॒ हरी॒ विप॑क्षसा॒ रथे॑। शोणा॑ धृ॒ष्णू नृ॒वाह॑सा ॥

११२६ ओ३म् यु॒ञ्जन्त्य॑स्य॒ काम्या॒ हरी॒ विप॑क्षसा॒ रथे॑। शोणा॑ धृ॒ष्णू नृ॒वाह॑सा ॥

११२७ ओ३म् युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि॥

११२८ ओ३म् युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा॥

११२९ ओ३म् युध्मꣳसन्तमनर्वाणꣳसोमपामनपच्युतम्। नरमवार्यक्रतुम्॥

११३० ओ३म् ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुरृषयो ये च तुष्टुवुः । ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः ॥

११३१ ओ३म् ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः। ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः ॥

११३२ ओ३म् ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । सर्वाँस्ताँ इन्द्र गच्छसि ॥

११३३ ओ३म् ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे। सर्वांस्ताँ इन्द्र गच्छसि ॥

११३४ ओ३म् ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः। ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः॥

११३५ ओ३म् ये तेपन्था अधो दिवो येभिर्व्यश्वमैरयः। उत श्रोषन्तु नो भुवः॥

११३६ ओ३म् यो अप्सु चन्द्रमा इव सोमश्चमूषु ददृशे । पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥

११३७ ओ३म् यो रायो३ऽवनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा। तस्मा इन्द्राय गायत ॥

११३८ ओ३म् योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ॥

११३९ ओ३म् योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये ॥

११४० ओ३म् योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये॥

११४१ ओ३म् योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये॥

११४२ ओ३म् य आनयत्परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम्। इन्द्रः स नो युवा सखा॥

११४३ ओ३म् य इन्द्र चमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः। पिबेदस्य त्वमीशिषे॥

११४४ ओ३म् यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्। स्तोता मे गोसखा स्यात्॥

११४५ ओ३म् यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्। स्तोता मे गोसखा स्यात्॥

११४६ ओ३म् यस्ते नूनꣳ शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः। तेन नूनं मदे मदे॥

११४७ ओ३म् यस्ते शृङ्गवृषो णपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः। न्यस्मिं दध्र आ मनः॥

११४८ ओ३म् यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः। हस्ता वज्रꣳ हिरण्ययम्॥

११४९ ओ३म् यस्य ते विश्वमानुषग्भूरेर्दत्तस्य वेदति। वसु स्पार्हं तदा भर॥

११५० ओ३म् यꣳ रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा। न किः स दभ्यते जनः॥

११५१ ओ३म् य इद्ध आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः। द्युम्नाय सुतरा अपः॥

११५२ ओ३म् यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर॥

११५३ ओ३म् यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर॥

११५४ ओ३म् यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य। सर्वं तदिन्द्र ते वशे॥

११५५ ओ३म् यस्ते अनु स्वधामसत्सुते नि यच्छ तन्वम्। स त्वा ममत्तु सोम्य॥

११५६ ओ३म् यस्मिन्विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त सꣳसदः। इन्द्रꣳ सुते हवामहे॥

११५७ ओ३म् यस्येदमा रजोयुजस्तुजे जने वनꣳ स्वः। इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत्॥

११५८ ओ३म् यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि॥

११५९ ओ३म् यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि॥

११६० ओ३म् य एक इद्विदयते वसु मर्त्ताय दाशुषे। ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग॥

११६१ ओ३म् यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः। तत्र पूषाभुवत्सचा॥

११६२ ओ३म् रारन्धि सवनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन्। उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः ॥

११६३ ओ३म् रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥

११६४ ओ३म् रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः। क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥

११६५ ओ३म् रेवाँइद्रेवत स्तोता स्यात्त्वावतो मघोनः। प्रेदु हरिवः सुतस्य॥

११६६ ओ३म् रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः। क्षुमन्तो याभिर्मदेम॥

११६७ ओ३म् रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः। क्षुमन्तो याभिर्मदेम॥

११६८ ओ३म् वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम् । सासह्याम पृतन्यतः ॥

११६९ ओ३म् वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम्। सासह्याम पृतन्यतः ॥

११७० ओ३म् वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो जरामहे। उत त्वमस्मयुर्वसो ॥

११७१ ओ३म् वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र णोनुमो वृषन्। विद्धि त्व१स्य नो वसो ॥

११७२ ओ३म् वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥

११७३ ओ३म् वयमु त्वा दिवा सुते वयं नक्तं हवामहे । अस्माकं काममा पृण ॥

११७४ ओ३म् वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम् । होम गन्तारमूतये ॥

११७५ ओ३म् वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम्। होम गन्तारमूतये ॥

११७६ ओ३म् वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतस्पृशम् । इन्द्रात्परि तन्वं ममे ॥

११७७ ओ३म् वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतस्पृशम्। इन्द्रात्परि तन्वं५ ममे ॥

११७८ ओ३म् वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो । इन्द्र वृत्राय हन्तवे ॥

११७९ ओ३म् वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो। इन्द्र वृत्राय हन्तवे ॥

११८० ओ३म् वार्त्रहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च। इन्द्र त्वा वर्तयामसि ॥

११८१ ओ३म् वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः । ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे ॥

११८२ ओ३म् वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः। ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे ॥

११८३ ओ३म् वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतावृधम्। इन्द्रात्परितन्वं ममे॥

११८४ ओ३म् वात आ वातु भेषजꣳ शम्भु मयोभु नो हृदे। प्र न आयूꣳषि तारिषत्॥

११८५ ओ३म् वि चिद्वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा । शिरो बिभेद वृष्णिना ॥

११८६ ओ३म् वि चिद्वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा। शिरो बिभेद वृष्णिना ॥

११८७ ओ३म् वि यदहेरध त्विषो विश्वे देवासो अक्रमुः । विदन्मृगस्य ताँ अमः ॥

११८८ ओ३म् वि षु विश्वा अभियुजो वज्रिन्विष्वग्यथा वृह । भवा नः सुश्रवस्तमः ॥

११८९ ओ३म् विद्मा हि त्वा धनंजयं वाजेषु दधृषं कवे । अधा ते सुम्नमीमहे ॥

११९० ओ३म् विद्मा हि त्वा धनंजयं वाजेषु दधृषं कवे। अधा ते सुम्नमीमहे ॥

११९१ ओ३म् विद्मा हि त्वा धनंजयमिन्द्र दृळ्हा चिदारुजम् । आदारिणं यथा गयम् ॥

११९२ ओ३म् विद्मा हि यस्ते अद्रिवस्त्वादत्तः सत्य सोमपाः । विश्वासु दस्म कृष्टिषु ॥

११९३ ओ३म् विव्यक्थ महिना वृषन्भक्षं सोमस्य जागृवे । य इन्द्र जठरेषु ते ॥

११९४ ओ३म् विश्वमित्सवनं सुतमिन्द्रो मदाय गच्छति । वृत्रहा सोमपीतये ॥

११९५ ओ३म् वि चिद्वृत्रस्य दोधतः शिरो बिभेद वृष्णिना। वज्रेण शतपर्वणा॥

११९६ ओ३म् विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम्। तुविमात्रमवोभिः॥

११९७ ओ३म् विव्यक्थ महिना वृषन्भक्षꣳ सोमस्य जागृवे। य इन्द्र जठरेषु ते॥

११९८ ओ३म् वीडु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः। अविन्द उस्रिया अनु ॥

११९९ ओ३म् वीडु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः। अविन्द उस्रिया अनु ॥

१२०० ओ३म् वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा। ईशानो अप्रतिष्कुतः ॥

१२०१ ओ३म् वृषा यूथेव वꣳसगः कृष्टीरियर्त्योजसा। ईशानो अप्रतिष्कुतः॥

१२०२ ओ३म् व्य१न्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना। इन्द्रो यदभिनद्वलम् ॥

१२०३ ओ३म् व्य१न्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना। इन्द्रो यदभिनद्वलम् ॥

१२०४ ओ३म् व्यऽ.न्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना। इन्द्रो यदभिनद्वलम्॥

१२०५ ओ३म् वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः। त्वं नो जिन्व सोमपाः॥

१२०६ ओ३म् वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र नोनुमो वृषन्। विद्धी त्वा३ऽऽऽ स्य नो वसो॥

१२०७ ओ३म् वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते॥

१२०८ ओ३म् वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते॥

१२०९ ओ३म् शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः । चकृमा सत्यराधसे ॥

१२१० ओ३म् शक्रो वाचमधृष्टायोरुवाचो अधृष्णुहि। मंहिष्ठ आ मदर्दिवि ॥

१२११ ओ३म् शक्रो वाचमधृष्णुहि धामधर्मन्वि राजति। विमदन्बर्हिरासरन् ॥

१२१२ ओ३म् शतब्रध्न इषुस्तव सहस्रपर्ण एक इत् । यमिन्द्र चकृषे युजम् ॥

१२१३ ओ३म् शचिगो शचिपूजनायं रणाय ते सुतः। आखण्डल प्र हूयसे ॥

१२१४ ओ३म् शचिगो शचिपूजनाय२रणाय ते सुतः। आखण्डल प्र हूयसे॥

१२१५ ओ३म् शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे। यदहं गोपतिः स्याम् ॥

१२१६ ओ३म् शिक्षा ण इन्द्र राय आ पुरु विद्वा२ऋचीषम। अवा नः पार्ये धने॥

१२१७ ओ३म् शिक्षेयमस्मै दित्सेयँ२ शचीपते मनीषिणे। यदहं गोपतिः स्याम्॥

१२१८ ओ३म् शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम् । इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥

१२१९ ओ३म् शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम्। इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥

१२२० ओ३म् शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम्। इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥

१२२१ ओ३म् श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम्। आशिषे राधसे महे॥

१२२२ ओ३म् श२सेदुक्थ२ सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः। चकृमा सत्यराधसे॥

१२२३ ओ३म् स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरंध्याम्। गमद्वाजेभिरा स नः ॥

१२२४ ओ३म् स घेदुतासि वृत्रहन्त्समान इन्द्र गोपतिः । यस्ता विश्वानि चिच्युषे ॥

१२२५ ओ३म् स त्वं न इन्द्र वाजेभिर्दशस्या च गातुया च । अच्छा च नः सुम्नं नेषि ॥

१२२६ ओ३म् स त्वं न इन्द्र वाजेभिर्दशस्या च गातुया च। अछा च नः सुम्नं नेषि ॥

१२२७ ओ३म् स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद्गोमद्यवमत्। उरुधारेव दोहते ॥

१२२८ ओ३म् स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः । इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ॥

१२२९ ओ३म् स नः शक्रश्चिदा शकद्दानवाँ अन्तराभरः । इन्द्रो विश्वाभिरूतिभिः ॥

१२३० ओ३म् स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः। इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ॥

१२३१ ओ३म् स नो ददातु तां रयिमुरुं पिशङ्गसंदृशम्। इन्द्रः पतिस्तुविष्टमो जनेष्वा ॥

१२३२ ओ३म् स नो नियुद्भिरा पृण कामं वाजेभिरश्विभिः । गोमद्भिर्गोपते धृषत् ॥

१२३३ ओ३म् स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि । अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ॥

१२३४ ओ३म् स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि। अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ॥

१२३५ ओ३म् स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा ऽ महे। न स्तोतारं निदे करः ॥

१२३६ ओ३म् स हि विश्वानि पार्थिवाँ एको वसूनि पत्यते । गिर्वणस्तमो अध्रिगुः ॥

१२३७ ओ३म् सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो बृहत्। विश्वायुर्धेह्यक्षितम् ॥

१२३८ ओ३म् सं चोदय चित्रमर्वाग्राध इन्द्र वरेण्यम्। असदित्ते विभु प्रभु ॥

१२३९ ओ३म् सत्तो होता न ऋत्वियस्तिस्तिरे बर्हिरानुषक् । अयुज्रन्प्रातरद्रयः ॥

१२४० ओ३म् सत्तो होता न ऋत्वियस्तिस्तिरे बर्हिरानुषक्। अयुज्रन्प्रातरद्रयः ॥

१२४१ ओ३म् सत्रा ते अनु कृष्टयो विश्वा चक्रेव वावृतुः । सत्रा महाँ असि श्रुतः ॥

१२४२ ओ३म् सप्ती चिद्घा मदच्युता मिथुना वहतो रथम् । एवेद्धूर्वृष्ण उत्तरा ॥

१२४३ ओ३म् समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । समुद्रायेव सिन्धवः ॥

१२४४ ओ३म् समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः ॥

१२४५ ओ३म् समित्तान्वृत्रहाखिदत्खे अराँ इव खेदया । प्रवृद्धो दस्युहाभवत् ॥

१२४६ ओ३म् समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ । विप्रासो वा धियायवः ॥

१२४७ ओ३म् समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ। विप्रासो वा धियायवः ॥

१२४८ ओ३म् सहस्रा ते शता वयं गवामा च्यावयामसि । अस्मत्रा राध एतु ते ॥

१२४९ ओ३म् सुतपाव्ने सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये। सोमासो दध्याशिरः ॥

१२५० ओ३म् सुतेसुते न्योऽ कसे बृहद्बृहत एदरिः। इन्द्राय शूषमर्चति ॥

१२५१ ओ३म् सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे । जुहूमसि द्यविद्यवि ॥

१२५२ ओ३म् सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ॥

१२५३ ओ३म् सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ॥

१२५४ ओ३म् सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा। मित्रास्पान्त्यद्रुहः॥

१२५५ ओ३म् सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि॥

१२५६ ओ३म् सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि॥

१२५७ ओ३म् सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासा२ सुक्षितीनाम्। देवत्रा रथ्योर्हिता॥

१२५८ ओ३म् सोमाना२ स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः॥

१२५९ ओ३म् स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते। विभूतिरस्तु सूनृता ॥

१२६० ओ३म् स्तोत्रमिन्द्राय गायत पुरुनृम्णाय सत्वने । नकिर्यं वृण्वते युधि ॥

१२६१ ओ३म् स्तोत्र२ राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते। विभूतिरस्तु सूनृता॥

१२६२ ओ३म् स्वादुष्टे अस्तु संसुदे मधुमान्तन्वे३ तव। सोमः शमस्तु ते हृदे ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र २ ३ १ २ ३ १
१२६३ ओ३म् स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरन्ध्या। गमद्वाजेभिरा स नः॥

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
१२६४ ओ३म् स नो वृषन्नमुं चरुꣳ सत्रादावन्नपा वृधि। अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ ३३ ३ १ ३र ३ २ २ ३ २ ३ २र ३ १ २
१२६५ ओ३म् सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन्। न देवो वृतः शूर इन्द्रः॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
१२६६ ओ३म् सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामयासिषम्॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१२६७ ओ३म् समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१२६८ ओ३म् समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ २ ३ १ २र
१२६९ ओ३म् सरूप वृषन्ना गहीमौ भद्रौ धुर्यावभि। ताविमा उप सर्पतः॥

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१२७० ओ३म् स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद्गोमद्यवमत्। उरुधारेव दोहते॥

27. इन्द्रउषाश्च 1

१२७१ ओ३म् अपोषा अनसः सरत्सम्पिष्टादह बिभ्युषी । नि यत्सीं शिश्नथद्वृषा ॥

28. इन्द्र ऋभवश्च 1

१२७२ ओ३म् इन्द्रं इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम् । वाजी ददातु वाजिनम् ॥

29. इन्द्रवायू 12

१२७३ ओ३म् आ वां सहस्रं हरय इन्द्रवायू अभि प्रयः । वहन्तु सोमपीतये ॥

१२७४ ओ३म् इन्द्रवायू अयं सुतस्तं देवेभिः सजोषसा । पिबतं दाशुषो गृहे ॥

१२७५ ओ३म् इन्द्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरा गतम् । इन्दवो वामुशन्ति हि ॥

१२७६ ओ३म् इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम्। आदित्यान् मारुतं गणम् ॥

१२७७ ओ३म् इन्द्रवायू मनोजुवा विप्रा हवन्त ऊतये । सहस्राक्षा धियस्पती ॥

१२७८ ओ३म् इन्द्रवायूऽइमे सुताऽउप प्रयोभिरा गतम्। इन्दवो वामुशन्ति हि ॥

१२७९ ओ३म् इह प्रयाणमस्तु वामिन्द्रवायू विमोचनम् । इह वां सोमपीतये ॥

१२८० ओ३म् गावऽउपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया ॥

१२८१ ओ३म् रथेन पृथुपाजसा दाश्वांसमुप गच्छतम् । इन्द्रवायू इहा गतम् ॥

१२८२ ओ३म् वायविन्द्रश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू । तावा यातमुप द्रवत् ॥

१२८३ ओ३म् शतेना नो अभिष्टिभिर्नियुत्वाँ इन्द्रसारथिः । वायो सुतस्य तृम्पतम् ॥

१२८४ ओ३म् शुक्रस्याद्य गवाशिर इन्द्रवायू नियुत्वतः । आ यातं पिबतं नरा ॥

30. इन्द्राग्नी 46

१२८५ ओ३म् अग्न इन्द्रश्च दाशुषे हतो वृत्राण्यप्रति। उभा हि वृत्रहन्तमा ॥

१२८६ ओ३म् आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् । येषामिन्द्रो युवा सखा ॥

१२८७ ओ३म् इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः । अया पातमिमं सुतम् ॥

१२८८ ओ३म् इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम् । साकमेकेन कर्मणा ॥

१२८९ ओ३म् इमां गायत्रवर्तनिं जुषेथां सुष्टुतिं मम । इन्द्राग्नी आ गतं नरा ॥

१२९० ओ३म् इहेन्द्राग्नी उप ह्वये तयोरित्स्तोममुश्मसि । ता सोमं सोमपातमा ॥

१२९१ ओ३म् इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः। अया पातमिम२ सुतम्॥

१२९२ ओ३म् इन्द्राग्नी तविषाणि वां । सधस्थानि प्रयांसि च। युवोरप्तूर्यं हितम् ॥

१२९३ ओ३म् इन्द्राग्नी तविषाणि वा२ं सधस्थानि प्रया२ं सि च। युवोरप्तूर्य२ं हितम्॥

१२९४ ओ३म् इन्द्राग्नी नवतिं पुरो । दासपत्नीरधूनुतम्। साकमेकेन कर्मणा ॥

१२९५ ओ३म् इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम्। साकमेकेन कर्मणा॥

१२९६ ओ३म् इन्द्राग्नी युवामिमेऽभि स्तोमा अनूषत। पिबत२ं शम्भुवा सुतम्॥

१२९७ ओ३म् इन्द्राग्नी रोचना दिवः परि वाजेषु भूषथः। तद्वां चेति प्र वीर्यम्॥

१२९८ ओ३म् इन्द्राग्नी अपसस्परि । उप प्र यन्ति धीतयः। ऋतस्य पथ्या अनु ॥

१२९९ ओ३म् इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः। ऋतस्य पथ्या अनु॥

१३०० ओ३म् इन्द्राग्नी आ गत२ं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता॥

१३०१ ओ३म् इन्द्रे अग्ना नमो बृहत्सुवृक्तिमेरयामहे। धिया धेना अवस्यवः॥

१३०२ ओ३म् इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे। ता सोमस्येह तृम्पताम्॥

१३०३ ओ३म् इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्॥

१३०४ ओ३म् इयं वामस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः। अभ्राद्वृष्टिरिवाजनि॥

१३०५ ओ३म् उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा या मन्दाना चिदा गिरा। आङ्गूषैराविवासतः ॥

१३०६ ओ३म् उग्रा सन्ता हवामह उपेदं सवनं सुतम् । इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ॥

१३०७ ओ३म् उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे। ता नो मृडात ईदृशे॥

१३०८ ओ३म् एवा वांमह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः । इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥

१३०९ ओ३म् जुषेथां यज्ञमिष्टये सुतं सोमं सधस्तुती । इन्द्राग्नी आ गतं नरा ॥

१३१० ओ३म् तमीळिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् । कृष्णा कृणोति जिह्वया ॥

१३११ ओ३म् ता नो वाजवतीरिष आशून्पिपृतमर्वतः । इन्द्रमग्निं च वोळ्हवे ॥

१३१२ ओ३म् ता मित्रस्य प्रशस्तय इन्द्राग्नी ता हवामहे । सोमपा सोमपीतये ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१३१३ ओ३म् ता वां गीर्भिर्विपन्युवः प्रयस्वन्तो हवामहे। मेधसाता सनिष्यवः॥

१ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
१३१४ ओ३म् ता हि शश्वन्त ईडत इत्था विप्रास ऊतये। सबाधो वाजसातये॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २र
१३१५ ओ३म् ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम्। इन्द्राग्नी न मर्धतः॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ १ २ ३ १ २
१३१६ ओ३म् ताभिरा गच्छतं नरोपेदꣳ सवनꣳ सुतम्। इन्द्राग्नी सोमपीतये॥

१३१७ ओ३म् तेन सत्येन जागृतमधि प्रचेतुने पदे । इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ॥

१३१८ ओ३म् तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता । इन्द्राग्नी वाजसातमा ॥

१३१९ ओ३म् तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता । इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१३२० ओ३म् तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता। इन्द्राग्नी वाजसातमा॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २
१३२१ ओ३म् तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्॥

१ २ ३ १ २
१३२२ ओ३म् प्र वामर्चन्त्युक्थिनः । नीथाविदो जरितारः। इन्द्राग्नी इष आ वृणे ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१३२३ ओ३म् प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः। इन्द्राग्नी इष आ वृणे॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ २
१३२४ ओ३म् मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये। मा नो रीरधतं निदे॥

१३२५ ओ३म् यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु । इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥

१३२६ ओ३म् या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा । इन्द्राग्नी ताभिरा गतम् ॥

१३२७ ओ३म् या वाऽ सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा। इन्द्राग्नी ताभिरा गतम्॥

१३२८ ओ३म् यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्॥

१३२९ ओ३म् श्रृणुतं जरितुउहवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः। ईशाना पिप्यतं धियः॥

१३३० ओ३म् हथो वृत्राण्यार्या हथो दासानि सत्पती। हथो विश्वा अप द्विषः ॥

31. इन्द्रापूषणौ 2

१३३१ ओ३म् तां पूष्णः सुमतिं वयं वृक्षस्य प्र वयामिव । इन्द्रस्य चा रभामहे ॥

१३३२ ओ३म् यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः । तत्र पूषाभवत्सचा ॥

32. इन्द्राबृहस्पती 9

१३३३ ओ३म् अनुकामं तर्पयेथामिन्द्रावरुण राय आ । ता वां नेदिष्ठमीमहे ॥

१३३४ ओ३म् अयं वां परि षिच्यते सोम इन्द्राबृहस्पती । चारुर्मदाय पीतये ॥

१३३५ ओ३म् अस्मे इन्द्राबृहस्पती रयिं धत्तं शतग्विनम् । अश्वावन्तं सहस्रिणम् ॥

१३३६ ओ३म् आ न इन्द्राबृहस्पती गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् । सोमपा सोमपीतये ॥

१३३७ ओ३म् इन्द्राबृहस्पती वयं सुते गीर्भिर्हवामहे । अस्य सोमस्य पीतये ॥

१३३८ ओ३म् इन्द्रावरुण वामहं हुवे चित्राय राधसे । अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृतम् ॥

१३३९ ओ३म् इन्द्रावरुणयोरहं सम्राजोरव आ वृणे । ता नो मृळात ईदृशे ॥

१३४० ओ३म् प्र वामश्नोतु सुष्टुतिरिन्द्रावरुण यां हुवे । यामृधाथे सधस्तुतिम् ॥

१३४१ ओ३म् सोमंमिन्द्राबृहस्पती पिबंतं दाशुषो गृहे । मादयेथां तदोकसा ॥

33. इन्द्राश्वौ 1

१३४२ ओ३म् कनीनकेवं विद्रधे नवे द्रुपदे अर्भके । बभ्रू यामेषु शोभेते ॥

34. इन्द्रोमरुत्वान् 3

१३४३ ओ३म् इन्द्रंज्येष्ठा मरुद्गणा देवांसः पूषंरातयः । विश्वे ममं श्रुता हवंम् ॥

१३४४ ओ३म् मरुत्वंन्तं हवामह इन्द्रमा सोमंपीतये । सजूर्गणेनं तृम्पतु ॥

१३४५ ओ३म् हत वृत्रं सुंदानव इन्द्रेंण सहंसा युजा । मा नो दुःशंसं ईशत ॥

35. इळः 2

१३४६ ओ३म् अग्ने सुखतंमे रथे देवाँ ईळित आ वंह । असि होता मनुंर्हितः ॥

१३४७ ओ३म् अग्ने सुखतमे रथे दवा२ ईडित आ वह। असि होता मनुर्हितः॥

36. ईज्यास्तवो यजमानप्रशंसा च 2

१३४८ ओ३म् तस्यं द्युमाँ असद्रथो देवजूंतः स शूंशुवत् । विश्वां वन्वन्नंमित्रियां ॥

१३४९ ओ३म् यो यजांति यजांत इत्सुनवंच्च पचांति च । ब्रह्मेदिन्द्रंस्य चाकनत् ॥

37. उलूखलः 3

१३५० ओ३म् आयजी वांजसातंमा ता ह्यु१च्चा विजर्भृतः । हरी इवान्धांसि बप्संता ॥

१३५१ ओ३म् उच्छिष्टं चम्वोर्भर सोमं पवित्र आ सृंज । नि धेहि गोरधि त्वचि ॥

१३५२ ओ३म् ता नो॑ अ॒द्य व॑नस्पती ऋ॒ष्वावृ॒ष्वेभि॑: सो॒तृभि॑: । इन्द्रा॑य॒ मधु॑मत्सुतम् ॥

38. उषाः 5

१३५३ ओ३म् अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी। सखा भूदश्विनोरुषाः॥

१३५४ ओ३म् आ द्यां त॑नोषि र॒श्मिभि॒रान्तरि॑क्षमु॒रु प्रि॒यम् । उष॑: शु॒क्रेण॑ शो॒चिषा॑ ॥

१३५५ ओ३म् उत सखास्यश्विनोरुत माता गवामसि। उतोषो वस्व ईशिषे॥

१३५६ ओ३म् प्रति॑ भ॒द्रा अ॑दृक्षत॒ गवां॒ सर्गा॒ न र॒श्मय॑: । ओषा अ॑प्रा उ॒रु ज्रय॑: ॥

१३५७ ओ३म् प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः। दिवो अदर्शि दुहिता॥

39. ऋक्षाश्वमेधयोर्दानस्तुतिः 5

१३५८ ओ३म् ऋ॒ज्राविन्द्रो॒त आ द॑दे॒ हरी॒ ऋक्ष॑स्य सू॒नवि॑ । आ॒श्व॒मे॒धस्य॒ रोहि॑ता ॥

40. ऋभवः 4

१३५९ ओ३म् अ॒यं दे॒वाय॒ जन्म॑ने॒ स्तोमो॒ विप्रे॑भिरा॒सया । अका॑रि रत्न॒धात॑मः ॥

१३६० ओ३म् उ॒त त्यं च॑म॒सं नवं॒ त्वष्टु॑र्दे॒वस्य॒ निष्कृ॑तम् । अक॑र्त च॒तुर॒: पुन॑: ॥

१३६१ ओ३म् ते नो॒ रत्ना॑नि धत्तन॒ त्रिरा साप्ता॑नि सु॒न्व॒ते । एक॑मेकं सुश॒स्तिभि॑: ॥

१३६२ ओ३म् य इन्द्रा॑य वचो॒युजा॑ तत॒क्षुर्मन॑सा॒ हरी॑ । शमी॑भिर्य॒ज्ञमा॑शत ॥

41. ओषधयः 2

१३६३ ओ३म् क॒र॒म्भ ओ॑षधे भव॒ पीवो॑ वृ॒क्क उ॑दार॒थिः । वाता॑पे॒ पीव॒ इद्भ॑व ॥

१३६४ ओ३म् यत्ते सोम गवाशिरो यवाशिरो भजामहे । वातापे पीव इद्भव ॥

42. कुष्ठस्तक्मनाशनः 1

१३६५ ओ३म् इमं मे कुष्ठ पूरुषं तमा वह तं निष्कुरु। तमु मे अगदं कृधि ॥

43. कृषीवलाः कवयो वा देवताः 1

१३६६ ओ३म् सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक्। धीरा देवेषु सुम्नया ॥

44. क्षत्रपतिर्देवता 1

१३६७ ओ३म् योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये ॥

45. गौः 3

१३६८ ओ३म् अन्तश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानतः। व्यऽख्यन्महिषः स्वःऽ ॥

१३६९ ओ३म् आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

१३७० ओ३म् त्रिंशद्धामा वि राजति वाक्पतङ्गो अशिश्रियत्। प्रति वस्तोरहर्द्युभिः ॥

46. गौः, सूर्यः 6

१३७१ ओ३म् अन्तश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानतः। व्यख्यन्महिषः स्वऽः ॥

१३७२ ओ३म् अभि त्वा वर्चसा गिरः सिञ्चन्तीराचरण्यवः। अभि वत्सं न धेनवः ॥

१३७३ ओ३म् आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वऽः ॥

१३७४ ओ३म् ता अर्षन्ति शुभ्रियः पृञ्चतीर्वर्चसा प्रियः। जातं जात्रीर्यथा हृदा ॥

१३७५ ओ३म् त्रिंशद्धामा वि राजति वाक्पतङ्गो अशिश्रियत्। प्रति वस्तोरहर्द्युभिः ॥

१३७६ ओ३म् वज्रापवसाध्यः कीर्तिर्म्रियमाणमावहन्। मह्यमायुर्घृतं पयः ॥

47. ग्रावाणः 3

१३७७ ओ३म् ग्रावाणः सविता नु वो देवः सुवतु धर्मणा । यजमानाय सुन्वते ॥

१३७८ ओ३म् ग्रावाणो अप दुच्छुनामप सेधत दुर्मतिम् । उस्राः कर्तन भेषजम् ॥

१३७९ ओ३म् प्र वो ग्रावाणः सविता देवः सुवतु धर्मणा । धूर्षु युज्यध्वं सुनुत ॥

48. तनूनपातः 1

१३८० ओ३म् मधुमन्तं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे। अद्या कृणुह्यूतये॥

49. तनूनपात् 1

१३८१ ओ३म् मधुमन्तं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे । अद्या कृणुहि वीतये ॥

50. तरन्तो वैददश्विः 1

१३८२ ओ३म् यो मे धेनूनां शतं वैददश्विर्यथा ददत् । तरन्त इव मंहना ॥

51. त्वष्टा 1

१३८३ ओ३म् अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्रावो नेष्टः पिब ऋतुना । त्वं हि रत्नधा असि ॥

१३८४ ओ३म् इह त्वष्टारमग्रियं विश्वरूपमुप ह्वये । अस्माकमस्तु केवलः ॥

52. दम्पती 2

१३८५ ओ३म् न देवानामपि ह्नुतः सुमतिं न जुगुक्षतः । श्रवो बृहद्विवासतः ॥

१३८६ ओ३म् या दम्पती समनसा सुनुत आ च धावतः । देवासो नित्ययाशिरा ॥

53. दम्पत्योराशिषः 1

१३८७ ओ३म् अरमतिरनर्वणो विश्वो देवस्य मनसा । आदित्यानामनेह इत् ॥

54. देवा 2

१३८८ ओ३म् अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्या अधि सानवि॥

१३८९ ओ३म् आरे३ ऽसावस्मदस्तु हेतिर्देवासो असत्। आरे अश्मा यमस्यथ ॥

55. देवीर्द्वारः 1

१३९० ओ३म् वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो देवीरसश्चतः । अद्या नूनं च यष्टवे ॥

56. देव्यः 1

१३९१ ओ३म् अभि नो देवीरवसा महः शर्मणा नृपत्नीः । अच्छिन्नपत्राः सचन्ताम् ॥

57. द्यावापृथिवी 3

१३९२ ओ३म् पुनाने तन्वा मिथः स्वेन दक्षेण राजथः। ऊह्याथे सनादृतम्॥

१३९३ ओ३म् प्र वां महि द्यवी अभ्युपस्तुतिं भरामहे। शुची उप प्रशस्तये॥

१३९४ ओ३म् मही मित्रस्य साधथस्तरन्ती पिप्रती ऋतम्। परि यज्ञं नि षेदथुः॥

58. द्यावापृथिव्यौ 4

१३९५ ओ३म् त॒यो॒रिद्घृ॒तव॒त्पयो॒ विप्रा॑ रिहन्ति धी॒तिभि॑ः । ग॒न्ध॒र्वस्य॑ ध्रु॒वे प॒दे ॥

१३९६ ओ३म् म॒ही द्यौः पृ॑थि॒वी च॑ न इ॒मं य॒ज्ञं मि॑मिक्षताम् । पि॒पृ॒तां नो॒ भरी॑मभिः ॥

१३९७ ओ३म् म॒ही द्यौः पृ॑थि॒वी च॑ नऽ इ॒मं य॒ज्ञं मि॑मिक्षताम्। पि॒पृ॒तां नो॒ भरी॑मभिः ॥

१३९८ ओ३म् म॒ही मि॒त्रस्य॑ साधथ॒स्तर॑न्ती॒ पिप्र॑ती ऋ॒तम् । परि॑ य॒ज्ञं नि षे॑दथुः ॥

59. द्यावापृथिव्यौ हविर्धाने वा 3

१३९९ ओ३म् आ वा॑मु॒पस्थ॑मद्रुहा दे॒वाः सी॑दन्तु य॒ज्ञिया॑ः । इ॒हाद्य सोम॑पीतये ॥

१४०० ओ३म् द्यावा॑ नः पृथि॒वी इ॒मं सि॒ध्रम॒द्य दि॑वि॒स्पृश॑म् । य॒ज्ञं दे॒वेषु॑ यच्छताम् ॥

१४०१ ओ३म् प्रेता᳚ य॒ज्ञस्य॑ श॒म्भुवा॑ यु॒वामिदा वृ॑णीमहे । अ॒ग्निं च॑ हव्य॒वाह॑नम् ॥

60. द्रविणोदाः 4

१४०२ ओ३म् द्र॒वि॒णो॒दा द॑दातु नो॒ वसू॑नि॒ यानि॑ शृण्वि॒रे । दे॒वेषु॒ ता व॑नामहे ॥

१४०३ ओ३म् द्र॒वि॒णो॒दा द्रवि॑णसो॒ ग्राव॑हस्तासो अध्व॒रे । य॒ज्ञेषु॑ दे॒वमी॑ळते ॥

१४०४ ओ३म् द्र॒वि॒णो॒दाः पि॑पीषति जु॒होत॒ प्र च॑ तिष्ठत । ने॒ष्ट्रादृ॒तुभि॑रिष्यत ॥

१४०५ ओ३म् यत्त्वा॑ तु॒रीय॑मृ॒तुभि॒र्द्रवि॑णोदो॒ यजा॑महे । अध॑ स्मा नो द॒दिर्भ॑व ॥

61. नराशंसः 2

१४०६ ओ३म् नरा॒शंस॑मि॒ह प्रि॒यम॒स्मिन्य॒ज्ञ उप॑ ह्वये । मधु॑जिह्वं हवि॒ष्कृत॑म् ॥

१४०७ ओ३म् नराशꣳ समिह प्रियमस्मिन्यज्ञ उप ह्वये। मधुजिह्वꣳ हविष्कृतम्॥

62. परमेश्वरो देवता 1

१४०८ ओ३म् युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि ॥

63. पर्जन्यः 1

१४०९ ओ३म् पर्जन्याय प्र गायत दिवस्पुत्राय मीळ्हुषे । स नो यवसमिच्छतु ॥

64. पवमानः 1

१४१० ओ३म् पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे। अथो अरिष्टतातये ॥

65. पवमानः सोमः 646

१४११ ओ३म् अति त्री सोम रोचना रोहन्न भ्राजसे दिवम् । इष्णन्त्सूर्यं न चोदयः ॥

१४१२ ओ३म् अत्यूं पवित्रमक्रमीद्वाजी धुरं न यामनि । इन्दुर्देवेषु पत्यते ॥

१४१३ ओ३म् अत्यूर्मिर्मत्सरो मदः सोमः पवित्रे अर्षति । विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥

१४१४ ओ३म् अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे । अभिष्टिकृद्विचर्षणिः ॥

१४१५ ओ३म् अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः । अपो वसिष्ट सुक्रतुः ॥

१४१६ ओ३म् अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ सृज । पुनीहीन्द्राय पातवे ॥

१४१७ ओ३म् अनप्तमप्सु दुष्टरं सोमं पवित्र आ सृज । पुनीहीन्द्राय पातवे ॥

१४१८ ओ३म् अनु द्रप्सास इन्दव आपो न प्रवतासरन् । पुनाना इन्द्रमाशत ॥

१४१९ ओ३म् अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः । रुचे जनन्त सूर्यम् ॥

१४२० ओ३म् अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः । नुदस्वादेवयुं जनम् ॥

१४२१ ओ३म् अभि क्षिपः समग्मत मर्जयन्तीरिषस्पतिम् । पृष्ठा गृभ्णत वाजिनः ॥

१४२२ ओ३म् अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः । पुनाना इन्द्रमाशत ॥

१४२३ ओ३म् अभि गावो अनूषत योषा जारमिव प्रियम् । अगन्नाजिं यथा हितम् ॥

१४२४ ओ३म् अभि त्यं पूर्व्यं मदं सुवानो अर्ष पवित्र आ । अभि वाजमुत श्रवः ॥

१४२५ ओ३म् अभि त्वा योषणो दश जारं न कन्यानूषत । मृज्यसे सोम सातये ॥

१४२६ ओ३म् अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन् ॥

१४२७ ओ३म् अभि प्रिया दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहा हितम् । सूरः पश्यति चक्षसा ॥

१४२८ ओ३म् अभि प्रिया दिवस्पदा सोमो हिन्वानो अर्षति । विप्रस्य धारया कविः ॥

१४२९ ओ३म् अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीरृतस्य मातरः । मर्मृज्यन्ते दिवः शिशुम् ॥

१४३० ओ३म् अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न मातरः । इन्द्रं सोमस्य पीतये ॥

१४३१ ओ३म् अभि विप्रा अनूषत मूर्धन्यज्ञस्य कारवः । दधानाश्चक्षसि प्रियम् ॥

१४३२ ओ३म् अभीमृतस्य विष्टपं दुहते पृश्निमातरः । चारु प्रियतमं हविः ॥

१४३३ ओ३म् अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे । देवेभ्यो अनुकामकृत् ॥

१४३४ ओ३म् अयं देवेषु जागृविः सुत एति पवित्र आ । सोमो याति विचर्षणिः ॥

१४३५ ओ३म् अयं सूर्य इवोपदृगयं सरांसि धावति । सप्त प्रवत आ दिवम् ॥

१४३६ ओ३म् अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया । युजं वाजेषु चोदय ॥

१४३७ ओ३म् अया निजघ्निरोजसा रथसंगे धने हिते । स्तवा अबिभ्युषा हृदा ॥

१४३८ ओ३म् अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः । हिन्वानो मानुषीरपः ॥

१४३९ ओ३म् अया सोमः सुकृत्यया महश्चिदभ्यवर्धत । मन्दान उद्वृषायते ॥

१४४० ओ३म् अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे ॥

१४४१ ओ३म् अरुषो जनयन्गिरः सोमः पवत आयुषक् । इन्द्रं गच्छन्कविक्रतुः ॥

१४४२ ओ३म् अवावशन्त धीतयो वृषभस्याधि रेतसि । सूनोर्वत्सस्य मातरः ॥

१४४३ ओ३म् अव्यो वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति । रेभो वनुष्यते मती ॥

१४४४ ओ३म् अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः । वि नो राये दुरो वृधि ॥

१४४५ ओ३म् असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया । शुक्रासो वीरयाशवः ॥

१४४६ ओ३म् असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः । विदाना अस्य योजनम् ॥

१४४७ ओ३म् अस्मभ्यं रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये । श्रवो वसूनि सं जितम् ॥

१४४८ ओ३म् अस्मभ्यमिन्दविन्द्रयुर्मध्वः पवस्व धारया । पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव ॥

१४४९ ओ३म् अस्मे धेहि द्युमद्यशो मघवद्भ्यश्च मह्यं च । सनिं मेधामुत श्रवः ॥

१४५० ओ३म् अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः । पयः सहस्रसामृषिम् ॥

१४५१ ओ३म् अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः। सं सूर्येण दिद्युते॥

१४५२ ओ३म् अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः। सं सूर्येण दिद्युते॥

१४५३ ओ३म् अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं गावो न धेनवः। अग्मन्नृतस्य योनिमा॥

१४५४ ओ३म् अत्या हियाना न हेतृभिरसृग्रं वाजसातये। वि वारमव्यमाशवः॥

१४५५ ओ३म् अतस्त्वा रयिरभ्ययद्राजानꣳ सुक्रतो दिवः। सुपर्णो अव्यथी भरत्॥

१४५६ ओ३म् अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे। अभिष्टिकृद्विचर्षणिः॥

१४५७ ओ३म् अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः। अपो वसिष्ट सुक्रतुः॥

१४५८ ओ३म् अध्वर्यो अद्रिभिः सुतꣳ सोमं पवित्र आ नय। पुनाहीन्द्राय पातवे॥

१४५९ ओ३म् अध्वर्यो अद्रिभिः सुतꣳ सोमं पवित्र आ नय। पुनीहीन्द्राय पातवे॥

१४६० ओ३म् अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः । रुचे जनन्त सूर्यम्॥

१४६१ ओ३म् अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि। अन्तरिक्षेण यातवे॥

१४६२ ओ३म् अर्षा नः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्। वर्धा समुद्रमुक्थ्य॥

१४६३ ओ३म् अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत्। सीदन्योनौ वनेष्वा॥

१४६४ ओ३म् अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत्। सीदन्योनौ व नेष्वा॥

१४६५ ओ३म् अव्या वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति। रेभो वनुष्यते मती॥

१४६६ ओ३म् असाव्यꣳ शुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः। श्येनो न योनिमासदत्॥

१४६७ ओ३म् असाव्यꣳ शुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः। श्येनो न योनिमासदत्॥

१४६८ ओ३म् असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया। शुक्रासो वीरयाशवः॥

१४६९ ओ३म् असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया। शुक्रासो वीरयाशवः॥

१४७० ओ३म् असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः। विदाना अस्य योजना॥

१ २ ३ २ ३ ३उ ३ १ २ ३क २र ३ १ २र ३ १ २
१४७१ ओ३म् अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या। रुज यस्त्वा पृतन्यति॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ २ १ २ ३ १ २
१४७२ ओ३म् असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः। कार्ष्मन्वाजी न्यक्रमीत्॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१४७३ ओ३म् अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये। अवावशन्त धीतयः॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१४७४ ओ३म् अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः। वृष्णो हरस आयवः॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २
१४७५ ओ३म् अव्या वारैः परि प्रियꣳ हरिꣳ हिन्वन्त्यद्रिभिः। पवमानं मधुश्चुतम्॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २र १ २ ३ १ २र
१४७६ ओ३म् अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः। वि नो राये दुरो वृधि॥

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
१४७७ ओ३म् अपघ्नन्पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्॥

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
१४७८ ओ३म् अपघ्नन्पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्॥

३ १ २ ३ १ २
१४७९ ओ३म् अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः। नुदस्वादेवयुं जनम्॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
१४८० ओ३म् अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः। नुदस्वादेवयुं जनम्॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१४८१ ओ३म् अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः। योनावृतस्य सीदत॥

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१४८२ ओ३म् अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः। सोमा अर्षन्तु विष्णवे॥

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१४८३ ओ३म् अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि। सनद्वाजः परि स्रव॥

३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
१४८४ ओ३म् अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः। पुनाना इन्द्रमाशत॥

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २
१४८५ ओ३म् अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया। वाजं गोमन्तमक्षरन्॥

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
१४८६ ओ३म् अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीर्ऋतस्य मातरः। मर्जयन्तीर्दिवः शिशुम्॥

३ १ २र ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१४८७ ओ३म् अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न धेनवः। इन्द्रꣳ सोमस्य पीतये॥

१४८८ ओ३म् अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः । देवं देवाय देवयु॥

१४८९ ओ३म् अभि प्रियं दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहा हितम्। सूरः पश्यति चक्षसा॥

१४९० ओ३म् अभि प्रिया दिवः कविउविप्रः स धारया सुतः। सोमो हिन्वे परावति ॥

१४९१ ओ३म् अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति। हरिस्तुञ्जान आयुधा॥

१४९२ ओ३म् अभ्यर्षानपच्युतो वाजिन्त्समत्सु सासहिः। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

१४९३ ओ३म् अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे। देवेभ्यो अनुकामकृत्॥

१४९४ ओ३म् अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति। हिन्वान आप्यं बृहत्॥

१४९५ ओ३म् अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि। सोमो देवो न सूर्यः॥

१४९६ ओ३म् अया निजघ्निरोजसा रथसङ्गे धने हिते । स्तवा अबिभ्युषा हृदा॥

१४९७ ओ३म् अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः। हिन्वानो मानुषीरपः॥

१४९८ ओ३म् अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः। हिन्वानो मानुषीरपः॥

१४९९ ओ३म् अया सोम सुकृत्यपा महाउ।न्त्सन्नभ्यवर्धथाः। म न्दान इद्वृषायसे॥

१५०० ओ३म् अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया। युजं वाजेषु चोदय॥

१५०१ ओ३म् अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा। अवाहन्नवतीर्नव॥

१५०२ ओ३म् अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा। अवाहन्नवतीर्नव॥

१५०३ ओ३म् अय२ सूर्य इवोपदृगय२ सरा२ सि धावति। सप्त प्रवत आ दिवम्॥

१५०४ ओ३म् अय२ स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ। सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत्॥

१५०५ ओ३म् अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं मधोः पवस्व धारया। पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव॥

१५०६ ओ३म् अस्मभ्यँ रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये। श्रवो वसूनि सञ्जितम्॥

१५०७ ओ३म् अस्य प्रत्नामनु द्युतँ शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः। पयः सहस्रसामृषिम्॥

१५०८ ओ३म् अभ्यर्ष बृहद्यशो मघवद्भ्यो ध्रुवँ रयिम्। इषँ स्तोतृभ्य आ भर॥

१५०९ ओ३म् अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसँ रयिम्। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

१५१० ओ३म् आ कलशेषु धावति पवित्रे परि षिच्यते । उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते ॥

१५११ ओ३म् आ कलशेषु धावति श्येनो वर्म वि गाहते । अभि द्रोणा कनिक्रदत् ॥

१५१२ ओ३म् आ दिवस्पृष्ठमश्वयुर्गव्ययुः सोम रोहसि । वीरयुः शवसस्पते ॥

१५१३ ओ३म् आ न इन्दो महीमिषं पवस्व विश्वदर्शतः । अस्मभ्यं सोम गातुवित् ॥

१५१४ ओ३म् आ न इन्दो शतग्विनं रयिं गोमन्तमश्विनम् । भरा सोम सहस्रिणम् ॥

१५१५ ओ३म् आ नः पवस्व धारया पवमान रयिं पृथुम् । यया ज्योतिर्विदासि नः ॥

१५१६ ओ३म् आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर । सुष्वाणो देववीतये ॥

१५१७ ओ३म् आ नः सोम पवित्र आ सृजता मधुमत्तमम् । देवेभ्यो देवश्रुत्तमम् ॥

१५१८ ओ३म् आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम् । अस्मे इन्दो स्वाभुवम् ॥

१५१९ ओ३म् आ पवमान नो भरार्यो अदाशुषो गयम् । कृधि प्रजावतीरिषः ॥

१५२० ओ३म् आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे । अर्कस्य योनिमासदम् ॥

१५२१ ओ३म् आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे । अर्कस्य योनिमासदम् ॥

१५२२ ओ३म् आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत् । अश्वावद्वाजवत्सुतः ॥

१५२३ ओ३म् आ पवस्व सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम् । पुरुश्चन्द्रं पुरुस्पृहम् ॥

१५२४ ओ३म् आ पवस्व हिरण्यवदश्वावत्सोम वीरवत् । वाजं गोमन्तमा भर ॥

१५२५ ओ३म् आ मित्रावरुणा भगं मध्वः पवन्त ऊर्मयः । विदाना अस्य शक्मभिः ॥

१५२६ ओ३म् आ ययोस्त्रिंशतं तना सहस्राणि च दद्महे । तरत्स मन्दी धावति ॥

१५२७ ओ३म् आ योनिमरुणो रुहद्गमदिन्द्रं वृषा सुतः । ध्रुवे सदसि सीदति ॥

१५२८ ओ३म् आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः । आ योनिं धर्णसिः सदः ॥

१५२९ ओ३म् आत्सोम इन्द्रियो रसो वज्रः सहस्रसा भुवत् । उक्थं यदस्य जायते ॥

१५३० ओ३म् आदस्य शुष्मिणो रसे विश्वे देवा अमत्सत । यदी गोभिर्वसायते ॥

१५३१ ओ३म् आदीं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम् । अत्यो न गोभिरज्यते ॥

१५३२ ओ३म् आपानासो विवस्वतो जनन्त उषसो भगम् । सूरा अण्वं वि तन्वते ॥

१५३३ ओ३म् आविवासन्परावतो अथो अर्वावतः सुतः । इन्द्राय सिच्यते मधु ॥

१५३४ ओ३म् आविशन्कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः । शूरो न गोषु तिष्ठति ॥

१५३५ ओ३म् आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर। सुष्वाणो देववीतये॥

१५३६ ओ३म् आ न इन्दो शातग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम्। वहा भगत्तिमूतये॥

१५३७ ओ३म् आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम्। अस्मे इन्दो स्वाभुवम्॥

१५३८ ओ३म् आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः। इषे पवस्व संयतम्॥

१५३९ ओ३म् आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे। अर्कस्य योनिमासदम्॥

१५४० ओ३म् आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत्। अश्ववत्सोम वीरवत्॥

१५४१ ओ३म् आ पवस्व सहस्रिणꣳ रयिꣳ सोम सुवीर्यम्। अस्मे श्रवाꣳसि धारय॥

१५४२ ओ३म् आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध। इहो ष्विन्दवा गहि॥

१५४३ ओ३म् आ ययोस्त्रिꣳ शतं तना सहस्राणि च दद्महे। तरत्स मन्दी धावति॥

१५४४ ओ३म् आ योनिमरुणो रुहद्गमदिन्द्रो वृषा सुतम्। ध्रुवे सदसि सीदतु॥

१५४५ ओ३म् आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः। आ योनिं धर्णसिः सदः॥

१५४६ ओ३म् आदीꣳ त्रितस्य योषणो हरिꣳ हिन्वन्त्यद्रिभिः । इन्दुमिन्द्राय पीतये॥

१५४७ ओ३म् आदीꣳ हꣳ सो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम्। अत्यो न गोभिरज्यते॥

१५४८ ओ३म् आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥

१५४९ ओ३म् आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥

१५५० ओ३म् आ मित्रे वरुणे भगे मधोः पवन्त उर्मयः। विदाना अस्य शक्मभिः॥

१५५१ ओ३म् आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम्। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥

१५५२ ओ३म् आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनूष्वा। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥

१५५३ ओ३म् आदीमश्वं न हेतारमशूशुभन्नमृताय। मधो रसꣳ सधमादे॥

१५५४ ओ३म् आपानासो विवस्वतो जिन्वन्त उषसो भगम्। सूरा अण्वं वि तन्वते॥

१५५५ ओ३म् आविशन्कलशꣳ सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः। इन्दुरिन्द्राय धीयते॥

१५५६ ओ३म् आविवासन्परावतो अथो अर्वावतः सुतः। इन्द्राय सिच्यते मधु॥

१५५७ ओ३म् आशुरर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना। यत्रा देवा इति ब्रुवन्॥

१५५८ ओ३म् इन्दुरत्यो न वाजसृत्कनिक्रन्ति पवित्र आ । यदक्षारति देवयुः ॥

१५५९ ओ३म् इन्दुर्हियानः सोतृभिर्मृज्यमानः कनिक्रदत् । इयर्ति वग्नुमिन्द्रियम् ॥

१५६० ओ३म् इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः । नि बर्हिषि प्रिये सदः ॥

१५६१ ओ३म् इन्दो समुद्रमीङ्खय पवस्व विश्वमेजय । रायो धर्ता न ओजसा ॥

१५६२ ओ३म् इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय । ऋतस्य योनिमासदम् ॥

१५६३ ओ३म् इन्द्रस्य सोम राधसे शं पवस्व विचर्षणे । प्रजावद्रेत आ भर ॥

१५६४ ओ३म् इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे । मनश्चिन्मनसस्पतिः ॥

१५६५ ओ३म् इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः । ऋतस्य योनिमासदम् ॥

१५६६ ओ३म् इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्रिणम् ॥

१५६७ ओ३म् इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । इन्दो रुचाभि गा इहि ॥

१५६८ ओ३म् इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मतिः। सृजदश्वꣳ रथीरिव॥

१५६९ ओ३म् इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे। मनश्चिन्मनसस्पतिः॥

१५७० ओ३म् इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः। अर्कस्य योनिमासदम्॥

१५७१ ओ३म् इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः। अर्कस्य योनिमासदम्॥

१५७२ ओ३म् इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय। देवानां योनिमासदम्॥

१५७३ ओ३म् इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यꣳ सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणम्॥

१५७४ ओ३म् इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिदीयसे। अरमिन्द्रस्य धाम्ने॥

१५७५ ओ३म् इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः। नि बर्हिषि प्रिये सदः॥

१५७६ ओ३म् इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स बले हितः। द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः॥

१५७७ ओ३म् इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । इन्दो रुचाभि गा इहि॥

१५७८ ओ३म् इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । इन्दो रुचाभि गा इहि॥

१५७९ ओ३म् उत त्या हरितो दश सूरो अयुक्त यातवे । इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन् ॥

१५८० ओ३म् उत त्वामरुणं वयं गोभिरञ्जो मदाय कम् । वि नो राये दुरो वृधि ॥

१५८१ ओ३म् उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः । गृणानो जमदग्निना ॥

१५८२ ओ३म् उतो सहस्रभर्णसं वाचं सोम मखस्युवम् । पुनान इन्दवा भर ॥

१५८३ ओ३म् उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः । वाणस्य चोदया पविम् ॥

१५८४ ओ३म् उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधम् । अगन्म बिभ्रतो नमः ॥

१५८५ ओ३म् उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् । इन्दुं देवा अयासिषुः ॥

१५८६ ओ३म् उभे सोमावचाकशन्मृगो न तक्तो अर्षसि । सीदन्नृतस्य योनिमा ॥

१५८७ ओ३म् उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे॥ अभि देवाꣳ इयक्षते ॥

१५८८ ओ३म् उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाꣳ इयक्षते॥

१५८९ ओ३म् उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रवे। पवमान विदा रयिम्॥

१५९० ओ३म् उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः। वाणस्य चोदया पविम्॥

१५९१ ओ३म् उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः। नुदस्व याः परिस्पृधः॥

१५९२ ओ३म् उपो षु जातमप्तुरं । गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् । इन्दुं देवा अयासिषु॥

१५९३ ओ३म् उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दुं देवा अयासिषु॥

१५९४ ओ३म् उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दुं देवा अयासिषुः॥

१५९५ ओ३म् उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रꣳ शर्म महि श्रवः॥

१५९६ ओ३म् उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रꣳ शर्म महि श्रवः॥

१५९७ ओ३म् उत नो गोविदश्ववित्पवस्व सोमान्धसा। मक्षूतमेभिरहभिः॥

१५९८ ओ३म् उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः। गृणानो जमदग्निना॥

१५९९ ओ३म् उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः। द्युमदिन्दो सुवीर्यम्॥

१६०० ओ३म् उत त्या हरितो रथे सूरो अयुक्त यातवे। इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन्॥

१६०१ ओ३म् उस्रा वेद वसूनां मर्त्तस्य देव्यवसः। तरत्स मन्दी धावति॥

१६०२ ओ३म् ऋधक्सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवा कवे। पवस्व सूर्यो दृशे॥

१६०३ ओ३म् एत उ त्ये अवीवशन्काष्ठां वाजिनो अक्रत । सतः प्रासाविषुर्मतिम् ॥

१६०४ ओ३म् एतं त्यं हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः । याभिर्मदाय शुम्भते ॥

१६०५ ओ३म् एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम् । समादित्येभिरख्यत ॥

१६०६ ओ३म् एते वाता इवोरवः पर्जन्यस्येव वृष्टयः । अग्नेरिव भ्रमा वृथा ॥

१६०७ ओ३म् एते सोमा असृक्षत गृणानाः श्रवसे महे । मदिन्तमस्य धारया ॥

१६०८ ओ३म् एते सोमास आशवो रथा इव प्र वाजिनः । सर्गाः सृष्टा अहेषत ॥

१६०९ ओ३म् एते सोमास इन्दवः प्रयस्वन्तश्चमू सुताः । इन्द्रं वर्धन्ति कर्मभिः ॥

१६१० ओ३म् एवा पुनान इन्द्रयुर्मदं मदिष्ठ वीतये । गुहा चिद्दधिषे गिरः ॥

१६११ ओ३म् एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः । धारया पवते सुतः ॥

१६१२ ओ३म् एष गव्युरचिक्रदत्पवमानो हिरण्ययुः । इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥

१६१३ ओ३म् एष तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रमति गाहते । रक्षोहा वारमव्ययम् ॥

१६१४ ओ३म् एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया । पवमानः कनिक्रदत् ॥

१६१५ ओ३म् एष देवो रथर्यति पवमानो दशस्यति । आविष्कृणोति वग्वनुम् ॥

१६१६ ओ३म् एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः । हरिर्वाजाय मृज्यते ॥

१६१७ ओ३म् एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः । सोमो वनेषु विश्ववित् ॥

१६१८ ओ३म् एष पुरू धियायते बृहते देवतातये । यत्रामृतास आसते ॥

१६१९ ओ३म् एष वसूनि पिब्दना परुषा ययिवाँ अति । अव शादेषु गच्छति ॥

१६२० ओ३म् एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः । अव्यो वारं वि धावति ॥

१६२१ ओ३म् एष वृषा कनिक्रदद्दशभिर्जामिभिर्यतः । अभि द्रोणानि धावति ॥

१६२२ ओ३म् एष वृषा वृषव्रतः पवमानो अशस्तिहा । करद्वसूनि दाशुषे ॥

१६२३ ओ३म् एष सूर्यमरोचयत्पवमानो विचर्षणिः । विश्वा धामानि विश्ववित् ॥

१६२४ ओ३म् एष सूर्येण हासते पवमानो अधि द्यवि । पवित्रे मत्सरो मदः ॥

१६२५ ओ३म् एष स्य परि षिच्यते मर्मृज्यमान आयुभिः । उरुगायः कविक्रतुः ॥

१६२६ ओ३म् एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणेष्वायवः। प्रचक्राणं महीरिषः॥

१६२७ ओ३म् एतं त्रितस्य योषणो हरिँ हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये॥

१६२८ ओ३म् एतं त्यँ हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः। याभिर्मदाय शुम्भते॥

१६२९ ओ३म् एते सोमा असृक्षत गृणानाः शवसे महे। मदिन्तमस्य धारया॥

१६३० ओ३म् एते सोमा अभि प्रियमिन्द्रस्य काममक्षरन्। वर्धन्तो अस्य वीकयम्॥

१६३१ ओ३म् एत असृग्रमिन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः। विश्वान्यभि सौभगा॥

१६३२ ओ३म् एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम्। समादित्येभिरख्यत॥

१६३३ ओ३म् एतमु त्यं दश क्षिपो हरिँ हिन्वन्ति यातवे। स्वायुधं मदिन्तमम्॥

१६३४ ओ३म् एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्। सिषासन्तो वनामहे॥

१६३५ ओ३म् एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्। सिषासन्तो वनामहे॥

१६३६ ओ३म् एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः । एवा ते राध्यं मनः॥

१६३७ ओ३म् एवा रातिस्तुविमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः। अधा चिदिन्द्र नः सचा॥

१६३८ ओ३म् एष वसूनि पिब्दनः परुषा ययिवाँ अति। अव शादेषु गच्छति॥

१६३९ ओ३म् एष विप्रैरभिष्टुतोऽपो देवो वि गाहते। दधद्रत्नानि दाशुषे॥

१६४० ओ३म् एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः। पवमानः सिषासति॥

१६४१ ओ३म् एष श्रृङ्गाणि दोधुवच्छिशीते यूथ्योऽ. वृषा। नृम्णा दधान ओजसा॥

१६४२ ओ३म् एष सूर्येण हासते संवसानो विवस्वता। पतिर्वाचो अदाभ्यः॥

१६४३ ओ३म् एष सूर्यमरोचयत्पवमानो अधि द्यवि। पवित्रे मत्सरो मदः॥

१६४४ ओ३म् एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति। गच्छं जारो न योषितम्॥

१६४५ ओ३म् एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः। धारया पवते सुतः॥

१६४६ ओ३म् एष उ स्य वृषा रथोऽव्या वारेभिरव्यत। गच्छन्वाजꣳ सहस्रिणम्॥

१६४७ ओ३म् एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते। पुनानो घ्नन्नप द्विषः॥

१६४८ ओ३म् एष गव्युरचिक्रदत्पवमानो हिरण्ययुः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः॥

१६४९ ओ३म् एष देवः शुभायतेऽधि योनावमर्त्यः। वृत्रहा देववीतमः॥

१६५० ओ३म् एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयते। अभि द्रोणान्यासदम्॥

१६५१ ओ३म् एष देवो रथर्यति पवमानो दिशस्यति। आविष्कृणोति वग्वनुम्॥

१६५२ ओ३म् एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः। हरिर्वाजाय मृज्यते॥

१६५३ ओ३म् एष देवो विपा कृतोऽति ह्वराꣳसि धावति। पवमानो अदाभ्यः॥

१६५४ ओ३म् एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्॥

१६५५ ओ३म् एष पुरू धियायते बृहते देवतातये। यत्रामृतास आशत॥

१६५६ ओ३म् एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः। हरिः पवित्रे अर्षति॥

१६५७ ओ३म् एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः। हरिः पवित्रे अर्षति॥

१६५८ ओ३म् एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि। कविर्विप्रेण वावृधे॥

१६५९ ओ३म् एष पवित्रे अक्षरत्सोमो देवेभ्यः सुतः। विश्वा धामान्याविशन्॥

१६६० ओ३म् एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरꣳ शुभिः। पतिः सिन्धूनां भवन्॥

१६६१ ओ३म् एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः। अव्यं वारं वि धावति॥

१६६२ ओ३म् एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति। देवावीरघशꣳ सहा॥

१६६३ ओ३म् एष शुष्म्यसिष्यददन्तरिक्षे वृषा हरिः। पुनान इन्दुरिन्द्रमा॥

१६६४ ओ३म् एष हितो वि नीयतेऽन्तः शुन्ध्यावता पथा। यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः॥

१६६५ ओ३म् एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित्परि षिच्यते। पवित्रे दक्षसाधनः॥

१६६६ ओ३म् एष दिवं वि धावति तिरो रजाꣳ सि धारया। पवमानः कनिक्रदत्॥

१६६७ ओ३म् एष दिवं व्यासरत्तिरो रजाꣳ स्यस्तृतः। पवमानः स्वध्वरः॥

१६६८ ओ३म् एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः। सोमो वनेषु विश्ववित्॥

१६६९ ओ३म् एष वृषा कनिक्रदद्दशभिर्जामिभिर्यतः। अभि द्रोणानि धावति॥

१६७० ओ३म् एष स्य पीतये सुतो हरिरर्षति धर्णसिः। क्रन्दन्योनिमभि प्रियम्॥

१६७१ ओ३म् एष स्य मद्यो रसोऽव चष्टे दिवः शिशुः। य इन्दुर्वारमाविशत्॥

१६७२ ओ३म् कृण्वन्तो वरिवो गवेऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम्। इडामस्मभ्यꣳ संयतम्॥

१६७३ ओ३म् केतुं कृण्वं दिवस्परि विश्वा रूपाभ्यर्षसि। समुद्रः सोम पिन्वसे॥

१६७४ ओ३म् क्रीडुर्मखो न मꣳ हयुः पवित्रꣳ सोम गच्छसि। दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम्॥

१६७५ ओ३म् कविमिव प्रशꣳस्यं यं देवास इति द्विता। नि मर्त्येष्वादधुः॥

१६७६ ओ३म् गिरस्त इन्द ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः । याभिर्मदाय शुम्भसे ॥

१६७७ ओ३म् गिरा जात इह स्तुत इन्दुरिन्द्राय धीयते । विर्योना वसताविव ॥

१६७८ ओ३म् गिरा यदी सबन्धवः पञ्च व्राता अपस्यवः । परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम् ॥

१६७९ ओ३म् गिरस्त इन्द ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः। याभिर्मदाय शुम्भसे॥

१६८० ओ३म् गिराउ वज्रो न सम्भृतः सबलो अनपच्युतः। ववक्ष उग्रो अस्तृतः॥

१६८१ ओ३म् गोमन्नः सोम वीरवदश्वावद्वाजवत्सुतः । पवस्व बृहतीरिषः ॥

१६८२ ओ३म् गोषा इन्दो नृषा अस्यश्वसा वाजसा उत। आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः॥

१६८३ ओ३म् घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः । अस्मभ्यं वृष्टिमा पव ॥

१६८४ ओ३म् घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः। अस्मभ्यं वृष्टिमा पव॥

१६८५ ओ३म् जघ्निर्वृत्रममित्रियं सस्निर्वाजं दिवेदिवे । गोषा उ अश्वसा असि ॥

१६८६ ओ३म् जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमान कनिक्रदत् । विश्वा अप द्विषो जहि ॥

१६८७ ओ३म् जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमानः कनिक्रदत्। विश्वा अप द्विषो जहि॥

१६८८ ओ३म् जघ्निर्वृत्रममित्रियꣳ सस्निर्वाजं दिवेदिवे। गोषातिरश्वसा असि॥

१६८९ ओ३म् जज्ञानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि। क्रन्दं देवो न सूर्यः॥

१६९० ओ३म् तं गावो अभ्यनूषत सहस्रधारमक्षितम् । इन्दुं धर्तारमा दिवः ॥

१६९१ ओ३म् तं गीर्भिर्वाचमीङ्खयं पुनानं वासयामसि । सोम जनस्य गोपतिम् ॥

१६९२ ओ३म् तं गोभिर्वृषणं रसं मदाय देववीतये । सुतं भराय सं सृज ॥

१६९३ ओ३म् तं त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे रथे युञ्जन्ति यातवे । ऋषीणां सप्त धीतिभिः ॥

१६९४ ओ३म् तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं सधस्थेषु महो दिवः । चारुं सुकृत्ययेमहे ॥

१६९५ ओ३म् तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे । तव प्रशस्तयो महीः ॥

१६९६ ओ३म् तं त्वा सहस्रचक्षसमथो सहस्रभर्णसम् । अति वारमपाविषुः ॥

१६९७ ओ३म् तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः पवमान गिरावृधम् । इन्दविन्द्राय मत्सरम् ॥

१६९८ ओ३म् तं नो विश्वा अवस्युवो गिरः शुम्भन्ति पूर्वथा । इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥

१६९९ ओ३म् तं सोतारो धनस्पृतमाशुं वाजाय यातवे । हरिं हिनोत वाजिनम् ॥

१७०० ओ३म् तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम् । इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ॥

१७०१ ओ३म् तं त्वा धर्त्तारमोण्योः पवमान स्वर्दृशम्। हिन्वे वाजेषु वाजिनम्॥

१७०२ ओ३म् तं त्वा नृम्णानि बिभ्रत२ सधस्थेषु महो दिवः। चारु२ सुकृत्ययेमहे॥

१७०३ ओ३म् तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे। तव प्रशस्तये महे॥

१७०४ ओ३म् तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम्। सं त्वा मृजन्त्यायवः॥

१७०५ ओ३म् तं दुरोषमभीनरः सोमं विश्वाच्या धिया। यज्ञाय सन्त्वद्रयः॥

१७०६ ओ३म् तमिद्वर्धन्तु नो गिरो वत्सं संशिश्वरीरिव । य इन्द्रस्य हृदंसनिः ॥

१७०७ ओ३म् तमु त्वा वाजिनं नरो धीभिर्विप्रा अवस्यवः । मृजन्ति देवतातये ॥

१७०८ ओ३म् तया पवस्व धारया यया गाव इहागमन् । जन्यास उप नो गृहम् ॥

१७०९ ओ३म् तव प्रत्नेभिरध्वभिरव्यो वारे परि प्रियः । सहस्रधारो यात्तना ॥

१७१० ओ३म् तव विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत । मदेषु सर्वधा असि ॥

१७११ ओ३म् तव शुक्रासो अर्चयो दिवस्पृष्ठे वि तन्वते । पवित्रं सोम धामभिः ॥

१७१२ ओ३म् तवेमे सप्त सिन्धवः प्रशिषं सोम सिस्रते । तुभ्यं धावन्ति धेनवः ॥

१७१३ ओ३म् तस्य ते वाजिनो वयं विश्वा धनानि जिग्युषः । सखित्वमा वृणीमहे ॥

१७१४ ओ३म् ता अभि सन्तमस्तृतं महे युवानमा दधुः । इन्दुमिन्द्र तव व्रते ॥

१७१५ ओ३म् ताभ्यां विश्वस्य राजसि ये पवमान धामनी । प्रतीची सोम तस्थतुः ॥

१७१६ ओ३म् तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः । हरिरेति कनिक्रदत् ॥

१७१७ ओ३म् तिस्रोउ। वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरिरेति कनिक्रदत्॥

१७१८ ओ३म् तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरिरेति कनिक्रदत्॥

१७१९ ओ३म् तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रो दुदुह्रे अक्षितम् । वर्षिष्ठे अधि सानवि ॥

१७२० ओ३म् तुभ्यं वाता अभिप्रियस्तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः । सोम वर्धन्ति ते महः ॥

१७२१ ओ३म् तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे । तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ॥

१७२२ ओ३म् तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे। तुभ्यं धावन्ति धेनवः ॥

१७२३ ओ३म् ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम् । सुवाना देवास इन्दवः ॥

१७२४ ओ३म् ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम् । सुवाना देवास इन्दवः ॥

१७२५ ओ३म् ते नः सहस्रिण२ रयिं पवन्तामा सुवीर्यम्। स्वाना देवास इन्दवः॥

१७२६ ओ३म् ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम्। स्वाना देवास इन्दवः॥

१७२७ ओ३म् ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा। पवन्तामान्तरिक्ष्या॥

१७२८ ओ३म् त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄꣳः पाहि शृणुही गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना॥

१७२९ ओ३म् त्वं विप्रस्त्वं कविउमधु प्र जातमन्धसः। मदेषु सर्वधा असि॥

१७३० ओ३म् त्वां यज्ञैरवीवृधन्पवमान विधर्मणि। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

१७३१ ओ३म् त्वे विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत। मदेषु सर्वधा असि॥

१७३२ ओ३म् त्वꣳ राजेव सुव्रतो गिरः सोमाविवेशिथ। पुनानो वह्ने अद्भुत॥

१७३३ ओ३म् त्वꣳ सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत्। द्युमन्तꣳ शुष्ममा भर॥

१७३४ ओ३म् त्वꣳ सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीधृतिः। सस्निर्यो अनुमाद्यः॥

१७३५ ओ३म् त्वꣳ सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे। पवस्व मꣳहयद्रयिः॥

१७३६ ओ३म् त्वꣳ सोम परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः। वरिवोविद्घृतं पयः॥

१७३७ ओ३म् त्वꣳ सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

१७३८ ओ३म् त्वꣳ समुद्रिया अपोऽग्रियो वाच ईरयन्। पवस्व विश्वचर्षणे॥

१७३९ ओ३म् त्वꣳ सुतो मदिन्तमो दधन्वान्मत्सरिन्तमः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः॥

१७४० ओ३म् तमिद्वर्धन्तु नो गिरो वत्सꣳ सꣳशिश्वरीरिव। य इन्द्रस्य हृदꣳ सनिः॥

१७४१ ओ३म् तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत्॥

१७४२ ओ३म् तया पवस्व धारया यया गाव इहागमन्। जन्यास उप नो गृहम्॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
१७४३ ओ३म् तꣳ हिन्वन्ति मदच्युतꣳ हरिं नदीषु वाजिनम्। इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ २ ३ १ २
१७४४ ओ३म् तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः । तरत्स मन्दी धावति॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ २ ३ १ २
१७४५ ओ३म् तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत्स मन्दी धावति॥

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१७४६ ओ३म् तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक्पश्येम सूर्यम्। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २र १ २ ३ १ २
१७४७ ओ३म् तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधोकव्याशत। पवमानस्य मरुतः॥

१७४८ ओ३म् दि॒वः पी॒यूष॑मु॒त्तमं॒ सोम॒मिन्द्रा॑य व॒ज्रिणे॑ । सु॒नोता॒ मधु॑मत्तमम् ॥

१७४९ ओ३म् दि॒वो न सानु॑ पि॒प्युषी॒ धारा॑ सु॒तस्य॑ वे॒धसः॑ । वृथा॑ प॒वित्रे॑ अर्षति ॥

३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
१७५० ओ३म् दिवः पीयूषमुत्तम सोममिन्द्राय वज्रिणे। सुनोता मधुमत्तमम्॥

३ १ २र ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
१७५१ ओ३म् दिवो नाभा विचक्षणोऽव्या वारे महीयते। सोमो यः सुक्रतुः कविः॥

१७५२ ओ३म् दु॒हा॒नः प्र॒त्नमित्पयः॑ प॒वित्रे॒ परि॑ षिच्यते । क्रन्द॑न्दे॒वाँ अ॑जीजनत् ॥

३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१७५३ ओ३म् दुहानः प्रत्नमित्पयः पवित्रे परि षिच्यसे। क्रन्दं देवाꣳ अजीजनः॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३क २र १ २र
१७५४ ओ३म् देवेभ्यस्त्वा मदाय कꣳ सृजानमति मेष्यः। सं गोभिर्वासयामसि॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ २ २र
१७५५ ओ३म् दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा। सोमाः शुक्रा गवाशिरः॥

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
१७५६ ओ३म् ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दद्महे। तरत्स मन्दी धावति॥

१७५७ ओ३म् न त्वां श॒तं च॒न ह्रुतो॒ राधो॒ दित्स॑न्त॒मा मि॑नन् । यत्पु॑ना॒नो म॑ख॒स्यसे॑ ॥

१७५८ ओ३म् न॒प्तीभि॒र्यो वि॒वस्व॑तः शु॒भ्रो न मा॑मृ॒जे युवा॑ । गाः कृ॑ण्वा॒नो न नि॒र्णिज॑म् ॥

१७५९ ओ३म् नम॒सेदुप॑ सीदत द॒ध्नेद॒भि श्री॑णीतन । इन्दु॒मिन्द्रे॑ दधातन ॥

१७६० ओ३म् नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुषा सूर्यं दृशे। कवेरपत्यमा दुहे॥

१७६१ ओ३म् नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर्धीनामन्तः सबर्दुघः । हिन्वानो मानुषा युगा ॥

१७६२ ओ३म् नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर्धेनामन्तः सबर्दुघाम्। हिन्वानो मानुषा युजा॥

१७६३ ओ३म् नू नव्यसे नवीयसे सूक्ताय साधया पथः । प्रत्नवद्रोचया रुचः ॥

१७६४ ओ३म् नू नो रयिं महामिन्दोऽस्मभ्यꣳ सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणम्॥

१७६५ ओ३म् नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्रपीतꣳ स्वर्विदम्। भक्षीमहि प्रजामिषम्॥

१७६६ ओ३म् न त्वा शतं च न ह्रुतो राधो दित्सन्तमा मिनन्। यत्पुनानो मखस्यसे॥

१७६७ ओ३म् नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन। इन्दुमिन्द्रे दधातन॥

१७६८ ओ३म् परि णो अश्वमश्वविद्गोमदिन्दो हिरण्यवत् । क्षरा सहस्रिणीरिषः ॥

१७६९ ओ३म् परि णो देववीतये वाजाँ अर्षसि गोमतः । पुनान इन्दविन्द्रयुः ॥

१७७० ओ३म् परि धामानि यानि ते त्वं सोमासि विश्वतः । पवमान ऋतुभिः कवे ॥

१७७१ ओ३म् परि प्रासिष्यदत्कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः । कारं बिभ्रत्पुरुस्पृहम् ॥

१७७२ ओ३म् परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः । सुवानो याति कविक्रतुः ॥

१७७३ ओ३म् परि यो रोदसी उभे सद्यो वाजेभिरर्षति । मदेषु सर्वधा असि ॥

१७७४ ओ३म् परि वाजे न वाजयुमव्यो वारेषु सिञ्चत । इन्द्राय मधुमत्तमम् ॥

१७७५ ओ३म् परि विश्वानि चेतसा मृशसे पवसे मती । स नः सोम श्रवो विदः ॥

१७७६ ओ३म् परि सोम ऋतं बृहदाशुः पवित्रे अर्षति । विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥

१७७७ ओ३म् परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः । वृष्टिं दिवः परि स्रव ॥

१७७८ ओ३म् परीतो वायवे सुतं गिर इन्द्राय मत्सरम् । अव्यो वारेषु सिञ्चत ॥

१७७९ ओ३म् पवते हर्यतो हरिर्गृणानो जमदग्निना । हिन्वानो गोरधि त्वचि ॥

१७८० ओ३म् पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः । गृणाना देववीतये ॥

१७८१ ओ३म् पवमान ऋतं बृहच्छुक्रं ज्योतिरजीजनत् । कृष्णा तमांसि जङ्घनत् ॥

१७८२ ओ३म् पवमान ऋतः कविः सोमः पवित्रमासदत् । दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥

१७८३ ओ३म् पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम दुष्टरम् । यो दूणाशो वनुष्यता ॥

१७८४ ओ३म् पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम सुश्रियम् । इन्दो सहस्रवर्चसम् ॥

१७८५ ओ३म् पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु नः ॥

१७८६ ओ३म् पवमानः सुतो नृभिः सोमो वाजमिवासरत् । चमूषु शक्मनासदम् ॥

१७८७ ओ३म् पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत । सुष्वाणं देववीतये ॥

१७८८ ओ३म् पवमानस्य जङ्घ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत । जीरा अजिरशोचिषः ॥

१७८९ ओ३म् पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत । अर्वन्तो न श्रवस्यवः ॥

१७९० ओ३म् पवमानस्य ते रसो मदो राजन्नदुच्छुनः । वि वारमव्यमर्षति ॥

१७९१ ओ३म् पवमानस्य विश्ववित्प्र ते सर्गा असृक्षत । सूर्यस्येव न रश्मयः ॥

१७९२ ओ३म् पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः । घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः ॥

१७९३ ओ३म् पवमानास इन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः । इन्द्रं यामेभिराशत ॥

१७९४ ओ३म् पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम् । ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥

१७९५ ओ३म् पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति । यदीमृण्वन्ति वेधसः ॥

१७९६ ओ३म् पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः । हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ॥

१७९७ ओ३म् पवस्व गोजिदश्वजिद्विश्वजित्सोम रण्यजित् । प्रजावद्रत्नमा भर ॥

१७९८ ओ३म् पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे । मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥

१७९९ ओ३म् पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने । विश्वा अप द्विषो जहि ॥

१८०० ओ३म् पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

१८०१ ओ३म् पुनाति ते परिस्रुतं सोमं सूर्यस्य दुहिता । वारेण शश्वता तना ॥

१८०२ ओ३म् पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः । शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥

१८०३ ओ३म् पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम् । द्युतानो वाजिभिर्यतः ॥

१८०४ ओ३म् पुनानो रूपे अव्यये विश्वा अर्षन्नभि श्रियः । शूरो न गोषु तिष्ठति ॥

१८०५ ओ३म् पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शम्बरम् । अध त्यं तुर्वशं यदुम् ॥

१८०६ ओ३म् पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शंबरम्। अध त्यं तुर्वशं यदुम्॥

१८०७ ओ३म् पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः। परि गव्यान्यव्यत॥

१८०८ ओ३म् पुनानासश्चमूषदो गच्छन्तो वायुमश्विना। ते नो धत्त सुवीर्यम्॥

१८०९ ओ३म् पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः। शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः॥

१८१० ओ३म् पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः। शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः॥

१८११ ओ३म् पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं जनाय गिर्वणः। हरे सृजान आशिरम्॥

१८१२ ओ३म् पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम्। द्युतानो वाजिभिर्हितः॥

१८१३ ओ३म् प्र गायत्रेण गायत पवमानं विचर्षणिम् । इन्दुं सहस्रचक्षसम् ॥

१८१४ ओ३म् प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः । अच्छा वाजं सहस्रिणम् ॥

१८१५ ओ३म् प्र त्वा नमोभिरिन्दव इन्द्र सोमा असृक्षत । महे भराय कारिणः ॥

१८१६ ओ३म् प्र धारा अस्य शुष्मिणो वृथा पवित्रे अक्षरन् । पुनानो वाचमिष्यति ॥

१८१७ ओ३म् प्र निम्नेनेव सिन्धवो घ्नन्तो वृत्राणि भूर्णयः । सोमा असृग्रमाशवः ॥

१८१८ ओ३म् प्र पुनानस्य चेतसा सोमः पवित्रे अर्षति । क्रत्वा सधस्थमासदत् ॥

१८१९ ओ३म् प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व सोम विश्वेभिरंशुभिः । देवेभ्य उत्तमं हविः ॥

१८२० ओ३म् प्र युजो वाचो अग्रियो वृषाव चक्रदद्वने । सद्माभि सत्यो अध्वरः ॥

१८२१ ओ३म् प्र ये गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः । घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥

१८२२ ओ३म् प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि । जिन्वन्कोशं मधुश्चुतम् ॥

१८२३ ओ३म् प्र वाजमिन्दुरिष्यति सिषासन्वाजसा ऋषिः । व्रता विदान आयुधा ॥

१८२४ ओ३म् प्र शुक्रासो वयोजुवो हिन्वानासो न सप्तयः । श्रीणाना अप्सु मृञ्जत ॥

१८२५ ओ३म् प्र सोम मधुमत्तमो राये अर्ष पवित्र आ । मदो यो देववीतमः ॥

१८२६ ओ३म् प्र सोम याहि धारया सुत इन्द्राय मत्सरः । दधानो अक्षिति श्रवः ॥

१८२७ ओ३म् प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः । श्रीणाना अप्सु मृञ्जत ॥

१८२८ ओ३म् प्रवृण्वन्तो अभियुजः सुष्वये वरिवोविदः । स्वयं स्तोत्रे वयस्कृतः ॥

१८२९ ओ३म् प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः । यदव्य एषि सानवि ॥

१८३० ओ३म् प्रास्य धारा अक्षरन्वृष्णः सुतस्याजसः। देवा२ अनु प्रभूषतः॥

१८३१ ओ३म् प्रेष्ठं वो अतिथिं२ स्तुषे मित्रमिव प्रियम्। अग्ने रथं न वेद्यम्॥

१८३२ ओ३म् प्र न इन्दो महे तु न ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि। अभि देवा२ अयास्यः॥

१८३३ ओ३म् प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय मादनः। नृभिर्यतो वि नीयसे॥

१८३४ ओ३म् प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः। श्रीणाना अप्सु वृञ्जते॥

१८३५ ओ३म् प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोना म् । सुता विदथे अक्र मुः॥

१८३६ ओ३म् प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम्। सुता विदथे अक्रमुः॥

१८३७ ओ३म् प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः। वनानि महिषा इव॥

१८३८ ओ३म् प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः। वनानि महिषा इव॥

१८३९ ओ३म् प्र कविर्देववीतयेऽव्या वारेभिरव्यत। साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः॥

१८४० ओ३म् प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः। अच्छा वाज२ सहस्रिणम्॥

१८४१ ओ३म् प्र युजा वाचो अग्रियो वृषो अचिक्रदद्वने। सद्माभि सत्यो अध्वरः॥

१८४२ ओ३म् प्र स्वानासो रथा इवार्वन्तो न श्रवस्यवः। सोमासो राये अक्रमुः॥

१८४३ ओ३म् प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहः। वीत्यर्ष पनिष्टये॥

१८४४ ओ३म् प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः। यदव्य एषि सानवि॥

१८४५ ओ३म् प्र धारा मधो अग्रियो महीरपो वि गाहते। हविर्हविःषु वन्द्यः॥

१८४६ ओ३म् प्र यद्गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः । घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम्॥

१८४७ ओ३म् प्र यद्गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः। घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम्॥

१८४८ ओ३म् प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि। जिन्वन्कोशं मधुश्चुतम्॥

१८४९ ओ३म् परि द्युक्षꣳ सनद्रयिं भरद्वाजं नो अन्धसा। स्वानो अर्ष पवित्र आ॥

१८५० ओ३म् परि नः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः। सरा रसेव विष्टपम्॥

१८५१ ओ३म् परि नो अश्वमश्वविद्गोमदिन्दो हिरण्यवत्। क्षरा सहस्रिणीरिषः॥

१८५२ ओ३म् परि प्रिया दिवः कविर्वयाꣳसि नप्त्योर्हितः। स्वानैर्याति कविक्रतु॥

१८५३ ओ३म् परि प्रिया दिवः कविर्वयाꣳ सि नप्त्योर्हितः। स्वानैर्याति कविक्रतुः॥

१८५४ ओ३म् परि विश्वानि चेतसा मृज्यसे पवसे मती। स नः सोम श्रवो विदः॥

१८५५ ओ३म् परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा। मधो अर्षन्ति धारया॥

१८५६ ओ३म् परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा। मधो अर्षन्ति धारया॥

१८५७ ओ३म् परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्। मदेषु सर्वधा असि॥

१८५८ ओ३म् पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

१८५९ ओ३म् पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः। गृणाना देववीतये॥

१८६० ओ३म् पवमान धिया हितोऽभि योनिं कनिक्रदत्। धर्मणा वायुमारुहः॥

१८६१ ओ३म् पवमान रुचारुचा देवो देवेभ्यः सुतः। विश्वा वसून्या विश॥

१८६२ ओ३म् पवमान सुवीर्यꣳ रयिꣳ सोम रिरीहि नः। इन्द्रविन्द्रेण नो युजा॥

१८६३ ओ३म् पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत। सुष्वाणं देववीतये॥

१८६४ ओ३म् पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत । अर्वन्तो न श्रवस्यवः॥

१८६५ ओ३म् पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः। सखित्वमा वृणीमहे॥

१८६६ ओ३म् पवमानस्य ते रसो दक्षो वि राजति द्युमान्। ज्योतिर्विश्वꣳ स्वर्दृशे॥

१८६७ ओ३म् पवमानस्य विश्ववित्प्र ते सर्गा असृक्षत। सूर्यस्येव न रश्मयः॥

१८६८ ओ३म् पवमानस्य जिघ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत। जीरा अजिरशोचिषः॥

१८६९ ओ३म् पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः। अभि विश्वानि काव्या॥

१८७० ओ३म् पवमाना दिवस्पर्यन्तरिक्षादसृक्षत। पृथिव्या अधि सानवि॥

१८७१ ओ३म् पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः। घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः॥

१८७२ ओ३म् पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत्॥

१८७३ ओ३म् पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत्॥

१८७४ ओ३म् पवमानो असिष्यदद्रक्षाꣳ स्यपजङ्घनत्। प्रत्नवद्रोचयन्रुचः॥

१८७५ ओ३म् पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति। यदीमृण्वन्ति वेधसः॥

१८७६ ओ३म् पवमान नि तोशसे रयिꣳ सोम श्रवाय्यम्। इन्दो समुद्रमा विश॥

१८७७ ओ३म् पवमान रसस्तव मदो राजन्नदुच्छुनः। वि वारमव्यमर्षति॥

१८७८ ओ३म् पवमान व्यश्नुहि रश्मिभिर्वाजसातमः। दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम्॥

१८७९ ओ३म् पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः॥

१८८० ओ३म् पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः॥

१८८१ ओ३म् पवस्व देववीरति पवित्रꣳ सोम रꣳह्या। इन्द्रमिन्दो वृषा विश॥

१८८२ ओ३म् पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः। वायुमा रोह धर्मणा॥

१८८३ ओ३म् पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः। वायुमा रोह धर्मणा॥

१८८४ ओ३म् पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः। अभि विश्वानि काव्या॥

१८८५ ओ३म् पवस्व विश्वचर्षण आ मही रोदसी पृण। उषाः सूर्यो न रश्मिभिः॥

१८८६ ओ३म् पवस्व वृत्रहन्तम उक्थेभिरनुमाद्यः। शुचिः पावको अद्भुतः॥

१८८७ ओ३म् पवस्व वृष्टिमा सु नोऽपामूर्मिं दिवस्परि। अयक्ष्मा बृहतीरिषः॥

१८८८ ओ३म् पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने। विश्वा अप द्विषो जहि॥

१८८९ ओ३म् पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने। विश्वा अप द्विषो जहि॥

१८९० ओ३म् परि प्रासिष्यदत्कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः। कारुं बिभ्रत्पुरुस्पृहम्॥

१८९१ ओ३म् परि यत्काव्या कविर्नृम्णा पुनानो अर्षति। स्वर्वाजी सिषासति॥

१८९२ ओ३म् परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः। पृष्टिं दिवः परि स्रव॥

१८९३ ओ३म् पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः। हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः॥

१८९४ ओ३म् बभ्रवे नु स्वतवसेऽरुणाय दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत॥

१८९५ ओ३म् मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः । इन्दो सखायमा विश ॥

१८९६ ओ३म् मती जुष्टो धिया हितः सोमो हिन्वे परावति । विप्रस्य धारया कविः ॥

१८९७ ओ३म् मधोर्धारामनु क्षर तीव्रः सधस्थमासदः । चारुर्ऋताय पीतये ॥

१८९८ ओ३म् मर्मृजानास आयवो वृथा समुद्रमिन्दवः । अग्मन्नृतस्य योनिमा ॥

१८९९ ओ३म् महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः । रास्वेन्दो वीरवद्यशः ॥

१९०० ओ३म् मिमाति वह्निरेतशः पदं युजान ऋक्वभिः । प्र यत्समुद्र आहितः ॥

१९०१ ओ३म् मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः । अनु विप्रा अमादिषुः ॥

१९०२ ओ३म् मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः। अनु विप्रा अमादिषुः॥

१९०३ ओ३म् मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भवो वाजानां पते। मत्स्वा सुतस्य गोमतः॥

१९०४ ओ३म् मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः। इन्दो सखायमा विश॥

१९०५ ओ३म् मदच्युत्क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित्। सोमो गौरी अधि श्रितः॥

१९०६ ओ३म् मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः । अव्या वारेभिरस्मयुः॥

१९०७ ओ३म् महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः। यद्गोभिर्वासयिष्यसे॥

१९०८ ओ३म् महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः। रास्वेन्दो वीरवद्यशः॥

१९०९ ओ३म् य इमे रोदसी मही सं मातरेव दोहते । मदेषु सर्वधा असि ॥

१९१० ओ३म् यः सोमः कलशेष्वा अन्तः पवित्र आहितः। तमिन्दुः परि षस्वजे॥

१९११ ओ३म् यत्सोमो वाजमर्षति शतं धारा अपस्युवः । इन्द्रस्य सख्यमाविशन् ॥

१९१२ ओ३म् यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह । पवमान वि तज्जहि ॥

१९१३ ओ३म् यमत्यमिव वाजिनं मृजन्ति योषणो दश । वने क्रीळन्तमत्यविम् ॥

१९१४ ओ३म् यवंयवं नो अन्धसा पुष्टम्पुष्टं परि स्रव । सोम विश्वा च सौभगा ॥

१९१५ ओ३म् यस्य ते द्युम्नवत्पयः पवमानाभृतं दिवः । तेन नो मृळ जीवसे ॥

१९१६ ओ३म् या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे। रक्षा समस्य नो निदः॥

१९१७ ओ३म् यास्ते धारा मधुश्चुतोऽसृग्रमिन्द ऊतये। ताभिः पवित्रमासदः॥

१९१८ ओ३म् युवꣳ हि स्थः स्वःपती इन्द्रश्च सोम गोपती। ईशाना पिप्यतं धियः ॥

१९१९ ओ३म् ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । ये वादः शर्यणावति ॥

१९२० ओ३म् ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया। तेभिर्नः सोम मृडय॥

१९२१ ओ३म् ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे। ये वादः शर्यणावति॥

१९२२ ओ३म् यो अत्य इव मृज्यते गोभिर्मदाय हर्यतः । तं गीर्भिर्वासयामसि ॥

१९२३ ओ३म् यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः। इन्दुरश्वो न कृत्व्यः॥

१९२४ ओ३म् यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य। स पवस्व सहस्रजित्॥

१९२५ ओ३म् य आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम्। ये वा जनेषु पञ्चसु॥

१९२६ ओ३म् यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु। तन्नः पुनान आ भर॥

१९२७ ओ३म् यवंयवं नो अन्धसा पुष्टंपुष्टं परि स्रव। विश्वा च सोम सौभगा॥

१९२८ ओ३म् यस्य ते सख्ये वयꣳ सासह्याम पृतन्यतः। तवेन्दो द्युम्न उत्तमे॥

१९२९ ओ३म् यदद्भिः परिषि(शि)च्यसे मर्मृज्यमान आयुभिः। द्रोणे सधस्थमश्नुषे॥

१९३० ओ३म् यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा। देवावीरघश२ं सहा॥

१९३१ ओ३म् यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा। देवावीरघश२ं सहा॥

१९३२ ओ३म् रक्षा सु नो अररुषः स्वनात्समस्य कस्य चित् । निदो यत्र मुमुच्महे ॥

१९३३ ओ३म् रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहतम् । द्रुणा सधस्थमासदत् ॥

१९३४ ओ३म् रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

१९३५ ओ३म् रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्ति वरुणः कवे । पवमानस्य मरुतः ॥

१९३६ ओ३म् राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे ॥

१९३७ ओ३म् राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते । यज्ञो न सप्त धातृभिः ॥

१९३८ ओ३म् राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि। अन्तरिक्षेण यातवे॥

१९३९ ओ३म् राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते। यज्ञोउ न सप्त धातृभिः॥

१९४० ओ३म् रायः समुद्रा२ं श्चतुरोऽस्मभ्य२ं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणः॥

१९४१ ओ३म् रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्तु वरुणः कवे। पवमानस्य मरुतः॥

१९४२ ओ३म् रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्॥

१९४३ ओ३म् रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

१९४४ ओ३म् वावृधानाय तूर्वये पवन्ते वाजसातये । सोमाः सहस्रपाजसः ॥

१९४५ ओ३म् वाश्रा अर्षन्तीन्दवोऽभि वत्सं न मातरः। दधन्विरे गभस्त्योः॥

१९४६ ओ३म् विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः । तना कृण्वन्तो अर्वते ॥

१९४७ ओ३म् विश्वो यस्य व्रते जनो दाधार धर्मणस्पतेः । पुनानस्य प्रभूवसोः ॥

१९४८ ओ३म् विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे साधारण२ रजस्तुरम्। गोपामृतस्य विर्भरत्॥

१९४९ ओ३म् विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः। त्मना कृण्वन्तो अर्वतः॥

१९५० ओ३म् वृषणं धीभिरप्तुरं सोममृतस्य धारया । मती विप्राः समस्वरन् ॥

१९५१ ओ३म् वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः । विश्वा दधान ओजसा ॥

१९५२ ओ३म् वृषा पुनान आयुषु स्तनयन्नधि बर्हिषि । हरिः सन्योनिमासदत् ॥

१९५३ ओ३म् वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः । वृषा धर्माणि दधिषे ॥

१९५४ ओ३म् वृषाणं वृषभिर्यतं सुन्वन्ति सोममद्रिभिः । दुहन्ति शक्मना पयः ॥

१९५५ ओ३म् वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा॥

१९५६ ओ३म् वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा॥

१९५७ ओ३म् वृषा पुनान आयू२ षि स्तनयन्नधि बर्हिषि। हरिः सन्योनिमासदः॥

१९५८ ओ३म् वृषा सोम द्युमा२ असि वृषा देव वृषव्रतः। वृषा धर्माणि दध्रिषे॥

१९५९ ओ३म् वृषा सोम द्युमा२ असि वृषा देव वृषव्रतः। वृषा धर्माणि दध्रिषे॥

१९६० ओ३म् वृष्णस्ते वृष्ण्य२ शवो वृषा वनं वृषा सुतः। स त्वं वृषन्वृषेदसि॥

१९६१ ओ३म् वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वर्दृशम्॥

१९६२ ओ३म् वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वर्दृशम्॥

१९६३ ओ३म् वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि। सहो नः सोम पृत्सु धाः॥

१९६४ ओ३म् वरिवोधातमो भुवो म२ हिष्ठो वृत्रहन्तमः। पर्षि राधो मघोनाम्॥

१९६५ ओ३म् शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धूतो नृभिः सुतः । स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥

१९६६ ओ३म् शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतः स मधुमान्। देवावीरघश२ सहा॥

१९६७ ओ३म् शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धौतं नृभिः सुतम्। स्वदन्ति गावः पयोभिः॥

१९६८ ओ३म् शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः। पवन्ते वारे अव्यये॥

१९६९ ओ३म् शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः । चरन्ति विद्युतो दिवि ॥

१९७० ओ३म् शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः। चरन्ति विद्युतो दिवि॥

१९७१ ओ३म् स नः पवस्व वाजयुश्चक्राणश्चारुमध्वरम् । बर्हिष्माँ आ विवासति ॥

१९७२ ओ३म् स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम् । ईशानः सोम विश्वतः ॥

१९७३ ओ३म् स नो अद्य वसुत्तये क्रतुविद्गातुवित्तमः । वाजं जेषि श्रवो बृहत् ॥

१९७४ ओ३म् स नो अर्ष पवित्र आ मदो यो देववीतमः । इन्दविन्द्राय पीतये ॥

१९७५ ओ३म् स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान् । चारुर्मित्रे वरुणे च ॥

१९७६ ओ३म् स नो भगाय वायवे विप्रवीरः सदावृधः । सोमो देवेष्वा यमत् ॥

१९७७ ओ३म् स पवस्व धनंजय प्रयन्ता राधसो महः । अस्मभ्यं सोम गातुवित् ॥

१९७८ ओ३म् स पवस्व मदाय कं नृचक्षा देववीतये । इन्दविन्द्राय पीतये ॥

१९७९ ओ३म् स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः । इन्दविन्द्राय पीतये ॥

१९८० ओ३म् स पवस्व विचर्षण आ मही रोदसी पृण । उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥

१९८१ ओ३म् स पवित्रे विचक्षणो हरिरर्षति धर्णसिः । अभि योनिं कनिक्रदत् ॥

१९८२ ओ३म् स मर्मृजान आयुभिः प्रयस्वान्प्रयसे हितः । इन्दुरत्यो विचक्षणः ॥

१९८३ ओ३म् स मर्मृजान आयुभिरिभो राजेव सुव्रतः । श्येनो न वंसु षीदति ॥

१९८४ ओ३म् स वह्निः सोम जागृविः पवस्व देववीरति । अभि कोशं मधुश्चुतम् ॥

१९८५ ओ३म् स वाजी रोचना दिवः पवमानो वि धावति । रक्षोहा वारमव्ययम् ॥

१९८६ ओ३म् स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति । रणा यो अस्य धर्मभिः ॥

१९८७ ओ३म् स सप्त धीतिभिर्हितो नद्यो अजिन्वदद्रुहः । या एकमक्षि वावृधुः ॥

१९८८ ओ३म् स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति । विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥

१९८९ ओ३म् स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इळानाम् । सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥

१९९० ओ३म् स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत् । महान्मही ऋतावृधा ॥

१९९१ ओ३म् स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति । पवमानः सहस्रिणम् ॥

१९९२ ओ३म् सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः । वृत्रहा देववीतमः ॥

१९९३ ओ३म् संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं महामहिव्रतं मदम्। शतं पुरो रुरुक्षणिम्॥

१९९४ ओ३म् सं देवैः शोभते वृषा कविउयोनावधि प्रियः। पवमानो अदाभ्यः॥

१९९५ ओ३म् सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

१९९६ ओ३म् सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

१९९७ ओ३म् समी सखायो अस्वरन्वने क्रीळन्तमत्यविम् । इन्दुं नावा अनूषत ॥

१९९८ ओ३म् समीचीनास आसते होतारः सप्तजामयः । पदमेकस्य पिप्रतः ॥

१९९९ ओ३म् समु त्वा धीभिरस्वरन्हिन्वतीः सप्त जामयः । विप्रमाजा विवस्वतः ॥

२००० ओ३म् समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः । सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥

२००१ ओ३म् समेनमह्रुता इमा गिरो अर्षन्ति सस्रुतः । धेनूर्वाश्रो अवीवशत् ॥

२००२ ओ३म् सम्मिश्लो अरुषो भव सूपस्थाभिर्न धेनुभिः । सीदञ्छ्येनो न योनिमा ॥

२००३ ओ३म् सहस्रोतिः शतामघो विमानो रजसः कविः । इन्द्राय पवते मदः ॥

२००४ ओ३म् सुत इन्द्राय विष्णवे सोमः कलशे अक्षरत् । मधुमाँ अस्तु वायवे ॥

२००५ ओ३म् सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा । विचक्षाणो विरोचयन् ॥

२००६ ओ३म् सुनोता मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे । चारुं शर्धाय मत्सरम् ॥

२००७ ओ३म् सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः। सोमा अर्षन्तु विष्णवे॥

२००८ ओ३म् सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा। विचक्षाणो विरोचयन्॥

२००९ ओ३म् सुवितस्य वनामहेऽति सेतुं दुराय्यम्। साह्याम दस्युमव्रतम्॥

२०१० ओ३म् सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो। वर्धा समुद्रमुक्थ्य॥

२०११ ओ३म् सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः । वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् ॥

२०१२ ओ३म् सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य सादने । इन्द्राय मधुमत्तमाः ॥

२०१३ ओ३म् सोमो अर्षति धर्णसिर्दधान इन्द्रियं रसम् । सुवीरो अभिशस्तिपाः ॥

२०१४ ओ३म् सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः। वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम्॥

२०१५ ओ३म् सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य धारया। इन्द्राय मधुमत्तमाः॥

२०१६ ओ३म् सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो वाराण्यव्यया। सीदन्नृतस्य योनिमा॥

२०१७ ओ३म् स्वयं कविर्विधर्तरि विप्राय रत्नमिच्छति । यदी मर्मृज्यते धियः ॥

२०१८ ओ३म् स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः ॥

२०१९ ओ३म् स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः॥

२०२० ओ३म् स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः॥

२०२१ ओ३म् स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। श२ राजन्नोषधीभ्यः॥

२०२२ ओ३म् स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम् । ईशानः सोम विश्वतः॥

२०२३ ओ३म् स न ऊर्जे व्यक्ऽ.व्ययं पवित्रं धाव धारया। देवासः शृणवन् हि कम्॥

२०२४ ओ३म् स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः। एन्द्रस्य जठरं विश॥

२०२५ ओ३म् स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे। वव्रिवा२ सं महीरपः॥

२०२६ ओ३म् स मर्मृजान आयुभिरिभो राजेव सुव्रतः। श्येनो न व२ सु षीदति॥

२०२७ ओ३म् स वृत्रहा वृषा सुतो वरिवोविददाभ्यः। सोमो वाजमिवासरत्॥

२०२८ ओ३म् स वह्निरप्सु दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः। सोमश्चमूषु सीदति॥

२०२९ ओ३म् स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति। पवमानः सहस्रिणम्॥

२०३० ओ३म् सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

२०३१ ओ३म् सप्तिं मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा। ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम्॥

२०३२ ओ३म् समिन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ। स२ सूर्यस्य रश्मिभिः॥

२०३३ ओ३म् सम्मिश्लो अरुषो भुवः सूपस्थाभिर्न धेनुभिः । सीदं च्छ्येनो न योनिमा॥

२०३४ ओ३म् स त्रितस्याधि सानवि पवमानो अरोचयत्। जामिभिःसूर्य२ सह॥

२०३५ ओ३म् स देवः कविनेषितोऽभि द्रोणानि धावति। इन्दुरिन्द्राय म२ हयन्॥

२०३६ ओ३म् स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान्। चारुर्मित्रे वरुणे च॥

२०३७ ओ३म् स नो विश्वा दिवो वसूतो पृथिव्या अधि। पुनान इन्दवा भर॥

२०३८ ओ३म् स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परि स्रव॥

२०३९ ओ३म् स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परिस्रव॥

२०४० ओ३म् स पवित्रे विचक्षणो हरिरर्षति धर्णसिः। अभि योनिं कनिक्रदत्॥

२०४१ ओ३म् स वाजी रोचनं दिवः पवमानो वि धावति। रक्षोहा वारमव्ययम्॥

२०४२ ओ३म् स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति। रणा यो अस्य धर्मणा॥

२०४३ ओ३म् स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति। विघ्नन्रक्षा२ सि देवयुः॥

२०४४ ओ३म् स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत्। महान्मही ऋतावृधा॥

२०४५ ओ३म् सना ज्योतिः सना स्वाऽविश्वा च सोम सौभगा। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

२०४६ ओ३म् सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

२०४७ ओ३म् समीचीना अनूषत हरि२ हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये॥

२०४८ ओ३म् समीचीनास आशत होतारः सप्तजानयः। पदमेकस्य पिप्रतः॥

२०४९ ओ३म् समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः। सोमः पवित्रे अस्मयुः॥

२०५० ओ३म् हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन । मधावा धावता मधु ॥

२०५१ ओ३म् हिन्वन्ति सूरमुस्रयः पवमानं मधुश्चुतम् । अभि गिरा समस्वरन् ॥

२०५२ ओ३म् हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम् । महामिन्दुं महीयुवः ॥

२०५३ ओ३म् हिन्वानासो रथा इव दधन्विरे गभस्त्योः। भरासः कारिणामिव॥

२०५४ ओ३म् हिन्वानो हेतृभिर्हित आ वाजं वाज्यक्रमीत्। सीदन्तो वनुषो यथा॥

२०५५ ओ३म् हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम्। महामिन्दुं महीयुवः॥

२०५६ ओ३म् हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतꣳ सोमं पुनीतन। मधावा धावता मधु॥

66. पूजा देवता

२०५७ ओ३म् पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन। स्तोतारस्तऽइह स्मसि ॥

67. पूषा 34

२०५८ ओ३म् अति नः सश्चतो नय सुगा नः सुपथा कृणु । पूषन्निह क्रतुं विदः ॥

२०५९ ओ३म् अदित्सन्तं चिदाघृणे पूषन्दानाय चोदय । पणेश्चिद्वि म्रदा मनः ॥

२०६० ओ३म् अधा नो विश्वसौभग हिरण्यवाशीमत्तम । धनानि सुषणा कृधि ॥

२०६१ ओ३म् अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम् । दूरमधि स्रुतेरज ॥

२०६२ ओ३म् अभि सूयवसं नय न नवज्वारो अध्वने । पूषन्निह क्रतुं विदः ॥

२०६३ ओ३म् आ तत्ते दस्र मन्तुमः पूषन्नवो वृणीमहे । येन पितृनचोदयः ॥

२०६४ ओ३म् आ पूषञ्चित्रबर्हिषमाघृणे धरुणं दिवः । आजा नष्टं यथा पशुम् ॥

२०६५ ओ३म् आ रिख किकिरा कृणु पणीनां हृदया कवे । अथेमस्मभ्यं रन्धय ॥

२०६६ ओ३म् आजासः पूषणं रथे निशृम्भास्ते जनश्रियम् । देवं वहन्तु बिभ्रतः ॥

२०६७ ओ३म् इमं च नो गवेषणं सातये सीषधो गणम् । आरात्पूषन्नसि श्रुतः ॥

२०६८ ओ३म् इयं ते पूषन्नाघृणे सुष्टुतिर्देव नव्यसी । अस्माभिस्तुभ्यं शस्यते ॥

२०६९ ओ३म् उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत । नृवत्कृणुहि वीतये ॥

२०७० ओ३म् उतो स मह्यमिन्दुभिः षड्युक्ताँ अनुसेषिधत् । गोभिर्यवं न चर्कृषत् ॥

२०७१ ओ३म् उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत। नृवत्कृणुह्यूतये॥

२०७२ ओ३म् एहि वां विमुचो नपादाघृणे सं सचावहै । रथीऋृतस्य नो भव ॥

२०७३ ओ३म् तां जुषस्व गिरं मम वाजयन्तीमवा धियम् । वधूयुरिव योषणाम् ॥

२०७४ ओ३म् न पूषणं मेथामसि सूक्तैरभि गृणीमसि । वसूनि दस्ममीमहे ॥

२०७५ ओ३म् पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन । स्तोतारस्त इह स्मसि ॥

२०७६ ओ३म् पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वतः । अस्माकं स्तुवतामुत ॥

२०७७ ओ३म् पूषा राजानमाघृणिरपगूळ्हं गुहा हितम् । अविन्दच्चित्रबर्हिषम् ॥

२०७८ ओ३म् माकिर्नेशन्माकीं रिषन्माकीं सं शारि केवटे । अथारिष्टाभिरा गहि ॥

२०७९ ओ३म् मातुर्दिधिषुमब्रवं स्वसुर्जारः शृणोतु नः । भ्रातेन्द्रस्य सखा मम ॥

२०८० ओ३म् य एनमादिदेशति करम्भादिति पूषणम् । न तेन देव आदिशे ॥

२०८१ ओ३म् यद॒द्य त्वा॑ पुरुष्टुत॒ ब्रवा॑म दस्र मन्तुमः । तत्सु नो॒ मन्म॑ साधय ॥

२०८२ ओ३म् यो अ॑स्मै ह॒विषावि॑ध॒न्न तं पू॒षापि॑ मृष्यते । प्र॒थ॒मो वि॑न्दते॒ वसु॑ ॥

२०८३ ओ३म् यो नः॑ पूषन्न॒घो वृको॑ दुः॒शेव॑ आ॒दिदे॑शति । अप॑ स्म॒ तं प॒थो ज॑हि ॥

२०८४ ओ३म् यो विश्वा॒भि वि॒पश्य॑ति॒ भुव॑ना॒ सं च॒ पश्य॑ति । स नः॑ पूषावि॒ता भु॑वत् ॥

२०८५ ओ३म् र॒थीत॑मं कप॒र्दि॒नमीशा॑नं॒ राध॑सो म॒हः । रा॒यः सखा॑यमीमहे ॥

२०८६ ओ३म् व॒यमु॑ त्वा पथस्पते॒ रथं॒ न वाज॑सातये । धि॒ये पू॑षन्नयुज्महि ॥

२०८७ ओ३म् वि प॒थो वाज॑सातये चिनु॒हि वि मृधो॑ जहि । साध॑न्तामुग्र नो॒ धिय॑: ॥

२०८८ ओ३म् वि पू॑ष॒न्नार॑या तुद प॒णेरि॑च्छ हृ॒दि प्रि॒यम् । अथे॑म॒स्मभ्यं॑ रन्धय ॥

२०८९ ओ३म् शृ॒ण्वन्तं॑ पू॒षणं॑ व॒यमिर्य॒मन॑ष्टवेदसम् । ईशा॑नं रा॒य ईमहे ॥

२०९० ओ३म् सं पू॑षन्वि॒दुषा॑ नय॒ यो अ॒ञ्जसा॑नु॒शास॑ति । य ए॒वेदमिति॒ ब्रव॑त् ॥

२०९१ ओ३म् समु॑ पू॒ष्णा गमे॑महि॒ यो गृ॒हाँ अ॑भि॒शास॑ति । इ॒म ए॒वेति॑ च॒ ब्रव॑त् ॥

68. पृथुश्रवसः कानीतस्य दानस्तुतिः 1

२०९२ ओ३म् दश॑ श्या॒वा ऋ॒धद्र॑यो वी॒तवा॑रास आ॒शव॑: । म॒थ्रा ने॒मिं नि वा॑वृतुः ॥

69. प्रस्कण्वस्य दानस्तुतिः 3

२०९३ ओ३म् दश॒ मह्यं॑ पौतक्र॒तः स॒हस्रा॒ दस्य॑वे॒ वृक॑: । नित्या॑द्रा॒यो अ॑मंहत ॥

२०९४ ओ३म् श॒तं श्वेता॑स उ॒क्षणो॑ दि॒वि तारो॒ न रो॑चन्ते । म॒ह्ना दि॒वं न त॑स्तभुः ॥

२०९५ ओ३म् सु॒दे॒वाः स्थ॑ काण्वायना॒ वयो॑वयो विच॒रन्त॑: । अश्वा॑सो॒ न च॑ङ्क्रमत ॥

70. फालमणिः, वनस्पतिः 3

२०९६ ओ३म् अरातीयोर्भ्रातृव्यस्य दुर्हार्दो द्विषतः शिरः। अपि वृश्चाम्योजसा ॥

२०९७ ओ३म् तं धाता प्रत्यमुञ्चत स भूतं व्य१कल्पयत्। तेन त्वं द्विषतो जहि ॥

२०९८ ओ३म् हिरण्यस्रगयं मणिः श्रद्धां यज्ञं महो दधत्। गृहे वसतु नोऽतिथिः ॥

71. बर्हिः 1

२०९९ ओ३म् स्तृणीत बर्हिरानुषग्घृतपृष्ठं मनीषिणः । यत्रामृतस्य चक्षणम् ॥

72. बृबुस्तक्षा 1

२१०० ओ३म् यस्य वायोरिव द्रवद्भद्रा रातिः सहस्रिणी । सद्यो दानाय मंहते ॥

73. बृहस्पतिर्देवता 1

२१०१ ओ३म् यो रेवान् योऽअमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्द्धनः। स नः सिषक्तु यस्तुरः ॥

74. ब्रह्मगवी 3

२१०२ ओ३म् अघ्न्ये प्र शिरो जहि ब्रह्मज्यस्य कृतागसो देवपीयोरराधसः ॥

२१०३ ओ३म् एवा त्वं देव्यघ्न्ये ब्रह्मज्यस्य कृतागसो देवपीयोरराधसः ॥

२१०४ ओ३म् सा ब्रह्मज्यं देवपीयुं ब्रह्मगव्या१दीयमाना मृत्योः पड्वीष आ द्यति ॥

75. ब्रह्मणस्पतिः 2

२१०५ ओ३म् यो रेवान्यो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः । स नः सिषक्तु यस्तुरः ॥

२१०६ ओ३म् सोमानां स्वरणं । कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तँ य औशिजः॥

76. मन्त्रोक्ताः 1

२१०७ ओ३म् अपिं वृश्च पुराणवद्व्रततेंरिव गुष्पितम्। ओजों दास्यस्यं दम्भय ॥

77. मरुतः 8

२१०८ ओ३म् अस्ति सोमो अयꣳ सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः। उत स्वराजो अश्विना॥

२१०९ ओ३म् आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे। दधाना नाम यज्ञियम्॥

२११० ओ३म् उद्‌ त्ये सूनवो गिरः काष्ठा यज्ञेष्वत्नत। वाश्रा अभिज्ञु यातवे॥

२१११ ओ३म् उतो न्वस्य जोषमा इन्द्रः सुतस्य गोमतः। प्रातर्होतेव मत्सति॥

२११२ ओ३म् गौर्धयति मरुताꣳ श्रवस्युर्माता मघोनाम्।। युक्ता वह्नी रथानाम्॥

२११३ ओ३म् पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः। त्रिषधस्थस्य जावतः॥

२११४ ओ३म् प्रघासिनों हवामहे मरुतंश्च रिशादंसः। करम्भेणं सजोषंसः ॥

२११५ ओ३म् शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः। विदा कामस्य वेनतः॥

78. मरूतः 58

२११६ ओ३म् अच्छां वदा तनां गिरा जरायै ब्रह्मंणस्पतिंम् । अग्निं मित्रं न दंर्शतम् ॥

२११७ ओ३म् अतं: परिज्मन्ना गंहि दिवो वां रोचनादधिं । समंस्मिन्नृञ्जते गिरं: ॥

२११८ ओ३म् अस्य वीरस्यं बर्हिषिं सुतः सोमो दिविंष्टिषु । उक्थं मदंश्च शस्यते ॥

२११९ ओ३म् आ नो रयिं मदच्युतं पुरुक्षुं विश्वधायसम् । इयर्ता मरुतो दिवः ॥

२१२० ओ३म् आ यात मरुतो दिव आन्तरिक्षादमादुत । माव स्थात परावतः ॥

२१२१ ओ३म् आ ये विश्वा पार्थिवानि पप्रथन्रोचना दिवः । मरुतः सोमपीतये ॥

२१२२ ओ३म् आरे सा वः सुदानवो मरुत ऋञ्जती शरुः । आरे अश्मा यमस्यथ ॥

२१२३ ओ३म् इमा उ वः सुदानवो घृतं न पिप्युषीरिषः । वर्धान्काण्वस्य मन्मभिः ॥

२१२४ ओ३म् इमां मे मरुतो गिरमिमं स्तोममृभुक्षणः । इमं मे वनता हवम् ॥

२१२५ ओ३म् उदीरयन्त वायुभिर्वाश्रासः पृश्निमातरः । धुक्षन्त पिप्युषीमिषम् ॥

२१२६ ओ३म् उदु त्ये अरुणप्सवश्चित्रा यामेभिरीरते । वाश्रा अधि ष्णुना दिवः ॥

२१२७ ओ३म् उदु स्वानेभिरीरत उद्रथैरुदु वायुभिः । उत्स्तोमैः पृश्निमातरः ॥

२१२८ ओ३म् कदत्विषन्त सूरयस्तिर आप इव स्रिधः । अर्षन्ति पूतदक्षसः ॥

२१२९ ओ३म् कदा गच्छाथ मरुत इत्था विप्रं हवमानम् । मार्डीकेभिर्नाधमानम् ॥

२१३० ओ३म् कद्ध नूनं कधप्रियः पिता पुत्रं न हस्तयोः । दधिध्वे वृक्तबर्हिषः ॥

२१३१ ओ३म् कद्ध नूनं कधप्रियो यदिन्द्रमजहातन । को वः सखित्व ओहते ॥

२१३२ ओ३म् कस्मा अद्य सुजाताय रातहव्याय प्र ययुः । एना यामेन मरुतः ॥

२१३३ ओ३म् के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमा य एकएक आयय । परमस्याः परावतः ॥

२१३४ ओ३म् को वेद नूनमेषां यत्रा मदन्ति धूतयः । ऋतजाता अरेपसः ॥

२१३५ ओ३म् को वो वर्षिष्ठ आ नरो दिवश्च ग्मश्च धूतयः । यत्सीमन्तं न धूनुथ ॥

२१३६ ओ३म् क्रीळं वः शर्धो मारुतमनर्वाणं रथेशुभम् । कण्वा अभि प्र गायत ॥

२१३७ ओ३म् क्व१ वोऽश्वाः क्वा३भीशवः कथं शेक कथा यय । पृष्ठे सदो नसोर्यमः ॥

२१३८ ओ३म् गिरयश्चिन्नि जिहते पर्शानासो मन्यमानाः । पर्वताश्चिन्नि येमिरे ॥

२१३९ ओ३म् गृहमेधास आ गत मरुतो माप भूतन । युष्माकोती सुदानवः ॥

२१४० ओ३म् जघने चोद एषां वि सक्थानि नरो यमुः । पुत्रकृथे न जनयः ॥

२१४१ ओ३म् तत्सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः । मरुतः सोमपीतये ॥

२१४२ ओ३म् तृणस्कन्दस्य नु विशः परि वृङ्क्त सुदानवः । ऊर्ध्वान्नः कर्त जीवसे ॥

२१४३ ओ३म् ते नो वसूनि काम्या पुरुश्चन्द्रा रिशादसः । आ यज्ञियासो ववृत्तन ॥

२१४४ ओ३म् त्रीणि सरांसि पृश्नयो दुदुह्रे वज्रिणे मधु । उत्सं कवन्धमुद्रिणम् ॥

२१४५ ओ३म् देवयन्तो यथा मतिमच्छा विदद्वसुं गिरः । महामनूषत श्रुतम् ॥

२१४६ ओ३म् नहि ष्म यद्ध वः पुरा स्तोमेभिर्वृक्तबर्हिषः । शर्धाँ ऋतस्य जिन्वथ ॥

२१४७ ओ३म् नि यद्यामाय वो गिरिर्नि सिन्धवो विधर्मणे । महे शुष्माय येमिरे ॥

२१४८ ओ३म् नि वो यामाय मानुषो दध्र उग्राय मन्यवे । जिहीत पर्वतो गिरिः ॥

२१४९ ओ३म् परा वीरास एतन मर्यासो भद्रजानयः । अग्नितपो यथासथ ॥

२१५० ओ३म् पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः । त्रिषधस्थस्य जावतः ॥

२१५१ ओ३म् प्र यद्वस्त्रिष्टुभमिषं मरुतो विप्रो अक्षरत् । वि पर्वतेषु राजथ ॥

२१५२ ओ३म् प्र वः शर्धाय घृष्वये त्वेषद्युम्नाय शुष्मिणे । देवत्तं ब्रह्म गायत ॥

२१५३ ओ३म् मरुतो यद्ध वो दिवः सुम्नायन्तो हवामहे । आ तू न उप गन्तन ॥

२१५४ ओ३म् मरुतो यद्ध वो बलं जनाँ अचुच्यवीतन । गिरीँरचुच्यवीतन ॥

२१५५ ओ३म् मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः । स सुगोपातमो जनः ॥

२१५६ ओ३म् मरुतो वीळुपाणिभिश्चित्रा रोधस्वतीरनु । यातेमखिद्रयामभिः ॥

२१५७ ओ३म् य ईं वहन्त आशुभिः पिबन्तो मदिरं मधु । अत्र श्रवांसि दधिरे ॥

२१५८ ओ३म् यदेषां पृषती रथे प्रष्टिर्वहति रोहितः । यान्ति शुभ्रा रिणन्नपः ॥

२१५९ ओ३म् युवा स मारुतो गणस्त्वेषरथो अनेद्यः । शुभंयावाप्रतिष्कुतः ॥

२१६० ओ३म् यूयं तत्सत्यशवस आविष्कर्त महित्वना । विध्यता विद्युता रक्षः ॥

२१६१ ओ३म् यूयं मर्तं विपन्यवः प्रणेतार इत्था धिया । श्रोतारो यामहूतिषु ॥

२१६२ ओ३म् यूयं हि ष्ठा सुदानवो रुद्रा ऋभुक्षणो दमे । उत प्रचेतसो मदे ॥

२१६३ ओ३म् ये पृषतीभिर्ऋष्टिभिः साकं वाशीभिरञ्जिभिः । अजायन्त स्वभानवः ॥

२१६४ ओ३म् येनाव तुर्वशं यदुं येन कण्वं धनस्पृतम् । राये सु तस्य धीमहि ॥

२१६५ ओ३म् येषां श्रियाधि रोदसी विभ्राजन्ते रथेष्वा । दिवि रुक्म इवोपरि ॥

२१६६ ओ३म् येषामज्मेषु पृथिवी जुजुर्वाँ इव विश्पतिः । भिया यामेषु रेजते ॥

२१६७ ओ३म् वन्दस्व मारुतं गणं त्वेषं पनस्युमर्किणम् । अस्मे वृद्धा असन्निह ॥

२१६८ ओ३म् वपन्ति मरुतो मिहं प्र वेपयन्ति पर्वतान् । यद्यामं यान्ति वायुभिः ॥

२१६९ ओ३म् वाश्रेव विद्युन्मिमाति वत्सं न माता सिषक्ति । यदेषां वृष्टिरसर्जि ॥

२१७० ओ३म् शशमानस्यं वा नरः स्वेदंस्य सत्यशवसः । विदा कामंस्य वेनंतः ॥

२१७१ ओ३म् सहो षु णो वज्रंहस्तैः कण्वांसो अग्निं मरुद्भिः । स्तुषे हिरंण्यवाशीभिः ॥

२१७२ ओ३म् सांतपना इदं हविर्मरुतस्तज्जुजुष्टन । युष्माकोती रिंशादसः ॥

२१७३ ओ३म् सृजन्तिं रश्मिमोजंसा पन्थां सूर्याय यातंवे । ते भानुभिर्वि तंस्थिरे ॥

79. मरूत इन्द्रश्च 2

२१७४ ओ३म् इन्द्रेंण सं हि दृक्षंसे संजग्मानो अबिंभ्युषा । मन्दू संमानवंर्चसा ॥

२१७५ ओ३म् वीळु चिंदारुजत्नुभिर्गुहां चिदिन्द्र वह्निंभिः । अविंन्द उस्रिया अनुं ॥

80. मरुद्गणः 7

२१७६ ओ३म् अतंः परिज्मन्ना गंहि दिवो वां रोचनादधिं। समंस्मिन्नृञ्जते गिरंः ॥

२१७७ ओ३म् अंनवद्यैरभिद्युंभिर्मखः सहंस्वदर्चति। गणैरिन्द्रंस्य काम्यैः ॥

२१७८ ओ३म् आदहं स्वधामनु पुनंर्गर्भत्वमेंरिरे। दधांना नामं यज्ञियंम् ॥

२१७९ ओ३म् आदहं स्वधामनु पुनंर्गर्भत्वमेंरिरे। दधांना नामं यज्ञियंम् ॥

२१८० ओ३म् इन्द्रेंण सं हि दृक्षंसे संजग्मानो अबिंभ्युषा। मन्दू संमानवंर्चसा ॥

२१८१ ओ३म् मरुंतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विंमहसः। स सुंगोपातंमो जनंः ॥

२१८२ ओ३म् यूयं नंः प्रवतो नपान्मरुंतः सूर्यंत्वचसः। शर्मं यच्छाथ सप्रथंः ॥

81. मित्रः 2

२१८३ ओ३म् अभि यो महिना दिवं मित्रो बभूव सप्रथाः । अभि श्रवोभिः पृथिवीम् ॥

२१८४ ओ३म् मित्राय पञ्च येमिरे जना अभिष्टिशवसे । स देवान्विश्वान्बिभर्ति ॥

82. मित्रावरुणौ 45

२१८५ ओ३म् अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा । ममेदिह श्रुतं हवम् ॥

२१८६ ओ३म् अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा। ममेदिह श्रुतꣳ हवम्॥

२१८७ ओ३म् आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र बर्हणा । उपेमं चारुमध्वरम् ॥

२१८८ ओ३म् आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजाꣳसि सुक्रतू॥

२१८९ ओ३म् उप नः सुतमा गतं वरुण मित्र दाशुषः । अस्य सोमस्य पीतये ॥

२१९० ओ३म् उरुशंसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः । द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता ॥

२१९१ ओ३म् उरुशꣳसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः। द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता॥

२१९२ ओ३म् ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा । क्रतुं बृहन्तमाशाथे ॥

२१९३ ओ३म् ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती । ता मित्रावरुणा हुवे ॥

२१९४ ओ३म् ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा। क्रतुं बृहन्तमाशाथे॥

२१९५ ओ३म् ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती। ता मित्रावरुणा हुवे॥

२१९६ ओ३म् ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते। अद्रुहा देवौ वर्धेते॥

२१९७ ओ३म् कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया । दक्षं दधाते अपसम् ॥

२१९८ ओ३म् कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया। दक्षं दधाते अपसम्॥

२१९९ ओ३म् गावऽउपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया ॥

२२०० ओ३म् गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम् । पातं सोममृतावृधा ॥

२२०१ ओ३म् गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्। पात२ सोममृतावृधा॥

२२०२ ओ३म् ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धायसे । वयं ते रुद्रा स्याम ॥

२२०३ ओ३म् ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती । सचेते अनवह्वरम् ॥

२२०४ ओ३म् ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य। महि वा क्षत्रं देवेषु॥

२२०५ ओ३म् ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य। महि वां क्षत्रं देवेषु॥

२२०६ ओ३म् ता वा२ सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धाम च। वयं वां मित्रा स्याम॥

२२०७ ओ३म् ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती। सचेते अनवह्वरम्॥

२२०८ ओ३म् पातं नो रुद्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा । तुर्याम दस्यून्तनूभिः ॥

२२०९ ओ३म् पातं नो मित्रा पायुभिरुत त्रायेथा२ सुत्रात्रा साह्याम दस्यूं तनूभिः॥

२२१० ओ३म् पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण । मित्र वंसि वां सुमतिम् ॥

२२११ ओ३म् पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण। मित्र व२ सि वा२ सुमतिम्॥

२२१२ ओ३म् प्र यो वां मित्रावरुणाजिरो दूतो अद्रवत् । अयःशीर्षा मदेरघुः ॥

२२१३ ओ३म् प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा । महिक्षत्रावृतं बृहत् ॥

२२१४ ओ३म् प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा। महिक्षत्रावृतं बृहत्॥

२२१५ ओ३म् मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुंजेमा तनूभिः । मा शेषसा मा तनसा ॥

२२१६ ओ३म् मित्रꣳ हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्। धियं घृताचीꣳ साधन्ता ॥

२२१७ ओ३म् मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये । जज्ञाना पूतदक्षसा ॥

२२१८ ओ३म् मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । धियं घृताचीं साधन्ता ॥

२२१९ ओ३म् मित्रं वयꣳ हवामहे वरुणꣳ सोमपीतये। या जाता पूतदक्षसा॥

२२२० ओ३म् मित्रꣳ हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्। धियं घृताचीꣳ साधन्ता॥

२२२१ ओ३म् यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति । यथा विश्वे सजोषसः ॥

२२२२ ओ३म् युवं दक्षं धृतव्रत मित्रावरुण दूळभम् । ऋतुना यज्ञमाशाथे ॥

२२२३ ओ३म् राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे। सहस्रस्थूण आशाते॥

२२२४ ओ३म् वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः । करतां नः सुराधसः ॥

२२२५ ओ३म् विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्र राजथः । ईशाना पिप्यतं धियः ॥

२२२६ ओ३म् वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः। बृहन्तं गर्तमाशाते॥

२२२७ ओ३म् वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधसः॥

२२२८ ओ३म् सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च । देवा देवेषु प्रशस्ता ॥

२२२९ ओ३म् सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च। देवा देवेषु प्रशस्ता॥

83. रथवीतिर्दाल्भ्यः 3

२२३० ओ३म् उत मे वोचतादिति सुतसोमे रथवीतौ । न कामो अप वेति मे ॥

२२३१ ओ३म् एतं मे स्तोमम्मूर्म्ये दार्भ्याय परा वह । गिरो देवि रथीरिव ॥

२२३२ ओ३म् एष क्षेति रथवीतिर्मघवा गोमतीरनु । पर्वतेष्वपश्रितः ॥

84. रात्रिस्तवः 3

२२३३ ओ३म् उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः । रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ॥

२२३४ ओ३म् नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः । नि श्येनासश्चिदर्थिनः ॥

२२३५ ओ३म् सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि । वृक्षे न वसतिं वयः ॥

85. रुद्रः 3

२२३६ ओ३म् कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे । वोचेम शंतमं हृदे ॥

२२३७ ओ३म् गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम् । तच्छंयोः सुम्नमीमहे ॥

२२३८ ओ३म् यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे । यथा तोकाय रुद्रियम् ॥

86. रुद्रः, व्याघ्रः 1

२२३९ ओ३म् अक्ष्यौ च ते मुखं च ते व्याघ्र जम्भयामसि। आत्सर्वान्विंशतिं नखान् ॥

87. वरुणः 13

२२४० ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके॥

२२४१ ओ३म् उदुत्तमं मुमुग्धि नो वि पाशं मध्यमं चृत । अवाधमानि जीवसे ॥

२२४२ ओ३म् कदा क्षत्रश्रियं नरमा वरुणं करामहे । मृळीकायोरुचक्षसम् ॥

२२४३ ओ३म् तदित्समानमाशाते वेनन्ता न प्र युच्छतः । धृतव्रताय दाशुषे ॥

२२४४ ओ३म् दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि । एता जुषत मे गिरः ॥

२२४५ ओ३म् परा मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूतीरनु । इच्छन्तीरुरुचक्षसम् ॥

२२४६ ओ३म् परा हि मे विमन्यवः पतन्ति वस्यइष्टये । वयो न वसतीरुप ॥

२२४७ ओ३म् बिभ्रद्द्रापिं हिरण्ययं वरुणो वस्त निर्णिजम् । परि स्पशो नि षेदिरे ॥

२२४८ ओ३म् मा नो वधाय हत्नवे जिहीळानस्य रीरधः । मा हृणानस्य मन्यवे ॥

२२४९ ओ३म् यच्चिद्धि ते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम् । मिनीमसि द्यविद्यवि ॥

२२५० ओ३म् वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधसः ॥

२२५१ ओ३म् वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न संदितम् । गीर्भिर्वरुण सीमहि ॥

२२५२ ओ३म् स नो विश्वाहा सुक्रतुरादित्यः सुपथा करत् । प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥

88. वरुणमित्रार्यमणः 2

२२५३ ओ३म् मा वो घ्नन्तं मा शपन्तं प्रति वोचे देवयन्तम् । सुम्नैरिद्व आ विवासे ॥

२२५४ ओ३म् यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा । नू चित्स दभ्यते जनः ॥

89. वाजी देवता 1

२२५५ ओ३म् युञ्जाथाꣳ रासभं युवमस्मिन् यामे वृषण्वसू। अग्निं भरन्तमस्मयुम् ॥

90. वायुः 11

२२५६ ओ३म् उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा । स नो जीवातवे कृधि ॥

२२५७ ओ३म् उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा। स नो जीवातवे कृधि॥

२२५८ ओ३म् नियुत्वान्वायवा गह्ययꣳ शुक्रो अयामि ते। गन्तासि सुन्वतो गृहम्॥

२२५९ ओ३म् यददो वात ते गृहे३ऽमृतं निहितं गुहा। तस्य नो धेहि जीवसे॥

२२६० ओ३म् वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे । प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥

२२६१ ओ३म् वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम्। शिवो नियुद्भिः शिवाभिः ॥

२२६२ ओ३म् वायो तव प्रपृञ्चती धेना जिगाति दाशुषे । उरूची सोमपीतये ॥

२२६३ ओ३म् वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरा गहि । नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥

२२६४ ओ३म् वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरा गहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥

२२६५ ओ३म् वात आ वातु बेषजꣳ शम्भु मयोभु नो हृदे। प्र न आयूꣳषि तारिषत्॥

२२६६ ओ३म् स त्वं नो देव मनसा वायो मन्दानो अग्रियः । कृधि वाजाँ अपो धियः ॥

91. विद्वांसो देवता 1

२२६७ ओ३म् केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥

92. विद्वान् देवता 2

२२६८ ओ३म् अग्ने पत्नीरिहा वह देवानामुशतीरुप। त्वष्टारꣳ सोमपीतये ॥

२२६९ ओ३म् अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्नावो नेष्टः पिबऽऋतुना। त्वꣳहि रत्नधा ऽअसि ॥

93. विश्वे देवाः 37

२२७० ओ३म् अग्ने सुतस्य पीतये विश्वैरूमेभिरा गहि । देवेभिर्हव्यदातये ॥

२२७१ ओ३म् अधि पुत्रोपमश्रवो नपान्मित्रातिथेरिहि । पितुष्टे अस्मि वन्दिता ॥

२२७२ ओ३म् आ त्वा कण्वा अहूषत गृणन्ति विप्र ते धियः । देवेभिरग्न आ गहि ॥

२२७३ ओ३म् आकीं सूर्यस्य रोचनाद्विश्वान्देवाँ उषर्बुधः । विप्रो होतेह वक्षति ॥

२२७४ ओ३म् इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः । विश्वे मम श्रुता हवम् ॥

२२७५ ओ३म् इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम् । आदित्यान्मारुतं गणम् ॥

२२७६ ओ३म् ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः । हविष्मन्तो अरंकृतः ॥

२२७७ ओ३म् उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये। सुमृडीका भवन्तु नः॥

२२७८ ओ३म् ऐभिरग्ने दुवो गिरो विश्वेभिः सोमपीतये । देवेभिर्याहि यक्षि च ॥

२२७९ ओ३म् ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत । दाश्वांसो दाशुषः सुतम् ॥

२२८० ओ३म् कुरुश्रवणमावृणि राजानं त्रासदस्यवम् । मंहिष्ठं वाघतामृषिः ॥

२२८१ ओ३म् घृतपृष्ठा मनोयुजो ये त्वा वहन्ति वह्नयः । आ देवान्त्सोमपीतये ॥

२२८२ ओ३म् जयतामिव तन्यतुर्मरुतामेति धृष्णुया । यच्छुभं याथना नरः ॥

२२८३ ओ३म् तत्सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा । इन्द्रो नो राधसा गमत् ॥

२२८४ ओ३म् ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा । वृधासश्च प्रचेतसः ॥

२२८५ ओ३म् ते हि वस्वो वसवानास्ते अप्रमूरा महोभिः । व्रता रक्षन्ते विश्वाहा ॥

२२८६ ओ३म् देवानामिदवो महत्तदा वृणीमहे वयम् । वृष्णामस्मभ्यमूतये ॥

२२८७ ओ३म् न देवानामति व्रतं शतात्मा चन जीवति । तथा युजा वि वावृते ॥

२२८८ ओ३म् प्र वो भ्रियन्त इन्दवो मत्सरा मादयिष्णवः । द्रप्सा मध्वश्चमूषदः ॥

२२८९ ओ३म् मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवऽ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥

२२९० ओ३म् मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥

२२९१ ओ३म् मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः । मान्त स्थुर्नो अरातयः ॥

२२९२ ओ३म् यस्य प्रस्वादसो गिर उपमश्रवसः पितुः । क्षेत्रं न रण्वमूचुषे ॥

२२९३ ओ३म् यस्य मा हरितो रथे तिस्रो वहन्ति साधुया । स्तवै सहस्रदक्षिणे ॥

२२९४ ओ३म् यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः । अधा चिद्व उत ब्रुवे ॥

२२९५ ओ३म् ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासदन् । विदन्नह द्वितासनन् ॥

२२९६ ओ३म् येन देवा असुराणामोजांस्यवृणीध्वम्। तेना नः शर्म यच्छत ॥

२२९७ ओ३म् यो वो देवा घृतस्नुना हव्येन प्रतिभूषति । तं विश्व उप गच्छथ ॥

२२९८ ओ३म् वयमिद्वः सुदानवः क्षियन्तो यान्तो अध्वन्ना । देवा वृधाय हूमहे ॥

२२९९ ओ३म् वरुणो मित्रो अर्यमा स्मद्रातिषाचो अग्नयः । पत्नीवन्तो वषट्कृताः ॥

२३०० ओ३म् वामस्य हि प्रचेतस ईशानाशो रिशादसः । नेमादित्या अघस्य यत् ॥

२३०१ ओ३म् विश्वान्देवान्हवामहे मरुतः सोमपीतये । उग्रा हि पृश्निमातरः ॥

२३०२ ओ३म् विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत ॥

२३०३ ओ३म् विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत ॥

२३०४ ओ३म् विश्वे देवासो अप्तुरः सुतमा गन्त तूर्णयः । उस्रा इव स्वसराणि ॥

२३०५ ओ३म् विश्वे देवासो अस्रिध एहिमायासो अद्रुहः । मेधं जुषन्त वह्नयः ॥

२३०६ ओ३म् स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणस्त्वष्टमान्मित्रो अर्यमा । इमा हव्या जुषन्त नः ॥

94. विश्वे देवा ऋत्विजो वा 2

२३०७ ओ३म् इष्कृताहावमवतं सुवरत्रं सुषेचनम् । उद्रिणं सिञ्चे अक्षितम् ॥

२३०८ ओ३म् सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक् । धीरा देवेषु सुम्नया ॥

95. विष्णुः 15

२३०९ ओ३म् अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे । पृथिव्याः सप्त धामभिः ॥

२३१० ओ३म् इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदा। समूढमस्य पांसुरे ॥

२३११ ओ३म् इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पा२ सुले॥

२३१२ ओ३म् इदं विष्णुर्व चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पा२ सुले॥

२३१३ ओ३म् तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥

२३१४ ओ३म् तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाꣳसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥

२३१५ ओ३म् तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ॥

२३१६ ओ३म् तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीऽव चक्षुराततम् ॥

२३१७ ओ३म् त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। इतो धर्माणि धारयन् ॥

२३१८ ओ३म् त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥

२३१९ ओ३म् तद्विप्रासो विपन्युवो जागृवा२ सः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्॥

२३२० ओ३म् तद्विष्णोः परमं पद२ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्॥

२३२१ ओ३म् विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥

२३२२ ओ३म् विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥

96. वैश्वानरः 3

२३२३ ओ३म् वैश्वानरो न आगमदिमं यज्ञं सजूरुप। अग्निरुक्थेष्वंहसु ॥

२३२४ ओ३म् वैश्वानरो न ऊतय आ प्र यातु परावतः। अग्निर्नः सुष्टुतीरुप ॥

२३२५ ओ३म् वैश्वानरोऽङ्गिरसां स्तोममुक्थं च चाक्लृपत्। एषु द्युम्नं स्वऽर्यमत् ॥

97. शशीयशी 3

२३२६ ओ३म् उत घा नेमो अस्तुतः पुमाँ इति ब्रुवे पणिः । स वैरदेय इत्समः ॥

२३२७ ओ३म् उत त्वा स्त्री शशीयसी पुंसो भवति वस्यसी । अदेवत्रादराधसः ॥

२३२८ ओ३म् वि या जानाति जसुरिं वि तृष्यन्तं वि कामिनम् । देवत्रा कृणुते मनः ॥

98. संस्फानम् 2

२३२९ ओ३म् अयं नो नभसस्पतिः संस्फानो अभि रक्षतु। असमातिं गृहेषु नः ॥

२३३० ओ३म् त्वं नो नभसस्पत ऊर्जं गृहेषु धारय। आ पुष्टमेत्वा वसु ॥

99. सदसस्पतिः 1

२३३१ ओ३म् यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन । स धीनां योगमिन्वति ॥

100. सदसस्पतिर्नराशंसो वा 1

२३३२ ओ३म् नराशंसं सुधृष्टममपश्यं सप्रथस्तमम् । दिवो न सद्ममखसम् ॥

101. सरस्वती 8

२३३३ ओ३म् उत स्या नः सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनिः । वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम् ॥

२३३४ ओ३म् उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा। सरस्वती स्तोम्या भूत्॥

२३३५ ओ३म् पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥

२३३६ ओ३म् पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥

२३३७ ओ३म् महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना । धियो विश्वा वि राजति ॥

२३३८ ओ३म् महोऽअर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना। धियो विश्वा वि राजति ॥

२३३९ ओ३म् यस्या अनन्तो अह्रुतस्त्वेषश्चरिष्णुरर्णवः । अमश्चरति रोरुवत् ॥

२३४० ओ३म् शिवा नः शंतमा भव सुमृडीका सरस्वति। मा ते युयोम संदृशः ॥

102. सरस्वान् 1

२३४१ ओ३म् जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः। सरस्वन्तं हवामहे॥

103. सविता 17

२३४२ ओ३म् अनागसो अदितये देवस्य सवितुः सवे । विश्वा वामानि धीमहि ॥

२३४३ ओ३म् आ विश्वदेवं सत्पतिं सूक्तैरद्या वृणीमहे । सत्यसवं सवितारम् ॥

२३४४ ओ३म् उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। अस्मान्पुनीहि चक्षसे ॥

२३४५ ओ३म् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

२३४६ ओ३म् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

२३४७ ओ३म् देवं नरः सवितारं विप्रा यज्ञैः सुवृक्तिभिः । नमस्यन्ति धियेषिताः ॥

२३४८ ओ३म् देवस्य चेततो महीं प्र सवितुर्हवामहे। सुमतिऽ सत्यराधसम् ॥

२३४९ ओ३म् विभक्तारऽ हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः। सवितारं नृचक्षसम् ॥

२३५० ओ३म् विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः । सवितारं नृचक्षसम् ॥

२३५१ ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥

२३५२ ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्नऽआ सुव ॥

२३५३ ओ३म् स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः । तं भागं चित्रमीमहे ॥

२३५४ ओ३म् सखाय आ नि षीदत सविता स्तोम्यो नु नः । दाता राधांसि शुम्भति ॥

२३५५ ओ३म् सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्यां लोकमिच्छतु। तस्मै युज्यन्तामुस्रियाः ॥

२३५६ ओ३म् सुष्टुतिऽ सुमतीवृधो रातिऽ सवितुरीमहे। प्र देवाय मतीविदे ॥

२३५७ ओ३म् हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुप ह्वये । स चेत्ता देवता पदम् ॥

२३५८ ओ३म् हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुपह्वये। स चेत्ता देवता पदम् ॥

104. सविता भगो वा 3

२३५९ ओ३म् अभि त्वा देव सवितरीशानं वार्याणाम् । सदावन्भागमीमहे ॥

२३६० ओ३म् भगंभक्तस्य ते वयमुदंशेम तवावसा । मूर्धानं राय आरभे ॥

२३६१ ओ३म् यश्चिद्धि तं इत्था भगः शशमानः पुरा निदः । अद्वेषो हस्तयोर्दधे ॥

105. सार्पराज्ञी सूर्यो वा 1

२३६२ ओ३म् त्रिंशद्धाम वि राजति वाक्पतंगाय धीयते । प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥

106. सावर्णेर्दानस्तुतिः 1

२३६३ ओ३म् उत दासा परिविषे स्मद्दिष्टी गोपरीणसा । यदुस्तुर्वश्च मामहे ॥

107. सूर्यः 22

२३६४ ओ३म् अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु। भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥

२३६५ ओ३म् अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु । भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥

२३६६ ओ३म् अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः। सूराय विश्वचक्षसे ॥

२३६७ ओ३म् अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यऽः। ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥

२३६८ ओ३म् अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जना२ अनु। भ्रा जन्तो अग्नयो यथा॥

२३६९ ओ३म् अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः। ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः॥

२३७० ओ३म् अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः। सूराय विश्वचक्षसे॥

२३७१ ओ३म् अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम्॥

२३७२ ओ३म् आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

२३७३ ओ३म् उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

२३७४ ओ३म् उद्द्यामेषि रजः पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः। पश्यञ्जन्मानि सूर्य॥

२३७५ ओ३म् चक्षुर्नो देवः सविता चक्षुर्न उत पर्वतः । चक्षुर्धाता दधातु नः ॥

२३७६ ओ३म् तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमा भासि रोचन ॥

२३७७ ओ३म् त्रिꣳ शद्धाम वि राजति वाक्पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः॥

२३७८ ओ३म् तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि रोचनम्॥

२३७९ ओ३म् प्रत्यङ्देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषीः। प्रत्यङ्विश्वं स्वऽर्दृशे ॥

२३८० ओ३म् प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान्। स्वर्दृशे॥

२३८१ ओ३म् येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु। त्वं वरुण पश्यसि ॥

२३८२ ओ३म् येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाअनु। त्वं वरुण पश्यसि॥

२३८३ ओ३म् वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहर्मिमानो अक्तुभिः। पश्यं जन्मानि सूर्य ॥

२३८४ ओ३म् सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य। शोचिष्केशं विचक्षणम् ॥

२३८५ ओ३म् सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य। शोचिष्केशं विचक्षण॥

108. सोमः 16

२३८६ ओ३म् अर्थिनो यन्ति चेदर्थं गच्छानिद्ददुषो रातिम् । ववृज्युस्तृष्यत: कामम् ॥

२३८७ ओ३म् अस्माकमायुर्वर्धयन्नभिमाती: सहमानः । सोम: सधस्थमासदत् ॥

२३८८ ओ३म् अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम् । महि श्रवस्तुविनृम्णम् ॥

२३८९ ओ३म् इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि । सोम त्वं नो वृधे भव ॥

२३९० ओ३म् गयस्फानो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः । सुमित्रः सोम नो भव ॥

२३९१ ओ३म् त्वं चित्ती तव दक्षैर्दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन् । यावीरघस्य चिद्द्वेषः ॥

२३९२ ओ३म् द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥

२३९३ ओ३म् पवमानः सोऽअद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा ॥

२३९४ ओ३म् मा नः सोम सं वीविजो मा वि बीभिषथा राजन् । मा नो हार्दि त्विषा वधीः ॥

२३९५ ओ३म् मा नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरन्त । आ न इन्दो वाजे भज ॥

२३९६ ओ३म् येन सोम साहन्त्यासुरान्रन्धयासि नः। तेना नो अधि वोचत ॥

२३९७ ओ३म् वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि ॥

२३९८ ओ३म् सुशेवो नो मृळयाकुरदृप्तक्रतुरवातः । भवा नः सोम शं हृदे ॥

२३९९ ओ३म् सोमो अस्मभ्यं द्विपदे चतुष्पदे च पशवे । अनमीवा इषस्करत् ॥

२४०० ओ३म् सोमो जिगाति गातुविद्देवानामेति निष्कृतम् । ऋतस्य योनिमासदम् ॥

२४०१ ओ३म् स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः ॥